

# ॥ शिक्षापत्री ॥







वामे यस्य स्थिता राधा श्रीश्च यस्यास्ति वक्षसि ।  
वृन्दावनविहारं तं श्रीकृष्णं हृदि चिन्तये ॥१॥

हुं जे ते मारा हृदयने विषे श्रीकृष्ण भगवाननुं ध्यान करुं छुं, ते श्रीकृष्ण केवा छे, तो जेना डाबा पड़खाने विषे राधिकाजी रह्यां छे अने जेना वक्षः स्थणने विषे लक्ष्मीजी रह्यां छे अने वृन्दावनने विषे विहारना करनारा छे. ॥१॥

“जिनके वामभाग में राधिकाजी विराजमान और जिनके वक्षःस्थल में लक्ष्मीजी विद्यमान तथा जो वृन्दावन विहारी है, ऐसे भगवान श्रीकृष्ण का हम अपने हृदय में ध्यान करते हैं ॥१॥

I meditate, in My heart, upon Lord Shree Krishna, on whose left stands Radhikaji, in whose heart resides Laxmiji and who plays (with His Bhaktas) in Vrindavan. ||1||

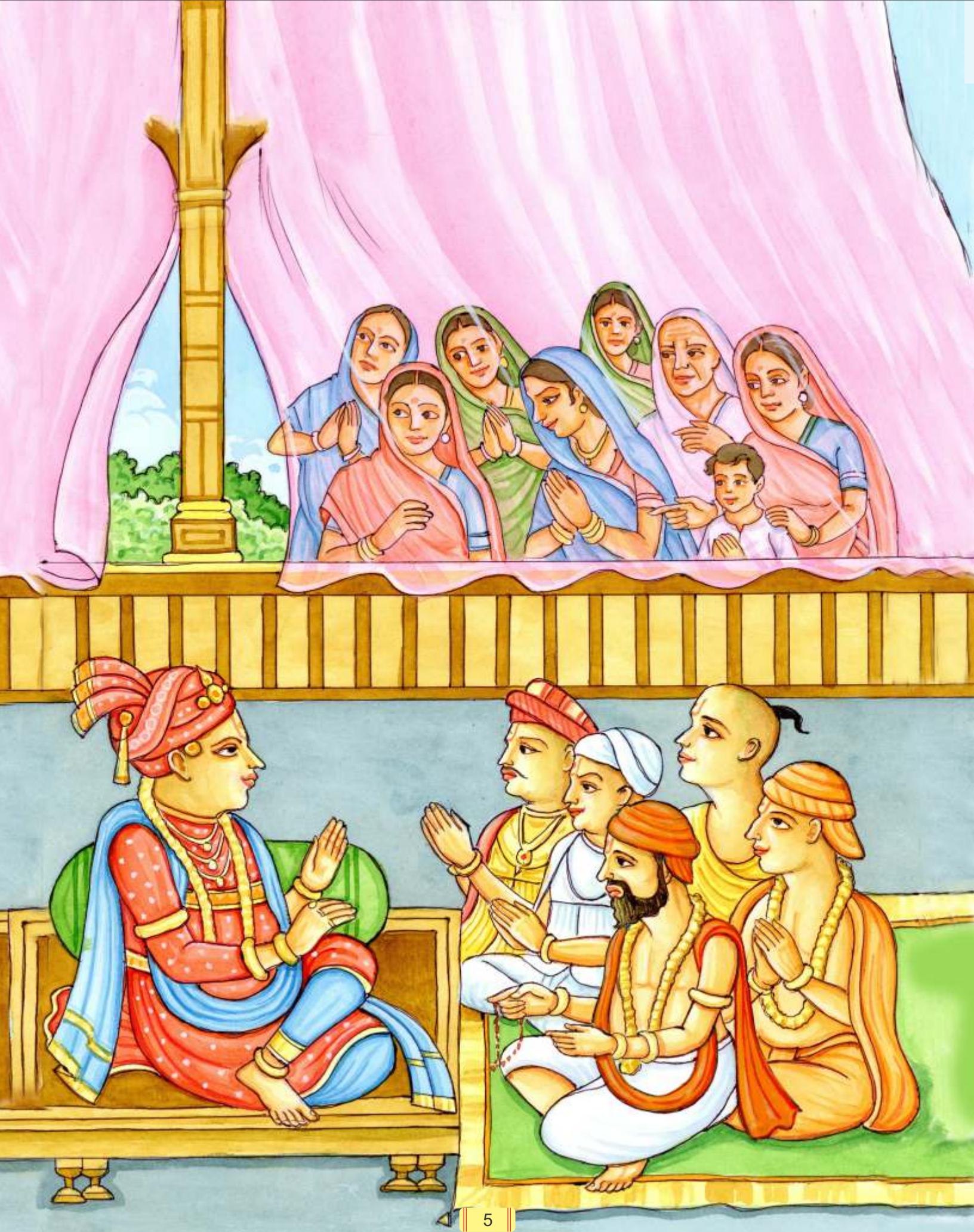


लिखामि सहजानन्दस्वामी सर्वान्निजाश्रितान् ।  
नानादेश स्थितान् शिक्षापत्रीं वृत्तालयस्थितः ॥२॥

अने वृत्तालय गामने विषे रह्या एवा सहजानन्द स्वामी जे अमे ते अमे, जे ते नाना प्रकारना जे सर्वे देश, तेमने विषे रह्या एवा जे आमारा आश्रित सर्वे सत्संगी ते प्रत्ये शिक्षापत्रीने लाखीओ छीओ. ॥२॥

वड़ताल गाँव में निवास करने वाले हम ( सहजानन्द स्वामी ) विभिन्न देशों में निवास करनेवाले हमारे आश्रित सभी सत्संगोजनोंके प्रति शिक्षापत्री लिखते हैं ॥२॥

I Sahajanand Swami, write this Shikshapatri, Gospel of Life Divine, from Vadtal, to all My disciples who reside in different parts of the world. ||2||



भ्रात्रो रामप्रतापेच्छरामयोर्धर्मजन्मनोः ।  
 यावयोध्याप्रसादाख्यरघुवीराभिधौ सुतौ ॥३॥  
 मुकुन्दानन्दमुख्याश्च नैषिका ब्रह्मचारिणः ।  
 गृहस्थाश्च मयारामभद्राद्या ये मदाश्रयाः ॥४॥  
 सधवा विधवा योषा याश्च मच्छ्यतां गताः ।  
 मुक्तानन्दादयो ये स्युः साधवश्चाखिला अपि ॥५॥  
 स्वधर्मरक्षिका मे तैः सर्वैर्वाच्यः सदाशिषः ।  
 श्रीमन्नारायणस्मृत्या सहिताः शास्त्रसम्मताः ॥६॥

श्री धर्मदेव थकी छे जन्म जेमनो ऐवा जे अमारा भाई रामप्रतापले तथा ईच्छरामज्ञ, तेमना पुत्र जे अयोध्याप्रसाद नामे अने रघुवीर नामे (जेने अमे अमारा दत्तकपुत्र करीने सर्वे सत्संगीना आचार्यपणाने विषे स्थापन कर्याए); ॥३॥

तथा अमारा आश्रित ऐवा जे मुकुन्दानन्द आदिक नैषिक ब्रह्मचारी तथा अमारा आश्रित जे मयाराम भट्ठ आदिक गृहस्थ सत्संगी; ॥४॥

तथा अमारे आश्रित जे सुवासिनी अने विधवा ऐवी सर्वे बाईओ तथा मुक्तानन्द आदिक जे सर्वे साधु; ॥५॥

ऐ सर्वे-तेमणे, पोताना धर्मनी रक्षाना करनारा अने शास्त्रने विषे प्रमाणउप अने श्रीमन्नारायणानी स्मृतिए सहित ऐवा जे अमारा इडा आशीर्वाद ते वांचवा. ॥६॥

( हमारे ) पिता श्री धर्मदेव से हैं जन्म जिनका, ऐसे जो हमारे भाई रामप्रतापजी तथा ईच्छरामजी, उनके पुत्र अयोध्याप्रसादजी तथा रघुवीरजी ( जिन्हें हमने अपने दत्तक पुत्र मानकर सभी सत्संगीजनों के आचार्य पद पर स्थापित किये हैं । ) ॥३॥

तथा हमारे आश्रित जो मुकुन्दानन्दजी आदि नैषिक ब्रह्मचारी एवं हमारे आश्रित मयाराम भट्ठ आदि जो गृहस्थ सत्संगी ॥४॥

तथा हमारे आश्रित जो सधवा तथा विधवा स्त्रीयाँ तथा मुक्तानन्दजी आदि सर्व साधुजन ॥५॥

वे सभी, अपने धर्मकी रक्षा करनेवाले शास्त्रसम्मत एवं श्रीमन्नारायणकी स्मृति सहित हमारे शुभ आशीर्वादों को वाँचे ॥६॥

Rampratapji and Ichharamji, both born of Shree Dharmadev, are my brothers. Rampratapji's son, Ayodhyaprasad, and Ichharamji's son, Raghuvir, both of whom I have adopted as My sons and established them as the Acharyas (Heads) of My disciples. ||3||

The Naisthik Brahmacharis, (the Brahmin celibates) headed by Mukundanand, and the devoted householders such as Mayaram Bhatt and others. ||4||

And My devotees such as married, unmarried women and widows, and all Sadhus, Muktananda and others, all who have become My disciples. ||5||

May they all read and accept My ennobling blessings (which are there to defend our religion) prescribed by the happy remembrance of Shreeman Narayan. ||6||

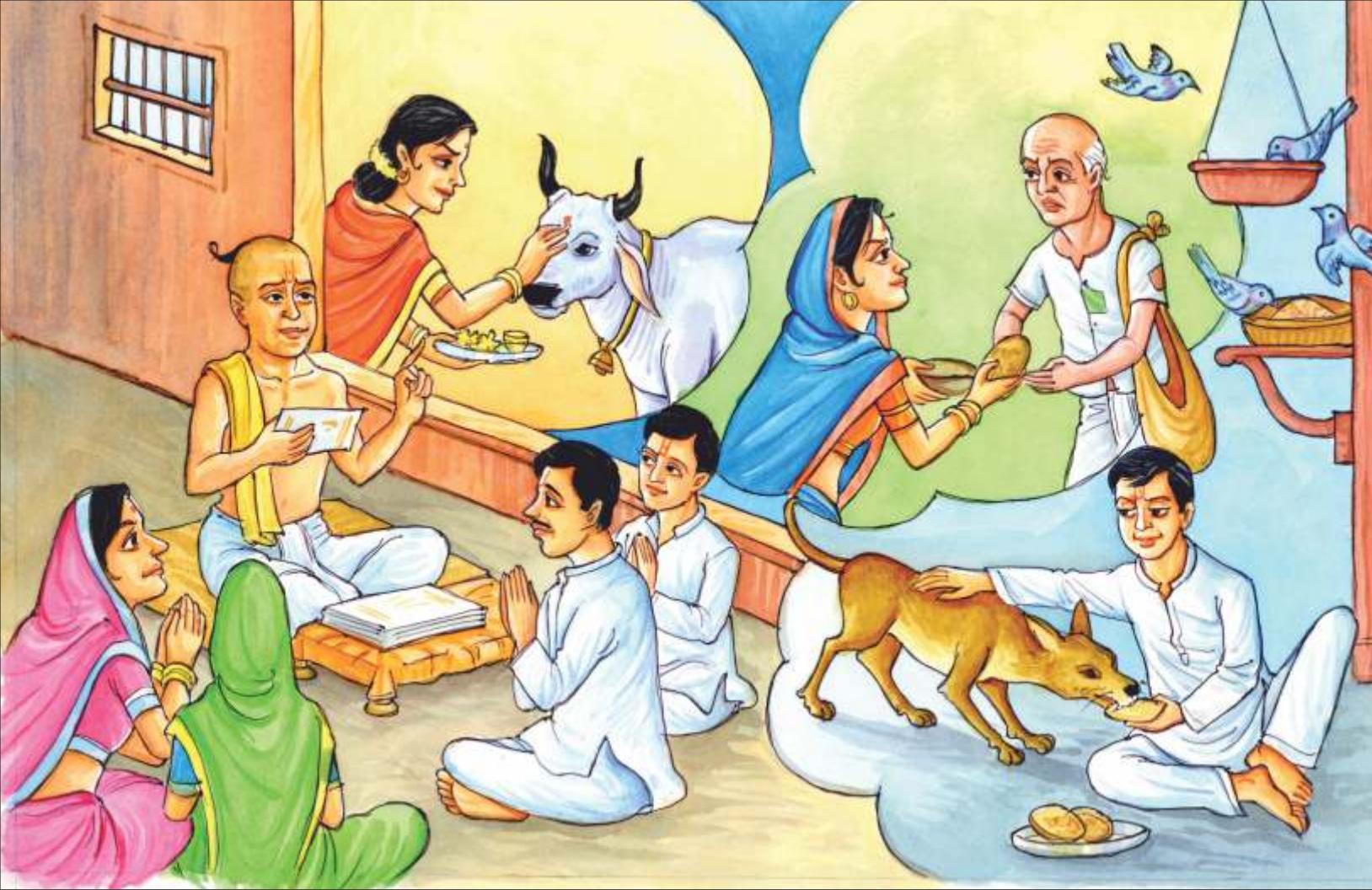


एकाग्रेणौव मनसा पत्रीलेखः सहेतुकः ।  
अवधार्योऽयमखिलैः सर्वजीवहितावहः ॥७॥

अने आ शिक्षापत्री लभ्यानुं जे कारण छे, ते सर्व-तेमणे एकाग्र भने करीने धारवुं अने आ शित्रापत्री, जे अमे लभी छे, ते सर्वना ज्ञवने हितनी करनारी छे. ॥७॥

इस शिक्षापत्री लिखने का जो उद्देश्य हैं, उसको सर्व एकाग्र मन से धारण करें । यह शिक्षापत्री जो हमने लिखी है, वह सर्व जीवों का हित करनेवाली है ॥७॥

My disciples shall all concentrate on the benevolent aim of writing this Shikshapatri, and believe that it is written for the spiritual welfare of every soul.  
॥७॥



ये पालयन्ति मनुजाः सच्चास्त्रप्रतिपादितान् ।  
सदाचारान् सदा तेऽत्र परत्र च महासुखाः ॥८॥

अने श्रीमद् भागवत पुराण आदिक जे सत्‌शास्त्र- तेमણો, જીવના કલ્યાણને અર્થે પ્રતિપાદન કર્યા એવા જે અહિંસા આદિક સદાચાર તેમને, જે મનુષ્ય પાળે છે, તે મનુષ્ય, આ લોકને વિષે ને પરલોકને વિષે મહાસુખિયા થાય છે. ॥८॥

श्रीमद् भागवत पुराण आदि सत્શास्त્રોं દ્વારા જીવોं કે કલ્યાણ કે લિએ પ્રતિપાદિત અહિંસા આદિ સદાચારોં કા જો લોગ પાલન કરતે હું, વે ઇસ લોક મેં તથા પરલોક મેં ઉત્તમ સુખકો પ્રાપ્ત કરતે હું ॥८॥

Those who observe the Rules of Ethics (e.g. non-violence) as prescribed by the holy scriptures, such as Shreemad Bhagwat Puran, etc. shall derive happiness in this world as well as in the next. ||8||



तानुलङ्घयात्र वर्तन्ते ये तु स्वैरं कुबुद्धयः ।  
त इहामुत्र च महळभन्ते कष्टमेव हि ॥९॥

अने सदाचारनुं उल्लंधन करीने जे मनुष्य, पोताना मनमां आवे तेम वर्ते छे, ते तो कुबुद्धिवाणी छे  
अने ते आ लोक अने परलोकने विषेनिश्च मोटा कष्टने ज पामे छे ॥८॥

और उनसदाचारों का उल्लंधन करके जो मनुष्य मनमाना आचरण करते हैं, वे कुबुद्धिवाले हैं और  
इस लोक में तथा परलोक में निश्चय ही बड़े कष्ट को प्राप्त करते हैं ॥९॥

Those who violate the Rules of Ethics and behave willfully are evil-minded and shall suffer great distress in this world as well as in the next. ||9||



अतौ भवद्भिर्मच्छ्यैः सावधानतयाऽखिलैः ।  
प्रीत्यैतामनुसृत्यैव वर्तितव्यं निरन्तरम् ॥१०॥

ते माटे अमारा शिष्य अेवा जे तभे सर्वे, तेमणे तो प्रीतिअे करीने आ शिक्षापत्रीने अनुसरीने ज  
निरंतर सावधानपणे वर्तवुं, पण आ शिक्षापत्रीनुं उल्लंघन करीने वर्तवुं नहि. ॥१०॥

इसलिये हमारे शिष्य, ऐसे आप लोग, प्रीतिपूर्वक इस शिक्षापत्री के अनुसार ही निरंतर सावधान  
होकर आचरण करें परंतु इस शिक्षापत्री का उल्लंघन कदापि न करे ॥१०॥

Hence, all My disciples shall love and follow the commandments of this  
Shikshapatri vigilantly and shall never violate them. ॥10॥

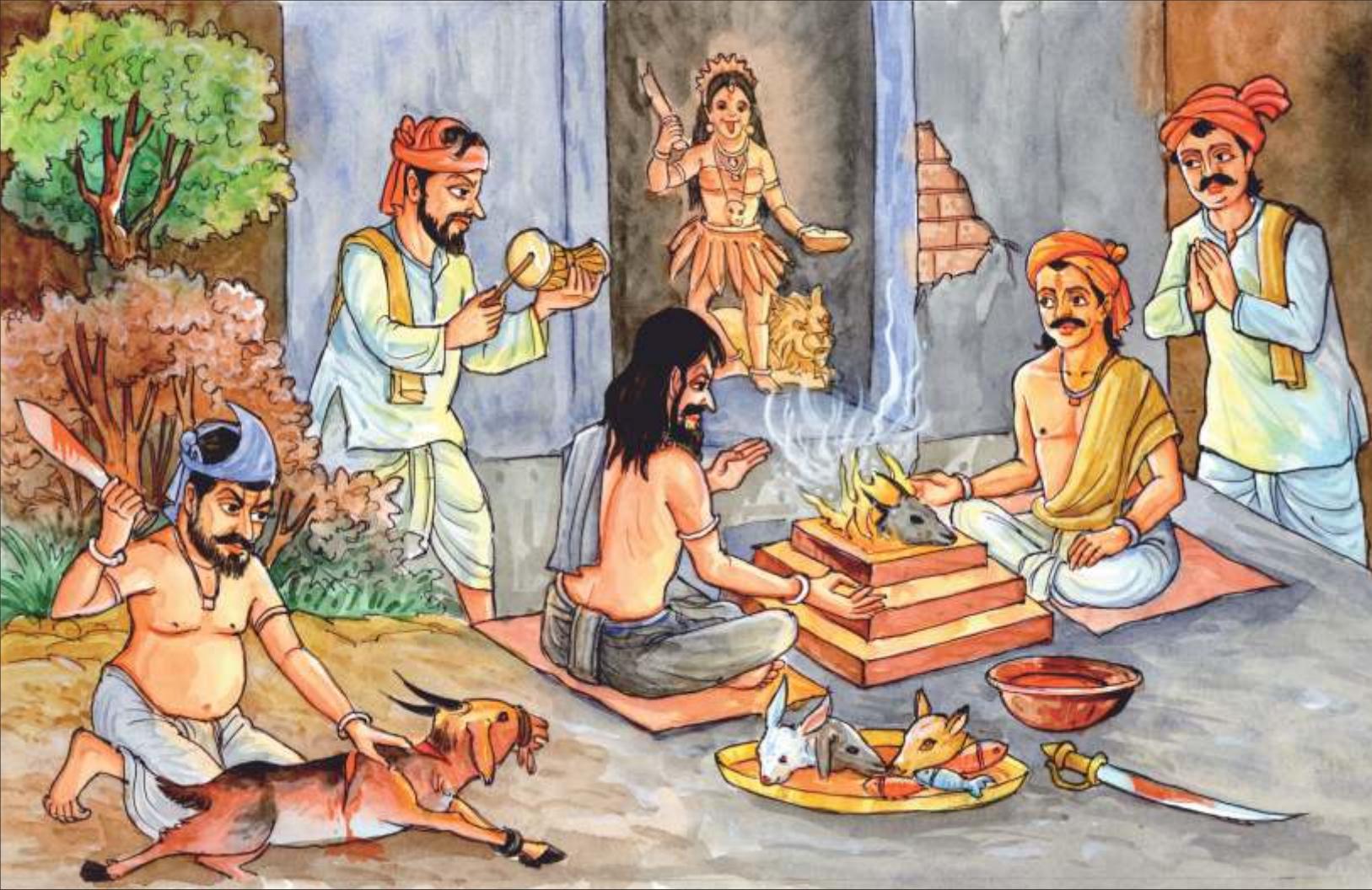


कस्यापि प्राणिनो हिंसा नैव कार्यात्र मामकैः ।  
सूक्ष्मयूकामत्कुणादेरपि बुद्ध्या कदाचन ॥११॥

હવे તે વત્યાની રીતે કહીએ છીએ : જે અમારા જે સત્સંગી-તેમણે, કોઈ જીવ-પ્રાણીમાત્રની પણ હિંસા ન કરવી; અને જીણાને તો જીણા એવા જે જૂ, માંકડ, ચાંચડ આદિક જીવ-તેમની પણ હિંસા ક્યારેયન કરવી. ॥૧૧॥

अब हम उस आचरण की रीति बतलाते हैं-कि जो हमारे सत्संगीजन हैं वे कदापि किसी भी जीव-प्राणी मात्रकी हिंसा न करें और जान बूझकर जूँ, खटमल, चांचड आदि सूक्ष्म जीवोंकी भी हिंसा कभी न करें ॥११॥

My disciples shall never intentionally kill any living creature, not even small insects such as lice or bugs. (11)



देवतापितृयागार्थमप्यजादेश्च हिंसनम् ।  
न कर्तव्यमहिंसैव धर्मः प्रोक्तोऽस्ति यन्महान् ॥१२॥

अने देवता अने पितृ-तेमना यज्ञने अर्थे पशु बकरां, मृगलां, ससला, माछला आदिक कोई  
ज्ञवनी हिंसा न करवी; केम जे अहिंसा छे ते ज मोटो धर्म छे. ऐम सर्व शास्त्रमां कह्युं छे. ॥१२॥

देवयाग तथा पितृयाग के लिए भी बकरी, हिरन्, खरगोश, मच्छली आदि कीसी भी जीव की हिंसा  
न करें, क्योंकि सभी शास्त्रों में अहिंसा कोही परम धर्म कहा गया है ॥१२॥

They shall never kill goats and/or other living beings in sacrifice performed for the Yagna (propitiation) of deities and Pitris (ancestors), for non-violence is declared by all the Shastras (scriptures), as the highest Dharma of all the Dharmas. (12)



स्त्रिया धनस्य वा प्राप्तै साम्राज्यस्य च वा क्वचित् ।  
मनुष्यस्य तु कस्यापि हिंसा कार्या न सर्वथा ॥१३॥

अने स्त्री, धन अने राज्य तेनी प्राप्तिने अर्थे पशु कोई मनुष्यनी हिंसा तो कोई प्रकारे  
क्यारेय पशु न ज करवी ॥१३॥

स्त्री, धन तथा राज्यकी प्राप्ति के लिए भी किसी मनुष्य की हिंसा तो किसी भी प्रकार से  
कदापि न करें ॥१३॥

One shall never commit homicide, even in order to acquire woman,  
wealth, political power or sovereignty. (13)



आत्मघातस्तु तीर्थेऽपि न कर्तव्यश्च न क्रुधा ।  
अयोग्याचणात्क्वापि न विषोद्धवन्धनादिना ॥१४॥

अने आत्मघात तो तीर्थने विषे पश न करवो, ने कोई करीने न करवो; अने क्यारेक कोई अयोग्य आचरण थई जाय ते थकी भूंझाई ने पश आत्मघात न करवो, अने ऊर खाई ने तथा गणे टूंपो खाई ने तथा फूवे पड़ीने तथा पर्वत उपरथी पड़ीने ईत्यादिक कोई रीते आत्मघात न करवो. ॥१४॥

तीर्थस्थानमें भी आत्महत्या न करें, तथा क्रोधावेशमें भी आत्महत्या न करें, यदि कोई अनुचित आचरण हो जाय तो उससे खिन्न होकर भी आत्मघात न करें, तथा जहर खाकर, गलेमें फंदा डालकर, कुएमें गिरकर या पर्वत पर से कूद कर, इत्यादि किसी भी प्रकार से आत्महत्या न करें ॥१४॥

One shall never commit suicide, even in a place of pilgrimage, or through anger or on account of some untoward action, by taking poison or by strangulation or by jumping into a well or from a hill-top or by any other means. (14)



न भक्ष्यं सर्वथा मांसं यज्ञशिष्टमपि क्वचित् ।  
न पेयं च सुरामद्यमपि देवनिवेदितम् ॥१५॥

अने जे मांस छे, ते तो यज्ञनुं शेष होय तो पशा आपत्काणमां पशा क्यारेय न खावुं; अने त्रण  
प्रकारनी सुरा अने अगियार प्रकारनुं मध, ते देवतानुं नैवेध्य होय, तो पशा न पीवुं ॥१५॥

माँस यज्ञ का शेष हो तो भी, आपत्काल में भी कभी न खायें और तीन प्रकारकी शराब तथा  
ग्याहरह प्रकारके मद्य देवताका नैवेध्य होने पर भी न पीयें ॥१५॥

One shall never eat meat even in a moment of extreme necessity, be it remains of a sacrifice, nor drink liquor, wine or intoxicating beverages even though it may be an offering to a deity. (15)



अकार्याचरणे क्वापि जाते स्वस्य परस्य वा ।  
अङ्गच्छेदो न कर्तव्यः शस्त्रादैश्च क्रुधापि वा ॥१६॥

अने क्यारेक पोतावडे कांडीक अयोग्य आचरण थई गयुं होय अथवा कोई भीजा वडे अयोग्य आचरण थई गयुं होय, तो शस्त्रादिके करीने पोताना अंगनुं तथा भीजाना अंगनुं छेदन न करवुं; अथवा कोधे करीने पाण पोताना अंगनुं तथा भीजाना अंगनुं छेदन न करवुं ॥१६॥

अपने से कुछ अनुचित आचरण हों जाने पर अथवा किसी अन्य से अनुचित आचरण हो जाने पर क्रोधावेश में शस्त्रादि से अपने अंग का तथा दूसरे के अंगों का छेदन न करें ॥१६॥

Even in a state of excitement, one shall never mutilate any part of one's body or that of others' with a weapon or by any other means, in order to punish oneself or others for any unworthy deed either by oneself or by others. (16)



स्तेनकर्म न कर्तव्यं धर्मार्थमपि केनचित् ।  
सस्वामिकाष्टपुष्पादि न ग्राह्यं तदनाज्ञया ॥१७॥

अने धर्म करवाने अर्थे पश्च अमारा सत्संगी कोई चोरनुं कर्म न करवुं, अने धणियातुं जे  
काष्ट, पुष्प आदिक वस्तु, ते तेना धणीनी आज्ञा विना न लेवुं ॥१७॥

हमारे सत्संगी धार्मिक कार्य के लिए भी कभी चोर का कर्म न करें, तथा दूसरोंकी मालिकी के  
काष्ट, पुष्प आदि चीजे भी उनकी ( मालिक की ) आज्ञा के बिना न लें ॥१७॥

One shall not commit theft, even for the sake of performing an act of Dharma. No article, even firewood, flowers, etc., owned by others shall ever be taken without their permission. (17)

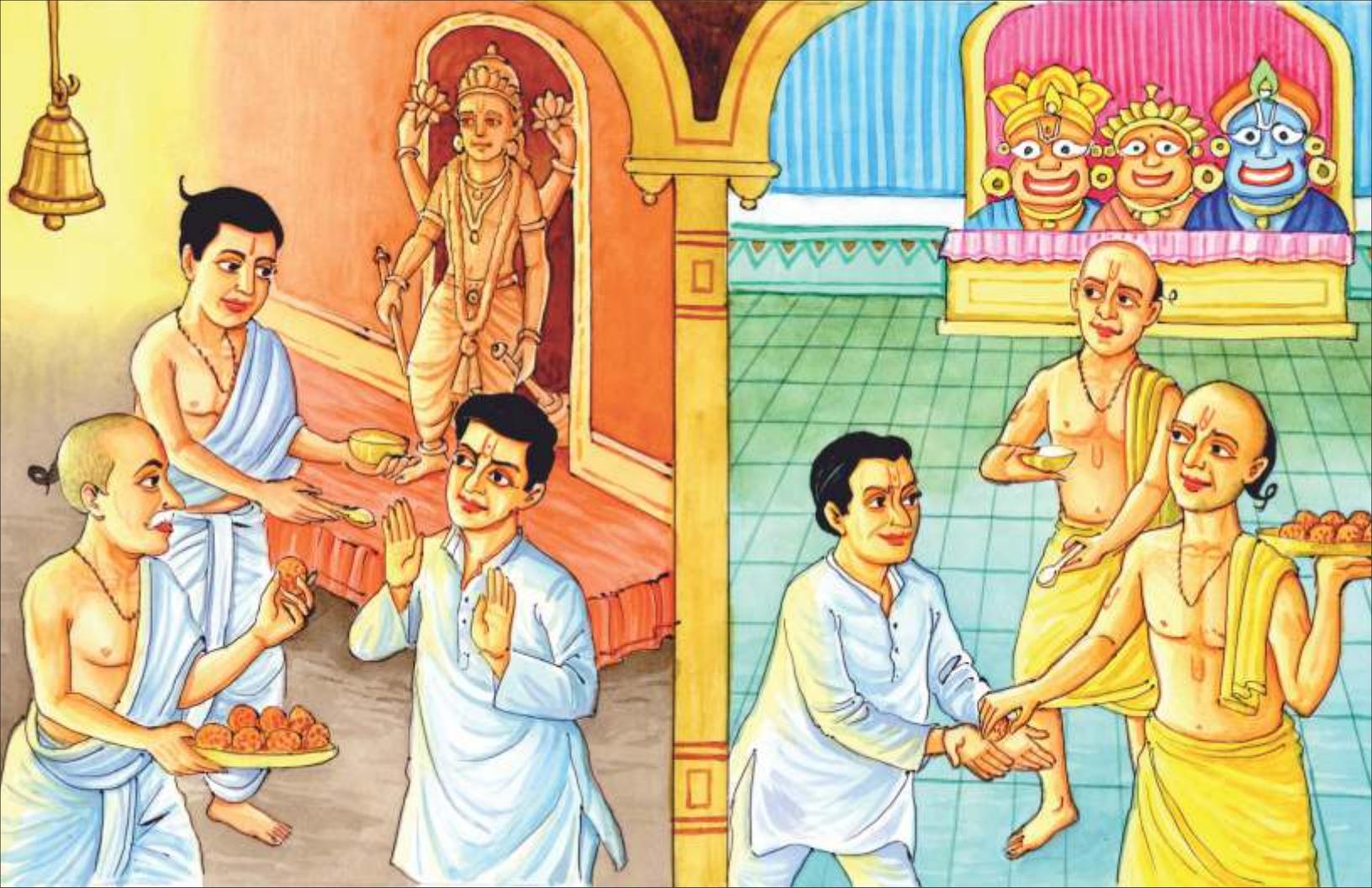


व्यभिचारो न कर्तव्यः पुम्भः स्त्रीभिश्च मां श्रितैः ।  
द्यूतादि व्यसनं त्याज्यं नाद्यं भज्ञादिमादकम् ॥१८॥

अने अमारा आश्रित जे पुरुष तथा स्त्रीओ-तेमाणे व्यभिचार न करवो, अने जूगटुं आदिक जे व्यसन तेनो त्याग करवो, अने भांग, मङ्गर, माज्म, गांजो आदिक जे केँद्र करनारी वस्तु ते खावी नहि अने पीवी पश्च नहि. ॥१८॥

हमारे आश्रित पुरुष तथा स्त्रीयाँ व्यभिचार न करें, जुआ आदि व्यसनों का त्याग करें, भांग, चरस तथा अफीण आदि नशीली चीजों का पान वा भक्षण भी न करें ॥१८॥

My male and female disciples shall never commit adultery nor indulge in gambling and similar vices. They shall abstain from inhaling and consuming intoxicating substances such as bhang, tobacco, snuff and the likes. (18)



अग्राह्यानेन पक्वं यदन्नं तदुदकं च न ।  
जगन्नाथपुरोऽन्यत्र ग्राह्यं कृष्णप्रसाद्यपि ॥१९॥

अने जेना हाथनुं रांधेल अन्न तथा जेना पात्रनुं जण-ते खपतुं न होय तेषो रांधेल अन्न तथा तेना पात्रनुं जण, ते श्रीकृष्ण भगवाननी प्रसादी-चरणामृतना माहात्म्ये करीने पशा जगन्नाथपुरी विना अन्य स्थानकने विषे ग्रहण न करवुं; अने जगन्नाथपुरीने विषे जगन्नाथज्ञनो प्रसाद लेवाय तेनो दोष नहि ॥१९॥

और जिसके हाथ से पकाया गया अन्न तथा जिसके पात्र का जल अग्राह्य हो उसका पकाया हुआ अन्न तथा उसके पात्र का जल श्रीकृष्णभगवानकी प्रसादी या चरणामृत के माहात्म्य से भी जगन्नाथपुरी के अलावा अन्य स्थान पर ग्रहण न करें, जगन्नाथपुरी में जगन्नाथजी का प्रसाद लेने में कोई दोष नहीं है ॥१९॥

One shall never consume food or drink prepared by a person from whom one is prohibited to take such things by holy scriptures, at any place, even if it is the Prasad (sanctified food) from the offerings to Lord Shree Krishna, except the Prasad at Jagannathpuri. (19)



मिथ्यापवादः कस्मिंश्चिदपि स्वार्थस्य सिद्धये ।  
नारोप्यो नापशब्दाश्च भाषणियाः कदाचन ॥२०॥

अने पोताना स्वार्थनी सिद्धिने अर्थे पण कोईने विषे मिथ्या अपवाद आरोपणा न कर्वो;  
अने कोईने गाण तो क्यारेय न टेवी. ॥२०॥

कअपने स्वार्थकी सिद्धि के लिए भी कीसी के उपर मिथ्या अपवाद का आरोप न करें तथा  
किसी को गाली तो क भी न दें ॥२०॥

One shall never make false accusations or abuse anyone even if it  
serves one's self-interest. (20)



देवतातीर्थविप्राणां साध्वीनां च सतामपि ।  
वेदानां च न कर्तव्य निन्दा श्रव्या न च क्लृचित् ॥२१॥

अने देवता, तीर्थ, ब्राह्मण, पतिव्रता, साधु अने वेद, ऐमनी निंदा क्यारेय न करवी अने न  
सांभणवी. ॥२१॥

देवता, तीर्थ ब्राह्मण, पतिव्रता, साधु और वेद इनकी निन्दा कदापि न करें तथा न सुनें  
॥२१॥

One shall never slander deities, place of pilgrimage, Brahmins, devout wives, Sadhus or the holy scriptures nor listen to such slanders. (21)



देवतायै भवेद्यस्यै सुरामांसनिवेदनम् ।  
यत्पुरोऽजादिहिंसा च न भक्ष्यं तन्निवेदितम् ॥२२॥

अने जे देवताने सुरा अने मांसनुं नैवेद्य थतुं होय अने वणी जे देवतानी आगण बकरा  
आटिक ज्ञवनी हिंसा थती होय, ते देवतानुं नैवेद्य न खावुं ॥२२॥

जिस देवता के आगे मंदिरा तथा मांस का नैवेद्य होता हो तथा जिस देवताके आगे बकरें  
आदि जीवोंकी हिंसा होती हो, उस देवता का नैवेद्य न खायें ॥२२॥

One shall never accept the remnant part of an offering made to any deity to whom wine and flesh are offered and before whom goats and such other animals are sacrificed. (22)

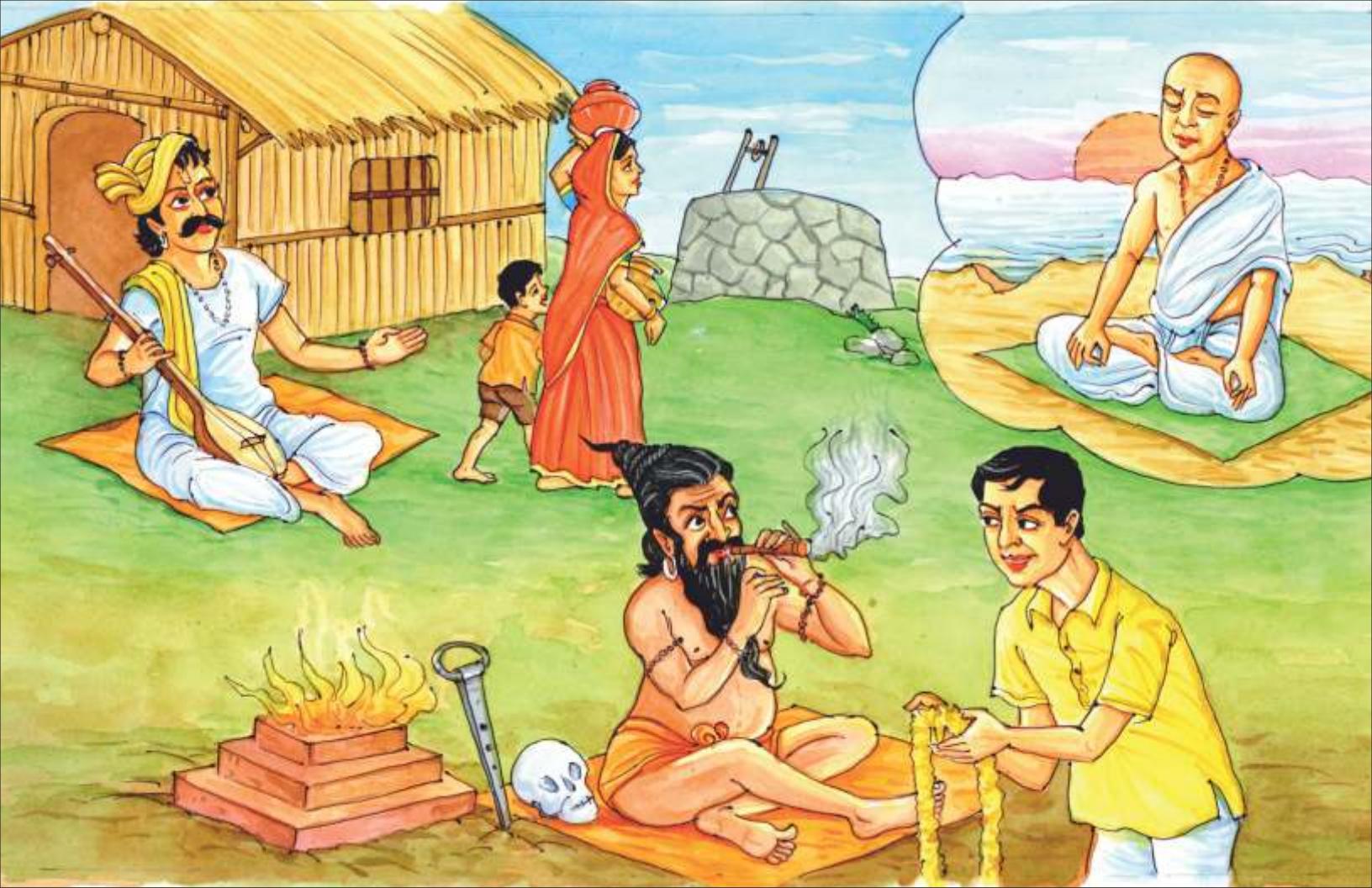


दृष्ट्वा शिवालयादीनि देवागारणि वर्त्मनि ।  
प्रणम्य तानि तदेवदर्शनं कार्यमादरात् ॥२३॥

अने मार्गने विषे चालते शिवालयादिक जे देवमंटिर आवे, तेने ज्ञेईने तेने नमस्कार करवो  
अने आदर थकी ते देवनुं दर्शन करवुं ॥२३॥

रास्ते में चलते समय शिवालयादि जो देवमंटिर आवें, उनको देखकर नमस्कार करें और  
आदरपूर्वक उन देवों का दर्शन करें ॥२३॥

When passing by Temples of Lord Shiva and other deities, one shall  
bow to them and pay due reverences to the deities therein. (23)



स्ववर्णश्रमधर्मो यः स हातव्यो न केनचित् ।  
परधर्मो न चाचर्यो न च पाषण्डकल्पितः ॥२४॥

अने पोतपोताना वर्णश्रमनो जे धर्म, ते कोई सत्संगीभे त्याग न करवो, अने परधर्मनुं आयरण न करवुं तथा पाखंड धर्मनुं आयरण न करवुं तथा कल्पित धर्मनुं आयरण न करवुं ॥२४॥

अपने अपने वर्णश्रम के धर्म का कोई भी सत्संगी त्याग न करें तथा पर धर्मका आचरण न करें तथा पाखंड धर्मका आचरण न करें तथा कल्पित धर्मका आचरण न करें ॥२४॥

One shall never abandon one's own duties as ordained by one's own Varnashram (hereditary status) nor follow as course of conduct prescribed for others nor follow any faith which is pretentious or fictitious. (24)



कृष्णभक्तेः स्वधर्माद्वा पतनं यस्य वाक्यतः ।  
 स्यात्तन्मुखान्न वै श्रव्याः कथावार्ताश्च वा प्रभोः ॥२५॥

अने जेना वयनने सांभणवे करीने श्रीकृष्ण भगवाननी भक्तिने पोतानो धर्म-ऐ बे थकी  
 पड़ी जवाय, तेना मुख्यकी भगवाननी कथा वार्ता न सांभणवी ॥२५॥

जिसके बचन सुनने से श्रीकृष्ण भगवान् की भक्ति और अपना धर्म, इन दोनों से पतन हो,  
 उसके मुख से भगवान् की कथावार्ता भी न सुनें ॥२५॥

One shall never listen to any religious discourses from a person whose  
 preaching might lead one away from devotion to Lord Shree Krishna or one's  
 Dharma. (25)

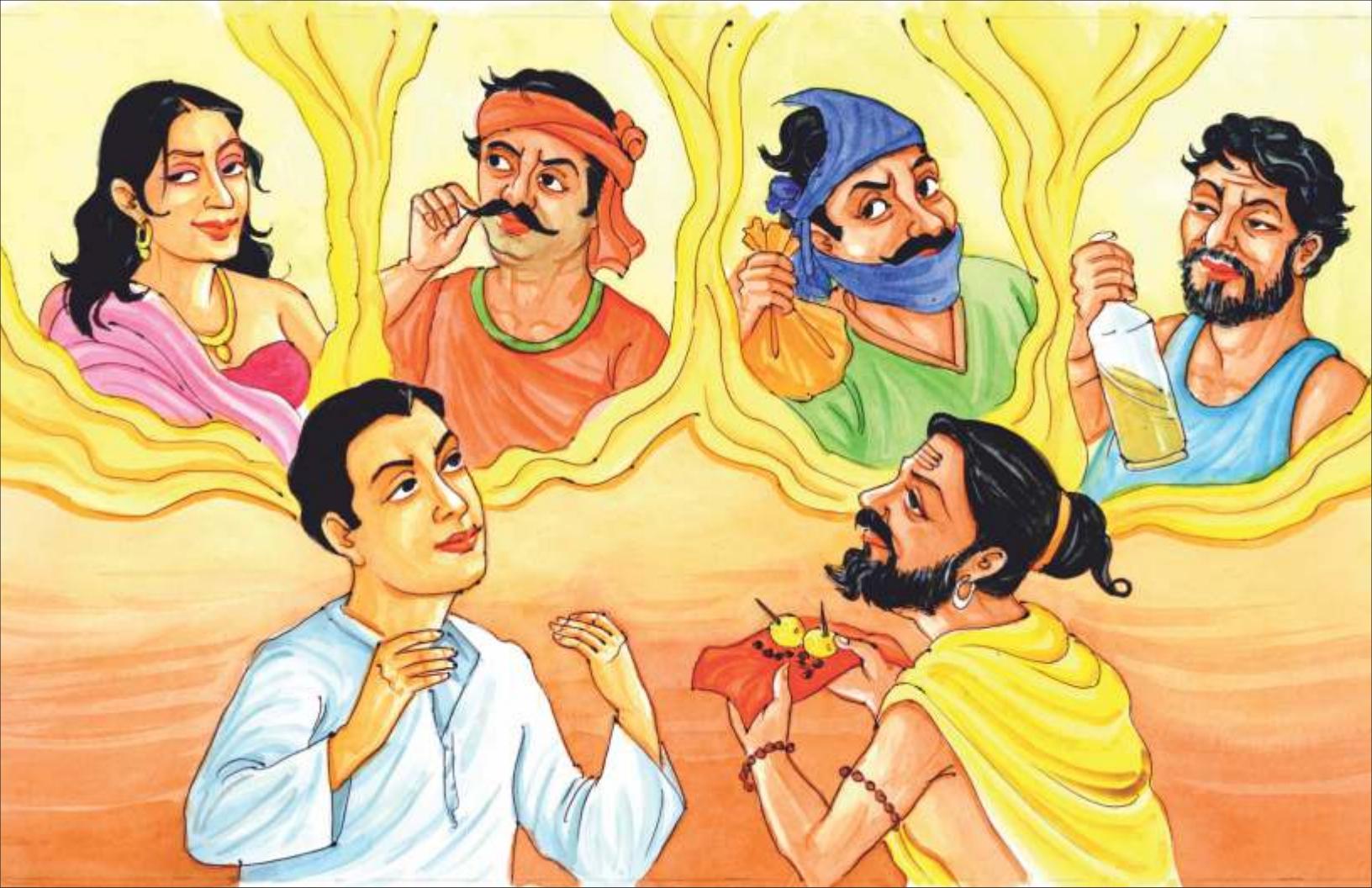


स्वपरद्रोहजनं सत्यं भाष्यं न कर्हिचित् ।  
 कृतञ्जसङ्गस्त्यक्तव्यो लुञ्छा ग्राह्या न कस्यचित् ॥२६॥

अने जे सत्य वयन बोलवे करीने पोतानो द्रोह थाय तथा पारको द्रोह थाय, ऐवुं जे सत्य वयन, ते क्यारेय न बोलवुं; अने जे कृतध्नी होय तेना संगनो त्याग करवो; अने व्यवहारकार्यने विधे कोईनी लांच न लेवी. ॥२६॥

जिस सत्य वचन बोलने से अपना तथा अन्य का द्रोह हो, ऐसा सत्यवचन कदापि न बोलें और कृतध्नीके संग का त्याग करें तथा व्यवहारकार्यमें किसी से घूस-रिश्वत न लें ॥२६॥

One shall never speak such truth which might bring about harm to oneself or to others, nor keep company of ungrateful people, nor take any bribe from anyone in social affairs. (26)



चोरपापिव्यसनिनां सङ्गः पाखण्डनां तथा ।  
 कामिनां च न कर्तव्यो जनवञ्चनकर्मणाम् ॥२७॥

અને ચોર, પાપી, વ્યસની, પાખંડી, કામી તથા કીમિયા આદિક ક્રિયાએ કરીને જનનો ઠગનારો એ છ પ્રકારના જે મનુષ્ય, તેમનો સંગ ન કરવો. ॥૨૭॥

चोर, पापी, व्यसनी, पाखंडी, कामी तथा कीमिया आदि क्रियाओं द्वारा लोगोंको ठगनेवाले धूर्त, इन छः प्रकारके मनुष्यों का संग न करें ॥२७॥

One shall never associate oneself with thieves, sinner, drug addicts, hypocrites, licentious (lustful) and such other deceitful persons. (27)



भक्तिं वा ज्ञानमालम्ब्य स्त्रीद्रव्यरसलोलुभाः ।  
पापे प्रवर्तमानाः स्युः कार्यस्तेषां न सङ्गमः ॥२८॥

अने जे मनुष्य, भक्तिनुं अथवा ज्ञाननुं आलंबन करीने स्त्री, द्रव्य अने रसास्वाद, तेने विषे  
अतिशय लोलुप थका पापने विषे प्रवर्तता होय, ते मनुष्यनो समागम न करवो ॥२८॥

जो मनुष्य भक्तिका अथवा ज्ञान का आलंबन लेकर स्त्री, द्रव्य तथा रसास्वाद में अत्यंत  
लोलुप होकर पाप कर्म में प्रवृत्त हों, ऐसे मनुष्योंका समागम न करें ॥२८॥

One shall never associate oneself with those persons who, under the pretext of preaching religion or devotion to God, seek wealth, women or worldly pleasure and commit sins. (28)



कृष्णाकृष्णावताराणां खण्डनं यत्र युक्तिभिः ।  
 कृतं स्वात्तानि शास्त्राणि न मात्यानि कदाचन ॥२९॥

अने जे शास्त्रने विषे श्रीकृष्ण भगवान् तथा श्रीकृष्ण भगवानना जे वराहादिक अवतार  
 तेमनुं युक्तिअे करीने खंडन कर्युहोय, एवा जे शास्त्र, ते क्यारेय न मानवां अनेन सांभणवां ॥२८॥

जिन शास्त्रोमें श्रीकृष्ण भगवान् तथा श्रीकृष्ण भगवान् के वाराहादिक अवतारों का युक्तियों  
 द्वारा खण्डन किया गया हो, ऐसे शास्त्रों को कदापि न मानें और न सुनें ॥२९॥

One shall never hear or believe those scriptures in which the existence  
 of Lord Shree Krishna and His incarnation have been skillfully and deceitfully  
 denied or degraded. (29)

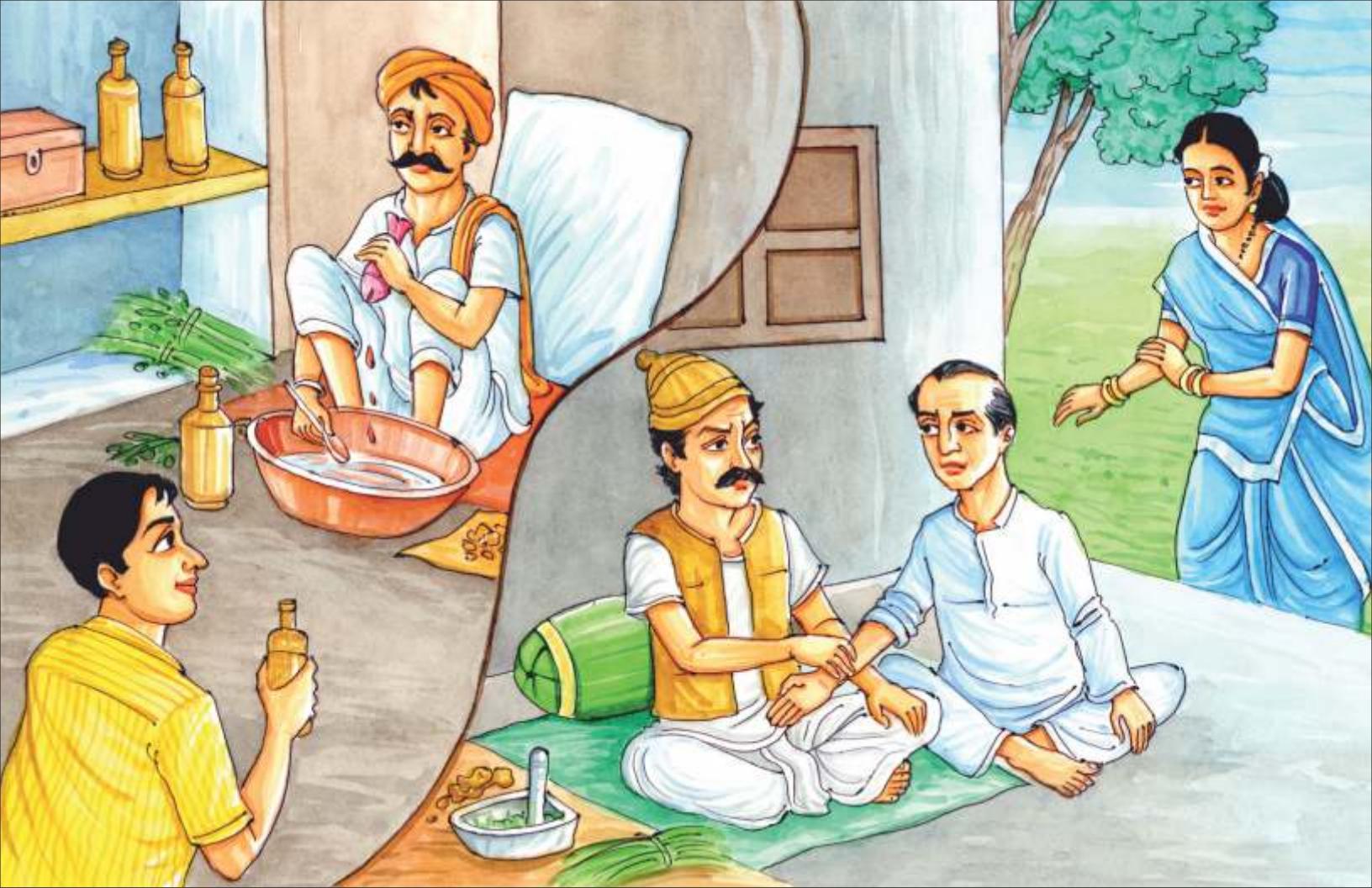


अगालितं न पातव्यं पानीयं च पयस्तथा ।  
स्नानादि नैव कर्तव्यं सूक्ष्मजन्तुमयाभसा ॥३०॥

अने गाण्या विनानुं जे जण तथा दूध, ते न पीवुं; अने जे जणने विषे जीणा ज्व धणांक होय,  
ते जणे करीने स्नानादिक कियान करवी. ॥३०॥

बिना छना हुआ जल तथा दूध न पियें, तथा जिस जल में अनेक सूक्ष्म जंतु हो, वैसे जल से  
स्नानादि क्रियान करें ॥३०॥

One shall never drink unfiltered water or milk, nor bathe with water  
which contains many organisms. (30)

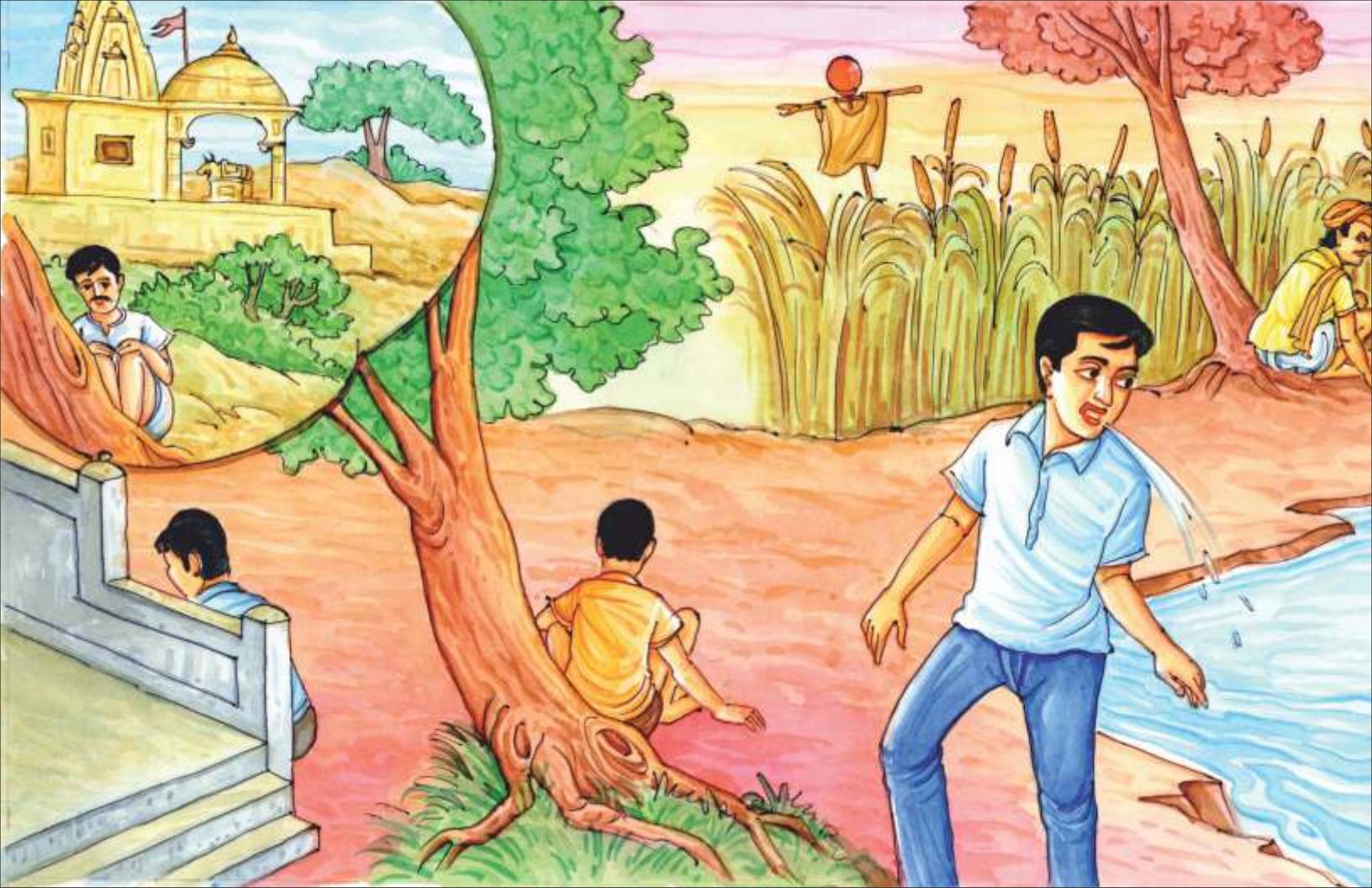


यदौषधं च सुरया सम्पृक्तं पललेन वा ।  
अज्ञातवृत्तवैद्येन दत्तं चाद्यं न तत् क्वचित् ॥३१॥

अने जे औषध, दाढ़ तथा मांस-तेणो युक्त होय, ते औषध क्यारेय न खावुं, अने वणी जे वैद्यना आचरणने जाशता न होઈअे, ते वैद्ये आप्युं जे औषध, ते पशु क्यारेय न खावुं ॥३१॥

जो औषधि मदिरा या मांस से युक्त हो उसका सेवन कदापि न करें और जिस वैद्य के आचरण को न जानते हौ उसकी दी हुई औषधि का भी कदापि सेवन न करें ॥३१॥

One shall never take medicine which contains alcohol or meat extracts,  
nor take medicine from an unknown physician. (31)



स्थानेषु लोकशास्त्राभ्यां निषिद्धेषु कदाचन ।  
मलमूत्रोत्सर्जनं च न कार्यं ष्ट्रीवनं तथा ॥३२॥

अने लोक ने शास्त्र-तेमणे मण-मूत्र करवाने अर्थे वर्ज्यां ऐवां स्थानक, जे ऊर्ध्वं देवालय तथा नदी तथावना आरा तथा मार्ग तथा वावेलुं खेतर, वृक्षनी छाया तथा फूलवाडी-बगीचा; ए आष्टिक जे स्थानक, तेमने विषे क्यारेय पण मण-मूत्र न करवुं तथा थूंकवुं पण नहि. ॥३२॥

लोक तथा शास्त्रों द्वारा मलमूत्र करने के लिए वर्जित जीर्ण देवालय, नदी तालाबके घाट, मार्ग, बोए हुए खेत, वृक्ष की छाया, फूलवारी, तथा बगीचे इत्यादि स्थानोंमें कदापि मलमूत्र न करें तथा थूके भी नहीं ॥३२॥

One shall never excrete, urinate or spit in dilapidated temples, banks of rivers or ponds, main roads, fields sown with seeds, shade of trees, orchards, gardens or similar places which have been prohibited for such use by religious scriptures or by public bodies. (32)



अद्वारेण न निर्गम्यं प्रवेष्टव्यं न तेन च ।  
स्थाने सस्वामिके वासः कार्योऽपृष्ठ्वानतत्पतिम् ॥३३॥

अने चोरमार्गं करीने पेसवुं नहीं अने नीसरवुं नहि, अने जे स्थानक धणियातुं होय, ते स्थानकने विषे तेना धणीने पूछ्या विना उतारो न करवो. ॥उउ॥

चोर मार्ग से प्रवेश न करें तथा बाहर भी न निकलें तथा मालिकी युक्त स्थान में उसके मालिक से पूछेबिना निवास न करें ॥३३॥

One shall never enter or exit through a secret way, and shall not occupy, even temporarily, any private property without the permission of its owner. (33)



ज्ञानवार्ताश्रुतिर्नार्या मुखात् कार्या न पूरुषैः ।  
न विवादः स्त्रिया कार्यो न राजा न च तज्जनैः ॥३४॥

अने अमारा सत्संगी-जे पुरुष मात्र, तेमणे बाई माणसना मुख थकी ज्ञानवार्ता न सांभणवी; अने स्त्रीओ साथे विवाद न करवो तथा राजा संगाथे तथा राजाना माणस संगाथे विवाद न करवो ॥३४॥

हमारे सत्संगी पुरुषमात्र, स्त्रियोंके मुख से ज्ञानोपदेश न सुनें तथा स्त्रियों के साथ विवाद न करें तथा राजा के साथ एवं राजपुरुषों के साथ भी कभी विवाद न करें ॥३४॥

My male disciples shall never listen to the religious discourses given by females, nor enter into arguments with females, rulers and courtiers. (34)



अपमानो न कर्तव्यो गुरुणां च वरीयसाम् ।  
लोके प्रतिष्ठितानां च विदुषां शस्त्रधारिणाम् ॥३५॥

अने गुरुनुं अपमान न करवुं; तथा जे अतिशय श्रेष्ठ मनुष्य होय तथा जे लोकने विषे प्रतिष्ठित मनुष्य होय तथा जे विद्वान मनुष्य होय तथा जे शस्त्रधारी मनुष्य होय, ते सर्वेनुं अपमान न करवुं॥३५॥

गुरु, अत्यंत श्रेष्ठ मनुष्य समाज में प्रतिष्ठा सम्पन्न मनुष्य, विद्वान तथा शस्त्रधारी मनुष्य, इनका अपमान न करें ॥३५॥

One shall never insult a guru, or a person who is either great, dignified, learned or armed. (35)



कार्यं न सहसा किञ्चित्कार्यो धर्मस्तु सत्वरम् ।  
पाठनीयाऽधीतविद्या कार्यः सङ्गोऽन्वहं सताम् ॥३६॥

अने विद्यार्थी विना तत्कालि कोई कार्यं न करवुँ; अने धर्म संबंधी जे कार्यं ते तो तत्कालि करवुँ;  
अने पोते जे विद्या भाइया होई अे, ते बीजाने भाषाववी; अने नित्य प्रत्ये साधुनो समागम करवो.  
॥३६॥

विचार किये बिना शीध कोई भी व्यावहारिक कार्यं न करें लेकिन धार्मिक कार्यं तो तत्काल करें तथा  
स्वयं जो विद्याभ्यास किया हो उसे दूसरोंको पढावें तथा प्रतिदिन सन्त समागम करें ॥३६॥

One shall never perform duties pertaining to one's social affairs without careful consideration, whereas duties relating to Dharma shall be performed immediately. Those who are learned shall impart their knowledge to others, and shall always associate with saintly persons. (36)



गुरुदेवनृपेक्षार्थं न गम्यं रिक्तपाणिभिः ।  
विश्वासधातो नो कार्यः स्वश्लाघा स्वमुखेन च ॥३७॥

अने गुरु, देव अने राजा ए त्रष्णाना दर्शनने अर्थे ज्यारे जवुं, त्यारे ठाले हाथे न जवुं; अने कोई नो विश्वासधात न करवो; अने पोताना मुझे करीने पोताना वभाश न करवां। ॥३७॥

गुरु, देव तथा राजा इन तीनों के दर्शनार्थ जाते समय खाली हाथ से न जाय, किसी से विश्वासधात न करें और अपने मुख से अपनी प्रशंसा न करें। ॥३७॥

One shall never go empty handed to a guru, a deity or a king. One shall never commit a breach of trust and shall never praise oneself. (37)



यस्मिन् परिहितेऽपि स्युदूरश्यान्यज्ञानि चात्मनः ।  
तद्दूष्यं वसनं नैव परिधार्य मदाश्रितैः ॥३८॥

अने जे वस्त्र पहेर्ये थके पोताना अंग देखाय, तेवुं जे भूंकुं वस्त्र, ते अमारा सत्संगी-तेमाणे न  
पहेरवुं ॥३८॥

जिस वस्त्रको पहनने पर भी अपने शरीरके अवयव दिखाई पडे, ऐसे दूषित वस्त्र को हमारे  
सत्संगी कभी धारण न करें ॥३८॥

My disciples shall never wear clothes which are likely to cause any  
indecent exposure of the body. (38)

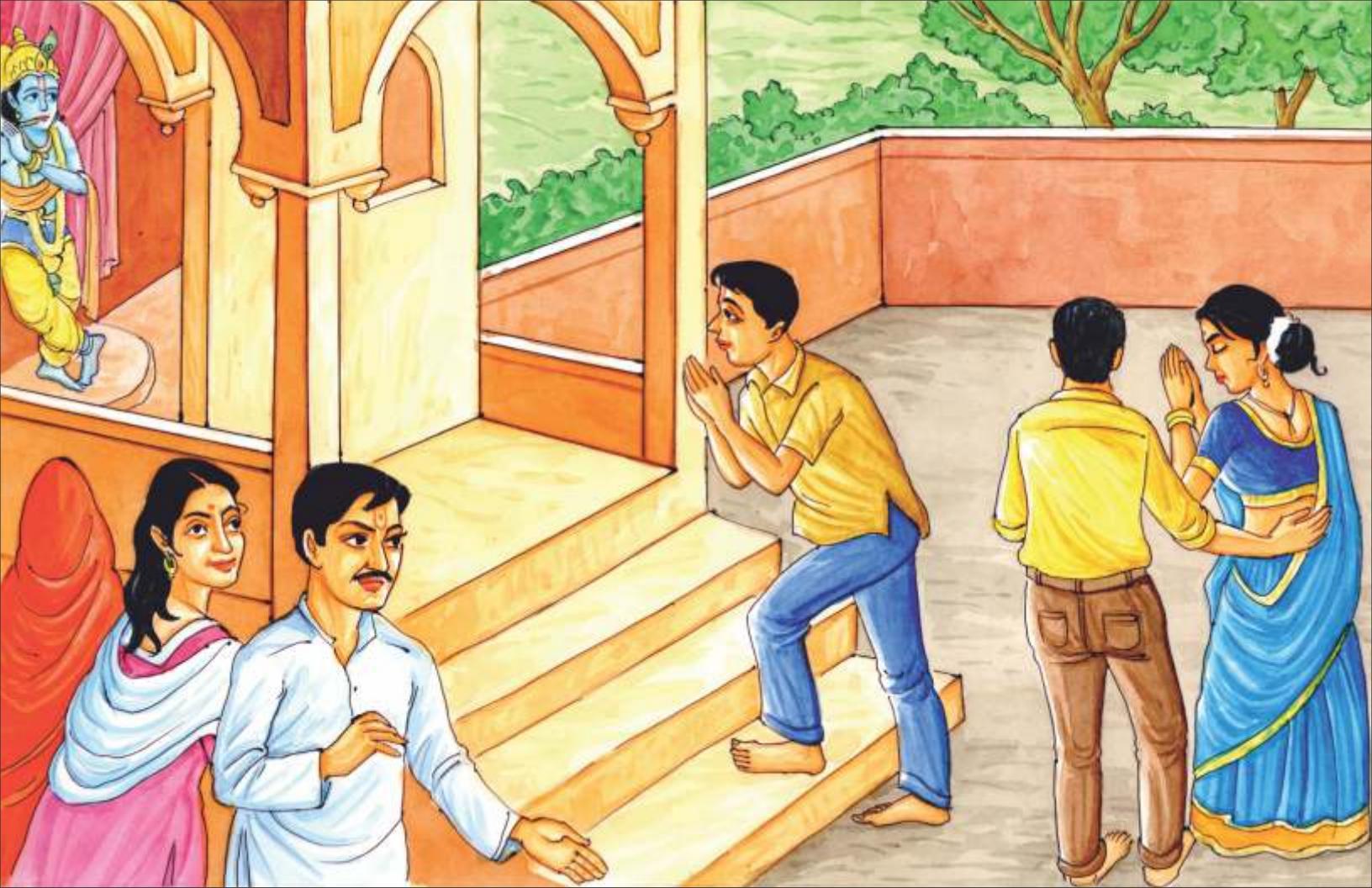


धर्मेण रहिता कृष्णाभक्तिः कार्या न सर्वथा ।  
अज्ञनिन्दाभयान्नैव त्याज्यं श्रीकृष्णसेवनम् ॥३९॥

अने श्रीकृष्ण भगवाननी जे भक्ति, ते धर्मे रहित ऐवी कोई प्रकारे न करवी; अने अज्ञानी ऐवा जे मनुष्य-तेमनी निंदाना भय थकी श्रीकृष्ण भगवाननी सेवानो त्याग करवो जे नहि. ॥३९॥

धर्म के रहित श्रीकृष्ण भगवानकी भक्ति सर्वथा न करें तथा अज्ञानी मनुष्यों की निन्दा के भय से श्रीकृष्ण भगवान् की सेवा का त्याग न करें ॥३९॥

One shall never practise devotion to Lord Shree Krishna without observance of Dharma and shall never give up devotion to Lord Shree Krishna for fear of criticism from ignorant persons. (39)



उत्सवाहेषु नित्यं च कृष्णमन्दिरमागतैः ।  
पुम्भः स्पृश्या न वनितास्तत्र ताभिश्च पुरुषाः ॥४०॥

अने उत्सवना दिवसने विषे तथा नित्य प्रत्ये श्रीकृष्णना मंदिरमां आव्या एवा जे सत्संगी पुरुष तेमणे, ते मंदिरने विषे स्त्रीओनो स्पर्श न करवो; तथा स्त्रीओ, तेमणे, पुरुषनो स्पर्श न करवो, अने मंदिरमांथी नीसर्या पछी पोतपोतानी रीते वर्तवुं ॥४०॥

प्रतिदिन तथा उत्सव के दिन श्रीकृष्ण भगवान के मंदिर में आये हुए सत्संगी पुरुष, मंदिरमें स्त्रियों का स्पर्श न करें तथा स्त्रियाँ पुरुष का स्पर्श न करें, मंदिर से बाहर निकलने के बाद अपनी अपनी रीति अनुसार रहें ॥४०॥

All those who come to the temples of Lord Shree Krishna either daily or on days of religious festivals, shall keep themselves away from touching the opposite sex and after coming out from temples, they shall behave as normal.  
(40)



કૃષ્ણદીક્ષાં ગુરો: પ્રામૈસ્તુલસીમાલિકે ગલે ।  
ધાર્યે નિત્યં ચોર્ધ્વપુણ્ડ્રં લલાટાદૌ દ્વિજાતિભિ: ॥૪૧॥

અને ધર્મવંશી ગુરુ થકી શ્રીકૃષ્ણની દીક્ષાને પામ્યા એવા જે બ્રાહ્મણ, ક્ષત્રિય અને વૈશ્ય-એ-ત્રણ વર્ણના અમારા સત્સંગી-તેમણે, કંઠને વિષે તુલસીની બેવડી માળા નિત્યે ધારવી; અને લલાટ, હૃદય અને બે હાથ-એ ચારે ઠેકાણે ઉર્ધ્વપુણ્ડ્ર તિલક કરવું. ॥૪૧॥

धર्मવंशी ગુરુ સે જિન્હોને શ્રીકૃષ્ણ કી દીક્ષા પ્રાપ્ત કી હૈ, એસે બ્રાહ્મણ, ક્ષત્રિય ઔર વૈશ્ય ઇન તીનો વર્ણો કે હમારે સત્સંગી જન નિરંતર ગલે મેં તુલસી કી દોહરી માલા ધારણ કરેં તથા લલાટ, હૃદય એવં દો હાથ ઇન ચારોં સ્થાન પર ઉર્ધ્વપુણ્ડ્ર તિલક કરેં ॥૪૧॥

Those of My Brahmin, Kshatriya (warriors) and Vaishya (traders) disciples who have been initiated into the devotion of Lord Shree Krishna by their Acharya (descended from Dharmadev), shall always wear around their neck a Kanthi (two-fold necklace of beads) prepared from Tulsi wood and shall also make a Tilak (vertical 'U' shaped mark), on their forehead, chest and both upper arms. (41)

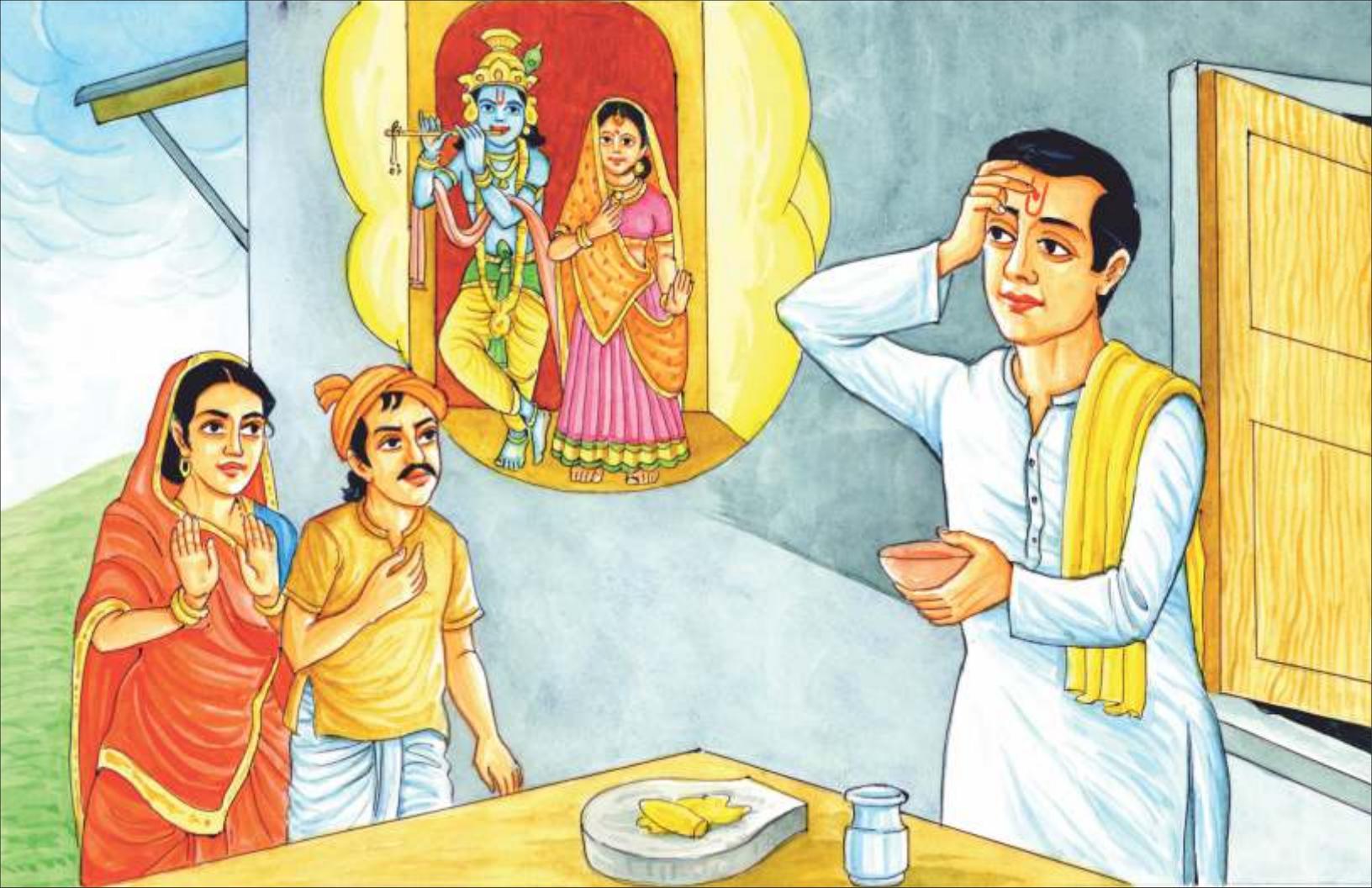


तत्तु गोपीचन्दनेन चन्दनेनाथवा हरेः ।  
कार्यं पूजावशिष्टेन केशरादियुतेन च ॥४२॥

अने ते तिलक जे ते, गोपीचंदने करीने करवुं अथवा भगवाननी पूजा करतां बाकी रहुं अने  
केसर-कुंकुमादियुक्त ऐवुं जे प्रसादीनुं चंदन, तेणो करीने तिलक करवुं ॥४२॥

और वह तिलक गोपीचन्दन से करें अथवा भगवानकी पूजा से अवशिष्ट केसर-  
कुंकुमादिक से युक्त जो प्रसादी का चन्दन, उससे करें ॥४२॥

The Tilak shall be made with either Gopichandan stick or with consecrated sandal paste mixed with Kumkum (saffron or red powder) duly offered to Lord Shree Krishna. (42)



तन्मध्य एव कर्तव्यः पुण्ड्रद्रव्येण चन्दकः ।  
कुङ्कुमेनाथवा वृत्तो राधालक्ष्मीप्रसादिना ॥४३॥

अने ते तिलकना मध्यने विषे जे गोण ऐवो जे चांदलो; ते जे ते गोपीचंदने करीने करवो अथवा राधिकाज्ञ अने लक्ष्मीज्ञ, तेनुं प्रसादी ऐवुं जे कुंकुम, तेणे करीने ते चांदलो करवो. ॥४३॥

उस तिलक के मध्यमें ही गोपीचन्दन से तिलक द्रव्य से अथवा राधिकाजी एवं लक्ष्मीजी से प्रसादीभूत कुंकुम से गोल चन्दक करें ॥४३॥

In the center of the Tilak, one shall make a Chandlo (round mark) of Gopichandan or Kumkum which has been offered to Radhikaji or Laxmiji. (43)



सच्छ्रद्धाः कृष्णभक्ता ये तैस्तु मालोर्ध्वपुण्ड्रके ।  
द्विजातिवद्वारणीये निजधर्मेषु संस्थितैः ॥४४॥

अने पोताना धर्मने विषे रह्या अने श्रीकृष्णना भक्त ऐवा जे सच्छ्रद्ध-तेमणे तो तुलसीनी माणा अने उर्ध्वपुण्ड्र तिलक ते ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्यनी पेठे धारवा ॥४४॥

अपने धर्म में रहते हुए जो श्रीकृष्ण भगवान के भक्त सत्शूद्र हैं, वे तो द्विजाति-ब्राह्मण, क्षत्रिय एवं वैश्य के समान ही तुलसीकी माला तथा उर्ध्वपुण्ड्र तिलक धारण करें ॥४४॥

My Sat Shudra disciples who are devotees of Lord Shree Krishna and observing their Dharma, shall wear a Kanthi of Tulsi and shall make Tilak marks similar to those of the Brahmins, the Kshatriyas and the Vaishyas. (44)

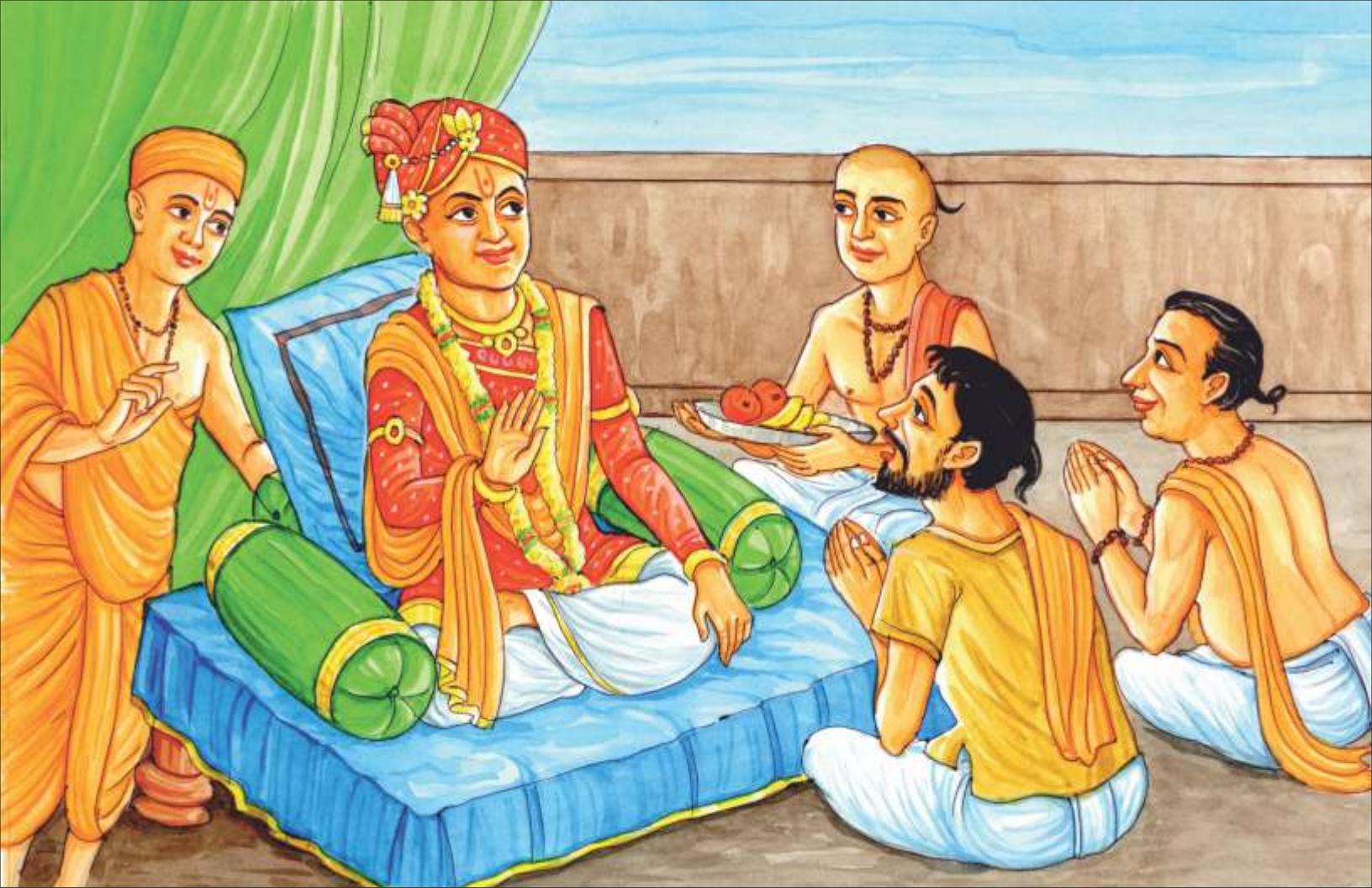


भक्तैस्तदितरैर्माले चन्दनादीन्धनोद्भवे ।  
 धार्ये कन्ठे ललाटेऽथ कार्यः केवलचन्द्रकः ॥४५॥

अने ते सच्छुद्र थकी बीजा-जे जातिए करीने उत्तरता ऐवा भक्तजन, ते मणे तो चंदनादिक  
 काष्ठनी जे भेवडी माणा, ते भगवाननी प्रसादी करावीने कंठने विषे धारवी, अने ललाटने विषे केवण  
 चांदलो करवो, पण तिलकन करवुं ॥४५॥

लेकिन उन सत्शूद्रों से, अतिरिक्त, जाति से कनिष्ठअसत्शूद्र जो भक्तजन हैं वे भगवान की  
 प्रसादीभूत ऐसे चन्दनादिक काष्ठ की दोहरी माला कंठ में धारण करें तथा ललाट में सिर्फ गोल चन्द्रक करें  
 परन्तु तिलकन करें ॥४५॥

My disciples who belong to substrata of society shall wear a sanctified double rosary of sandalwood around their neck, and shall place only a round mark on the forehead but not a Tilak. (45)

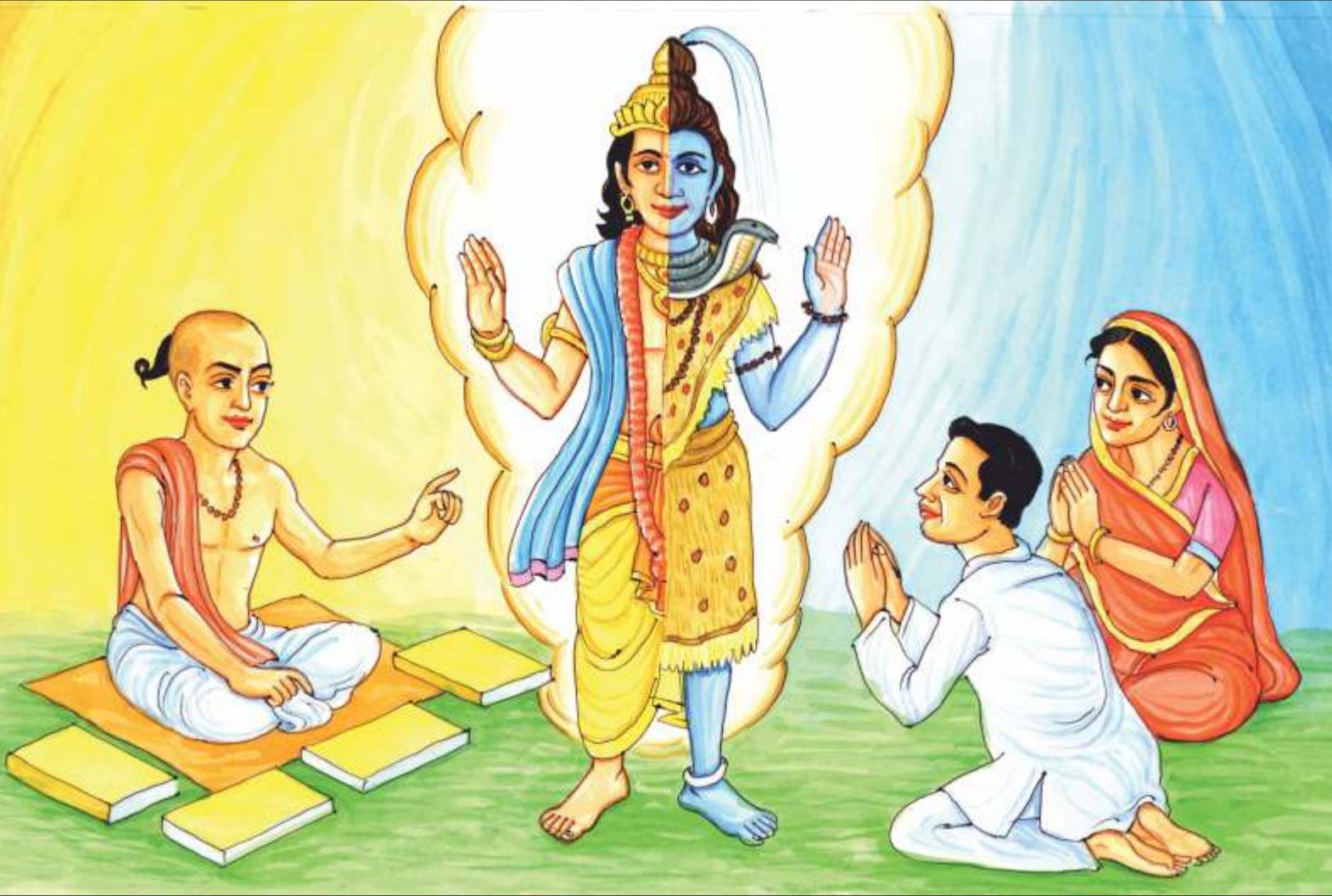


त्रिपुण्ड्रुद्राक्षधृतिर्येषां स्यात्स्वकुलागता ।  
तैस्तु विप्रादिभिः क्वापि न त्याज्या सा मदाश्रितैः ॥४६॥

अने जे ब्राह्मणादिकने त्रिपुण्ड्र-जे आडुं तिलक करवुं तथा रुद्राक्षनी माणा धारवी-ऐ बे वानां पोतानी कुण परंपराए करीने चाल्यां आव्यां होय, अने ते ब्राह्मणादिक अमारा आश्रित थया होय, तो पण तेमणे त्रिपुण्ड्र अने रुद्राक्षनो क्यारेय त्याग न करवो. ॥४६॥

जिन ब्राह्मणादिकों को, त्रिपुण्ड्र करना तथा रुद्राक्ष की माला धारण करना, ये दो बातें अपनी कुलपरंपरा से प्राप्त हो, और वे ब्राह्मणादिक हमारे आश्रित बने हो तो भी वे त्रिपुण्ड्र तथा रुद्राक्ष का कदापि त्याग न करें ॥४६॥

Brahmins and others who have for generations marked their forehead with Tripundra (a three-fold horizontal mark), and worn a necklace of Rudraksha beads on account of their family traditions and customs, shall continue to do so even after becoming My disciples. (46)



ऐकात्म्यमेव विज्ञेयं नारायणमहेशयोः ।  
उभयोर्ब्रह्मस्वपेण वेदेषु प्रतिपादनात् ॥४७॥

अने नारायण अने शिवज्ञ - ए बेनुं ऐकात्मपश्चुं ज जाशवुं; केम जे वेदने विधे ए बेयनुं  
ब्रह्मरूपे करीने प्रतिपादन कर्युं।।४७॥

नारायण तथा शिवजी उन दोनों में एकात्मता ही समझें क्योंकि वेदों में उन दोनों का  
ब्रह्मस्वरूप से प्रतिपादन किया गया है।।४७॥

No distinction shall be made between Narayan and Shiv, as they both have been proclaimed as Brahmrup by the Vedas. (47)



शास्त्रोक्त आपद्धर्मो यः स त्वल्पापदि कर्हिचित् ।  
मदश्रितैर्मुख्यतया ग्रहीतव्यो न मानवैः ॥४८॥

अने अमारा आश्रित जे मनुष्य तेमणे, शास्त्रे कह्यो जे आपद्धर्म, ते अल्प आपत्कालने विषे  
मुख्यपणे करीने क्यारेय ग्रहण न करवो ॥४८॥

हमारे आश्रित मनुष्य शास्त्रों द्वारा प्रतिपादित आपद्धर्म को अल्प आपत्काल में प्रमुख रूप  
से कदापि ग्रहण न करें ॥४८॥

My disciples shall never practise the relaxations of rules, permitted by scriptures for extreme calamities, in the event of temporary adverse conditions. (48)

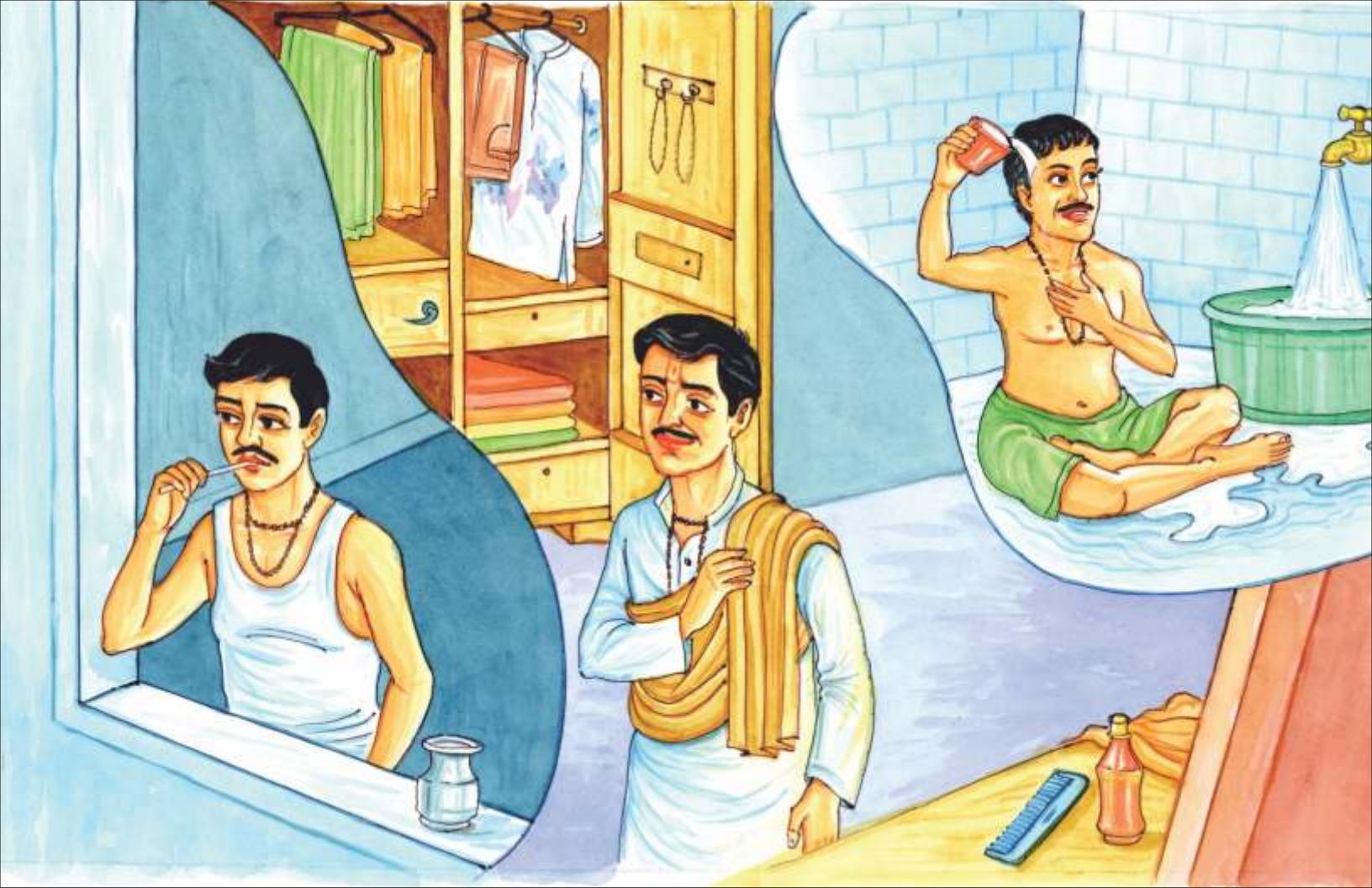


प्रत्यहं तु प्रबोद्धव्यं पूर्वमेवोदयाद्रवेः ।  
विधाय कृष्णस्मरणं कार्यं शौचविधिस्ततः ॥४९॥

अने अमारा सत्संगी तेभाषे नित्य सूर्य उग्याथी प्रथम ज जागवुं, अने श्रीकृष्ण भगवाननुं  
स्मरण करीने पधी शौचविधि करवा जवुं. ॥४९॥

हमारे आश्रित सत्संगी प्रतिदिन सूर्योदय से पूर्व ही निद्रा का त्याग करें तथा श्रीकृष्ण  
भगवान् का स्मरण करके शौचविधि आदि क्रिया करें ॥४९॥

All my disciples shall get up daily before sunrise, offer prayers to Lord Shree Krishna, and then go to answer the call of nature. (49)

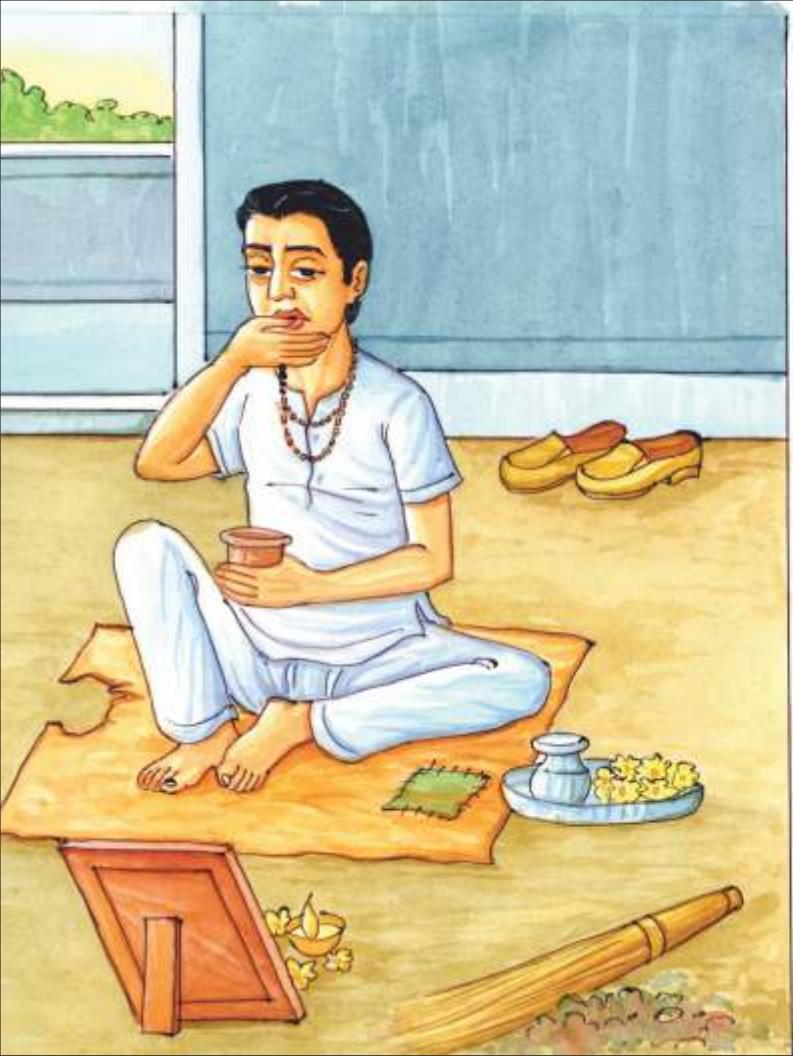


उपविश्यैव चैकत्र कर्तव्यं दन्तधावनम् ।  
स्नात्वा शुच्यम्बुना धौते परिधार्ये च वाससी ॥५०॥

अने पृष्ठी एक स्थानकने विषे बेसीने दातण करवुं अने पृष्ठी पवित्र जणे करीने स्नान करीने, पृष्ठी धोयेलुं वस्त्र एक पहेरवुं. अने एक ओढवुं. ॥५०॥

तत्पश्चात् एक स्थान में बैठकर दन्तशुद्धि करें, बाद में पवित्र जल से स्नान करके धोये हुए दो वस्त्र-एक दोती तथा एक उत्तरीय धारण करें ॥५०॥

Thereafter, sitting in one place, they shall brush their teeth, bathe with clean water and then wear washed cloth, one around the waist and one around the upper part of the body. (50)



उपविश्य ततः शुद्ध आसने शुचिभूतले ।  
असङ्कीर्ण उपस्थृश्यं प्राइमुखं वोत्तरामुखम् ॥५१॥

अने ते वार पृष्ठी, पवित्र पृथ्वीने विषे पाथर्युं. अने शुद्ध ने क्रोधि भीजा आसनने अऽयुं न होय  
अने जे उपर सारी पेठे बेसाय, ऐवुं जे आसन तेने विषे, पूर्वमुखे अथवा उत्तरमुखे बेसीने,  
आचमन करवुं; ॥५१॥

इसके बाद पवित्र पृथ्वी पर बिछाये हुए शुद्ध, दूसरे अपवित्र आसन से अस्पृष्टतथा जिस पर अच्छी  
तरह से बैठा जा सके, ऐसे विस्तीर्ण आसन पर पूर्वाभिमुख अथवा उत्तराभिमुख बैठकर आचमन करें  
॥५१॥

Then they shall sit in a clean place, on a clean and suitable cloth, untouched by others, facing east or north, they shall perform Achaman (sipping of water). (51)

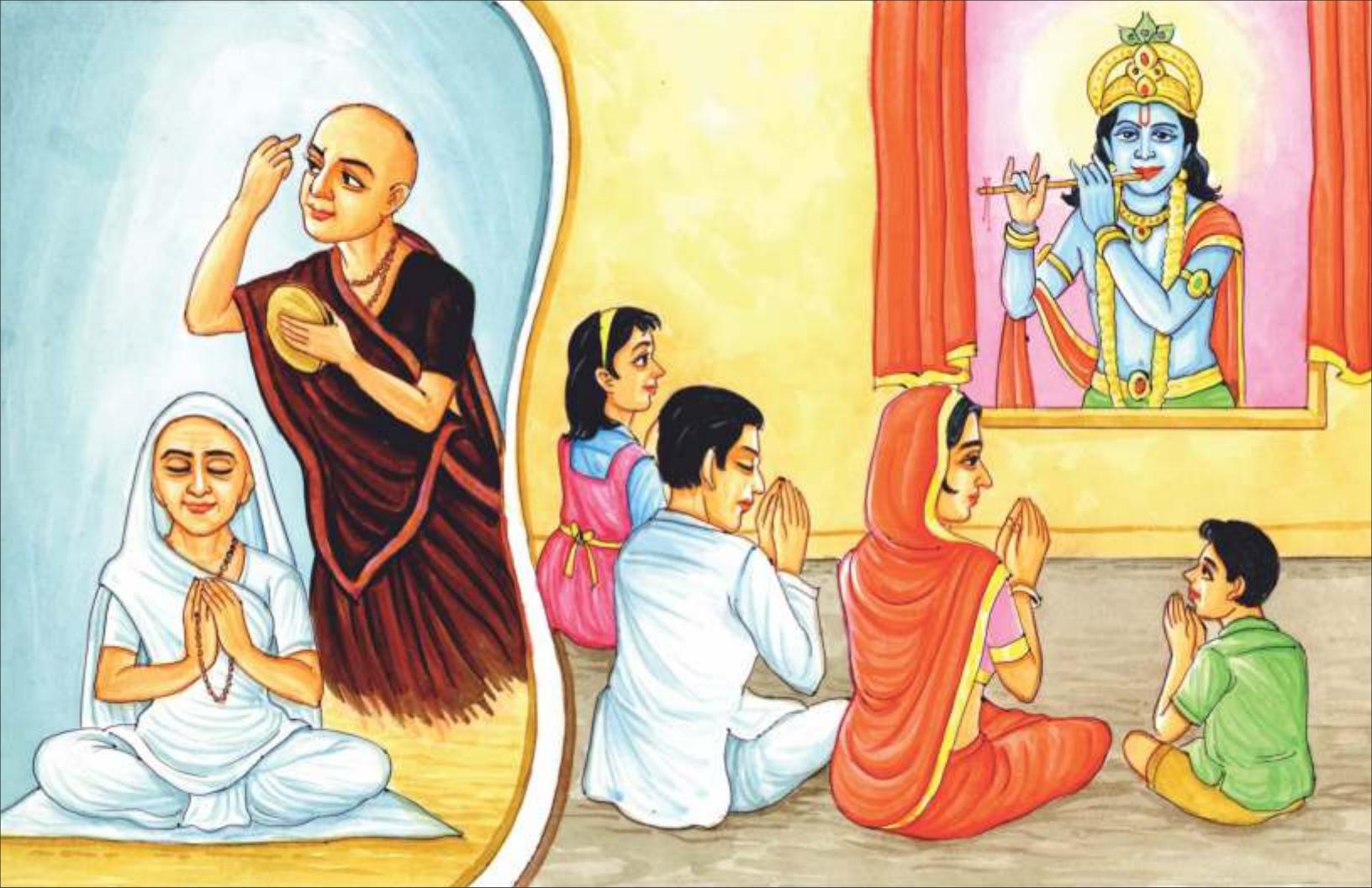


कर्तव्यमूर्धपुण्ड्रं च पुम्भरेव सचन्द्रकम् ।  
 कार्यः सधवनारीभिर्भाले कुंकुमचन्द्रकः ॥५२॥

अने पछी सत्संगी पुरुषमात्रने चांदले सहित ऊर्ध्वपुण्ड्र तिलक करवुं ने सुवासिनी जे  
 स्त्रीओ, तेमणे तो पोताना भालने विषे कुंकुमनो चांदलो करवो ॥५२॥

उसके बाद हमारे आश्रित सभी पुरुष गोल चन्द्रक सहित ऊर्ध्वपुण्ड्र तिलक करें और जो  
 सधवा स्त्रियाँ हो वे अपने भाल पर कुंकुम का चन्द्रक करें ॥५२॥

All males shall mark their forehead with a Tilak having a Chandlo in the  
 center of it. All married women shall make only a Chandlo of Kumkum on their  
 forehead. (52)



पुण्ड्रं वा चन्द्रको भाले न कार्यो मृतनाथवा ।  
मनसा पूजनं कार्यं ततः कृष्णस्य चाखिलैः ॥५३॥

अने ते विधवा स्त्रीओ मात्रने पोताना भालने विषे तिलक न करवुं, ने चांदलो पश न करवो.  
अने ते पछी ते सर्वे जे अमारा सत्संगी तेमाणे, मने करीने कल्प्या जे चंदन पुष्पादि उपचार, तेमाणे  
करीने श्रीकृष्ण भगवाननी मानसी पूजा करवी; ॥५३॥

विधवा स्त्रीयाँ हो वे अपने भाल में तिलक न करें तथा चन्द्रक भी न करें । उसके बाद हमारे सत्संगी  
मन से कल्पित चन्दन पुष्पादि उपचारों द्वारा श्रीकृष्ण भगवानकी मानसी पूजा करें ॥५३॥

Widows shall not mark their forehead with either a Tilak or Chandlo. All  
my disciples shall then meditate upon Lord Shree Krishna and mentally offer  
Him sandalwood, flowers, etc. (53)



प्रणम्य राधाकृष्णस्य लेख्याचार्वा तत आदरात् ।  
शक्त्या जपित्वा तन्मनं कर्तव्यं व्यावहारिकम् ॥५४॥

अने ते पृथी श्रीराधाकृष्णनी जे चित्र प्रतिमा, तेनुं आदर थकी दर्शन करीने, नमस्कार करीने पृथी पोताना सामर्थ्य प्रमाणे श्रीकृष्णनो अष्टाक्षर मंत्र, तेनो ४४ करीने ते पृथी पोतानुं व्यवहारिक कामकाज करवुं ॥५४॥

इसके बाद श्री राधाकृष्ण की चित्र-प्रतिमा का आदरपूर्वक दर्शन करके, नमस्कार करके अपनी शक्ति अनुसार श्रीकृष्णके अष्टाक्षर मन्त्रका जप करें और बाद में अपना व्यावहारिक कार्य करें ॥५४॥

Then they shall with due respect have darshan & bow down before the images of Shree Radha Krishna and recite the eight syllabled holy mantra of Shree Krishna according to their capacity and then attend to their daily routines. (54)



ये त्वम्बरीषवद्धकाः स्युरिहात्मनिवेदिनः ।  
तैश्च मानसपूजान्तं कार्यमुक्तक्रमेण वै ॥५५॥

अने जे अमारा सत्संगीमां अंबरीष राजानी पेठे आत्मनिवेदी ऐवा उत्तम भक्त होय  
तेमधो पश, प्रथम कह्युं तेवी रीते अनुकमे करीने, मानसी पूजा पर्यंत सर्वे किया करवी. ॥५५॥

और हमारे सत्संगी जनोंमें राजा अंबरीष के समान जो आत्मनिवेदी उत्तम भक्त हो वे भी  
पूर्वोक्त क्रमानुसार मानसी पूजा पर्यंत सभी किया अवश्य करें ॥५५॥

Even those of My devotees who are Atmanivedi (those who have entirely dedicated their souls to the services of God) like King Ambarish, shall also perform the sequence of the rituals as described above, up to and including meditation upon Lord Shree Krishna. (55)



शैली वा धातुजा मूर्तिः शालग्रामोऽर्च्य एव तः ।  
द्रव्यैर्यथासैः कृष्णस्य जप्योऽथाष्टाक्षरो मनुः ॥५६॥

अने ते जे आत्मनिवेदी भक्त-तेमणे, पापाणनी अथवा धातुनी जे श्रीकृष्ण भगवाननी प्रतिमा अथवा शालीग्राम, तेनी जे पूजा, ते देशकाणने अनुसरीने, पोताना सामर्थ्य प्रमाणे प्राप्त थयां जे चंदन, पुण्य इण्डिक वस्तु, तेणे करीने करवी. अने पछी श्रीकृष्ण भगवाननो जे अष्टाक्षर भंत्र, तेनो जप करवो. ॥५६॥

वे आत्मनिवेदि भक्त पापाण या धातु से निर्मित श्रीकृष्ण भगवान्‌की प्रतिमा का अथवा शालिग्राम का पूजन देशकालानुसार यथाशक्ति उपलब्ध चन्दन, पुण्य, फलादि उपहारों से करें और बाद में श्रीकृष्ण भगवान से अष्टाक्षर मन्त्र का जप करें ॥५६॥

My Atmanivedi devotees shall worship Shaligram (idol of Lord Vishnu) or the idol of Lord Shree Krishna made from stone or metal, with offerings of sandalwood, flowers, fruits, etc., which are available at the time according to their capacity. They shall then recite the eight syllabled holy mantra of Lord Shree Krishna. (56)



स्तोत्रादेरथ कृष्णस्य पाठः कार्यः स्वशक्तिः ।  
तथाऽनधीतगीर्वाणैः कार्यं तत्रामकीर्तनम् ॥५७॥

अने ते पछी श्रीकृष्ण भगवानना जे स्तोत्र अथवा ग्रंथ तेनो जे पाठ, ते पोताना सामर्थ्य प्रमाणे करवो; अने जे संस्कृत न भाष्या होय, तेमाणे श्रीकृष्ण भगवाननुं नाम-कीर्तन करवुं ॥५७॥

उसके बाद अपनी शक्तिके अनुसार श्रीकृष्ण भगवान्‌के स्तोत्र अथवा ग्रंथका पाठ करें और जो संस्कृत नहीं पढ़ें हैं वे श्रीकृष्ण भगवान्‌का नाम कीर्तन करें ॥५७॥

They shall then read hymns or the religious scriptures about Lord Shree Krishna according to their ability, and those who do not know Sanskrit, shall sing songs in the praise of Lord Shree Krishna and chant His name. (57)



हरेविधाय नैवेद्यं भोज्यं प्रासादिकं ततः ।  
कृष्णसेवापरैः प्रीत्या भवितव्यं च तैः सदा ॥५८॥

अने पछી श्रीकृष्ण भगवानने नैवेद्य करीने पछી ते प्रसादी ऐવुं જે અન્ન તે જમવું; અને તે જે આત્મનિવેદી-વैષ્ણવ તેમણે, સર્વ કાળને વિષે પ્રીતિએ કરીને, શ્રીકृષ્ણ ભગવાનની સેવાપરાયણ થવું ॥५८॥

तदनन्दर श्रीकृष्ण भगवान् को नैवेद्य अर्पण करके प्रसादीभूत अन्न का भक्षण करें तथा वे आत्मनिवेदी वैष्णव निरंतर प्रेमपूर्वक भगवान् की सेवा में तत्पर रहें ॥५८॥

They shall offer food to Lord Shree Krishna, and then shall eat this sanctified food as His Prasad. They shall thus always remain in service of Lord Shree Krishna with dedication and supreme love. (58)

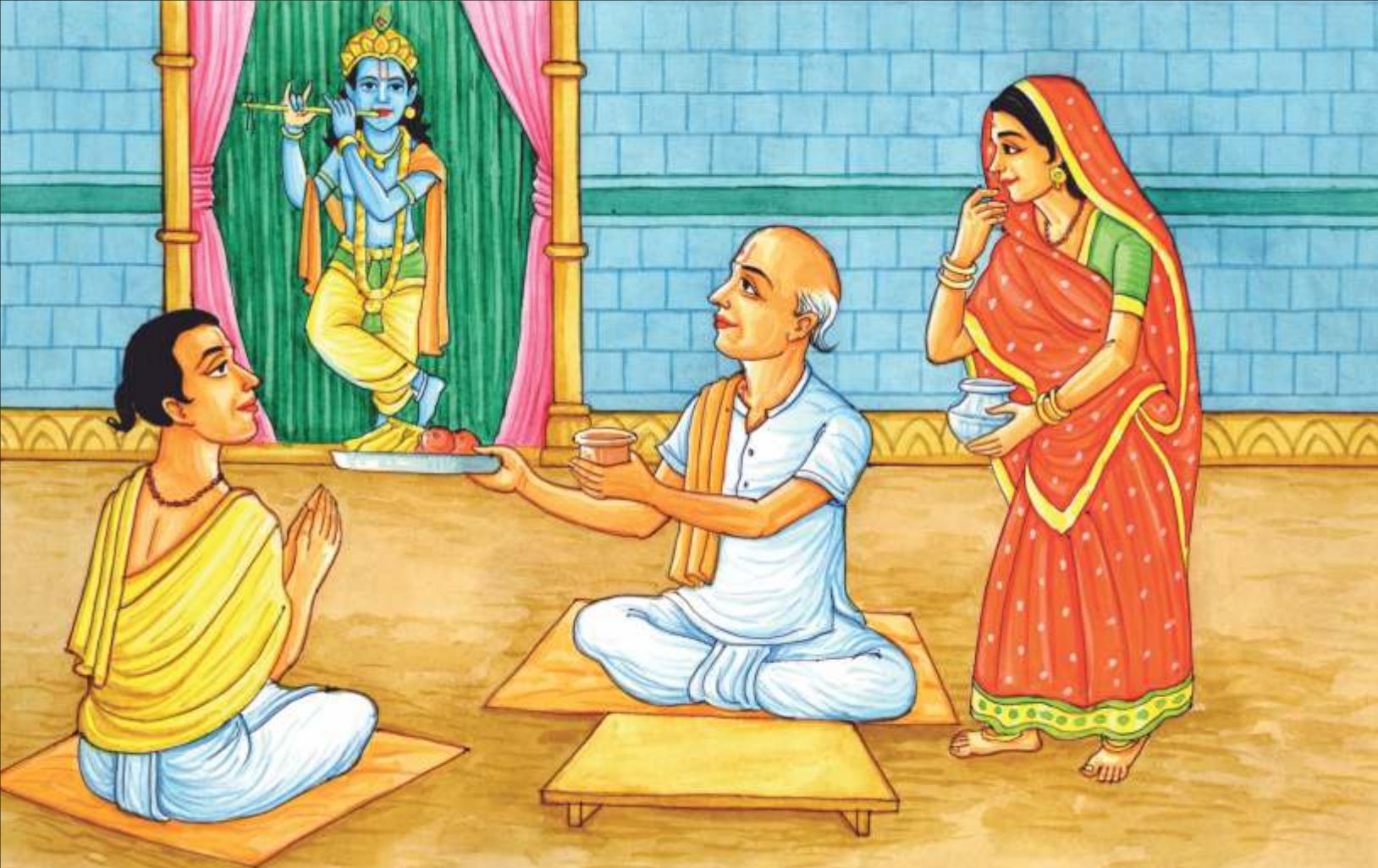


प्रोकतास्ते निर्गुणा भक्ता निर्गुणस्य हर्यतः ।  
 संबन्धात्तल्क्रियाः सर्वा भवन्त्येव हि निर्गुणाः ॥५९॥

अने निर्गुण कहेतां मायाना जे सत्वादिक त्रष्णा गुणा, तेषो रहित ऐवा जे श्रीकृष्ण भगवान्, तेना संबंध थकी ते आत्मनिवेदी भक्तनी जे सर्वे क्रिया, ते निर्गुण थाय छे; ते हेतु माटे ते आत्मनिवेदी भक्त, जे ते निर्गुण कह्या छे. ॥५९॥

निर्गुण अर्थात् माया के सत्वादिक तीन गुणों से रहित ऐसे जो श्रीकृष्ण भगवान्, उसके सम्बन्ध से आत्मनिवेदी भक्तों की सभी क्रियाएं निर्गुण हो जाती हैं। उसी कारण से आत्मनिवेदी भक्त निर्गुण कहे गये हैं ॥५९॥

These Atmanivedi devotees are considered as Nirgun (free from the three qualities of Ma-ya- [illusion]) because all their deeds are purified by their continuous and devotional contact with Lord Shree Krishna who is for ever Nirgun. (59)

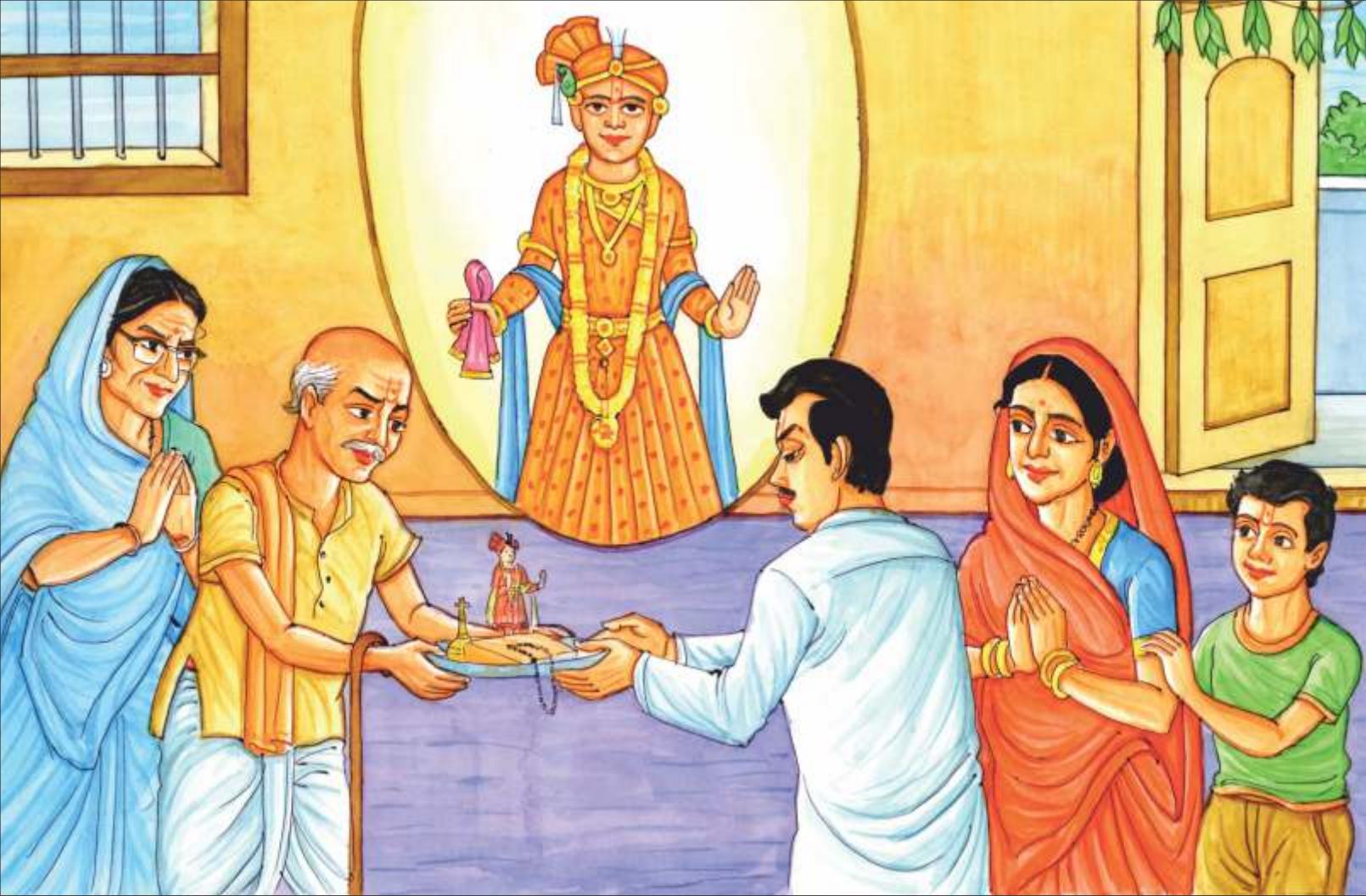


भक्तरेतैस्तु कृष्णायानर्पितं वार्यपि क्वचित् ।  
न पेयं नैव भक्ष्यं च पत्रकन्दफलाद्यपि ॥६०॥

अने ए जे आत्मनिवेदी भक्त, तेमणे श्रीकृष्ण भगवानने अर्पण कर्या विनानुं जण पण  
क्यारेय न पीवुं; अने पत्र, कंद, फलादि जे वस्तु, ते पण श्रीकृष्ण भगवानने अर्पण कर्या विनानुं न  
भावुं ॥६०॥

ऐसे आत्मनिवेदी भक्त श्रीकृष्ण भगवान् को अर्पण किये बिना जल भी कदापि न पीयें और  
श्रीकृष्ण भगवान् को अर्पण किये बिना पत्र, कंद, फलादि चीजों का कदापि भक्षण न करें ॥६०॥

These Atmanivedi devotees shall never drink water or eat leaves, roots, fruits, etc. without first offering them to Lord Shree Krishna. (60)

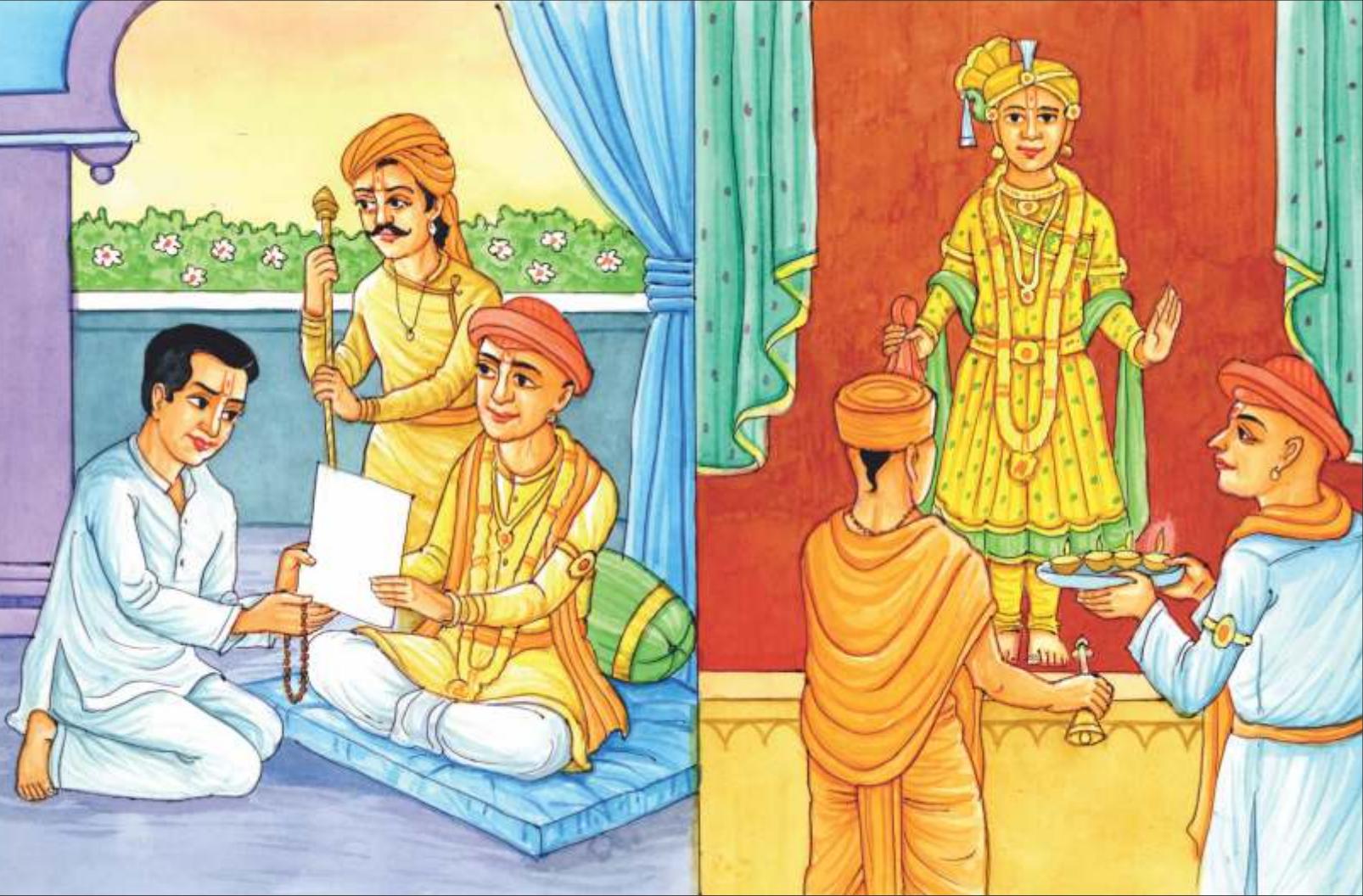


सर्वैरशक्तौ वार्धक्याद्ग्रीयस्यापदाऽथवा ।  
भक्ताय कृष्णमन्यस्मै दत्त्वा धृत्यं यथाबलम् ॥६१॥

अने वणी सर्वे जे अमारा सत्संगी, तेमणे वृद्धपणा थकी अथवा कोई मोटा आपत्काले  
करीने असमर्थपणुं थई गये सते पोते सेववानुं जे श्रीकृष्णनुं स्वरूप, ते बीजा भक्तने आपीने,  
पोते पोताना सामर्थ्य प्रमाणे वर्तवु ॥६१॥

हमारें आश्रित सभी सत्संगीजन जब वृद्धावस्था से अथवा किसी भारी आपत्काल से असमर्थ हो  
जायें तब स्वयं से सेव्यमान जो श्रीकृष्ण का स्वरूप है, उसे अन्य भक्त को सौंपकर स्वयं अपनी शक्ति के  
अनुसार आचरण करें ॥६१॥

My disciples who have become disabled by old age or by some adversity, shall give their idols of Lord Shree Krishna which they have worshipped, to some other disciples. The disabled disciples shall thereafter serve God to the best of their ability. (61)

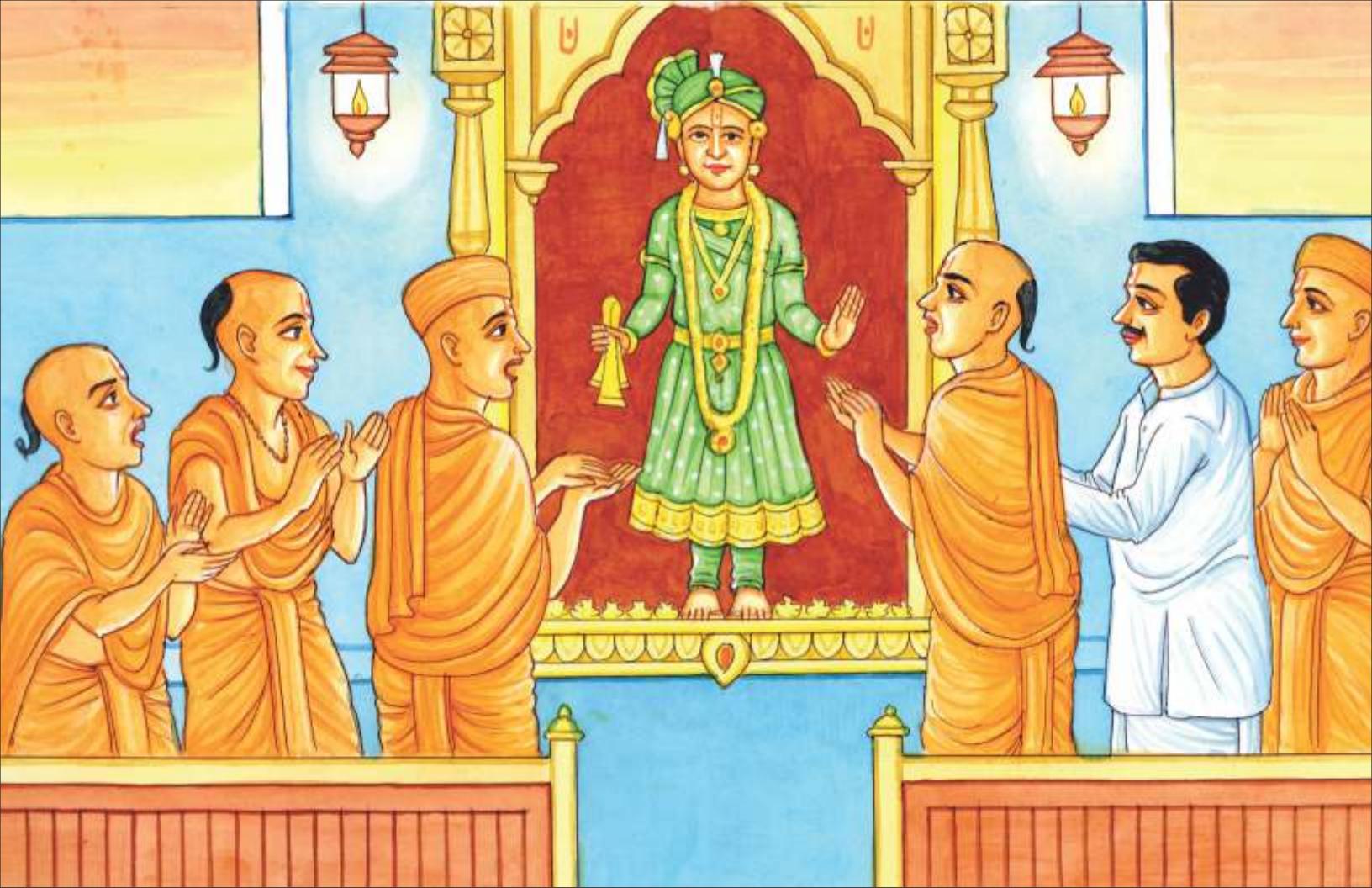


आचार्येणैव दत्तं यद्यच्च तेन प्रतिष्ठितम् ।  
कृष्णस्वरूपं तत्सेव्यं वन्द्यमेवेतरत्तु यत् ॥६२॥

अने जे श्रीकृष्णनुं स्वरूप, पोताने सेववाने अर्थे धर्मवंशना जे आचार्य, तेमણે જ આપ્યું હોય અથવા તે આચાર્ય જે સ્વરूપની પ્રતિષ્ઠા કરી હોય, તે જ સ્વરूપને સેવવું; અને તે વિના બીજું જે શ્રીકृષ્ણનું સ્વરूપ, તે તો નમસ્કાર કરવા યોગ્ય છે, પણ સેવવા યોગ્ય નથી. ॥६२॥

और धर्मवंश के आचार्य ने ही श्रीकृष्ण का जो स्वरूप सेवा के लिए दिया हो अथवा उस आचार्य से जिस स्वरूप की प्रतिष्ठा की हो उसी स्वरूप की सेवा करें, इससे अतिरिक्त जो भी श्रीकृष्ण के स्वरूप हैं, वे केवल नमस्कार करने योग्य हैं, परंतु सेवा करने योग्य नहीं है ॥६२॥

They shall worship only those idols of Lord Shree Krishna which have been given to them by the Acharya of Dharmadev descent or installed by him. Other idols shall be respectfully bowed to, but not worshipped. (62)

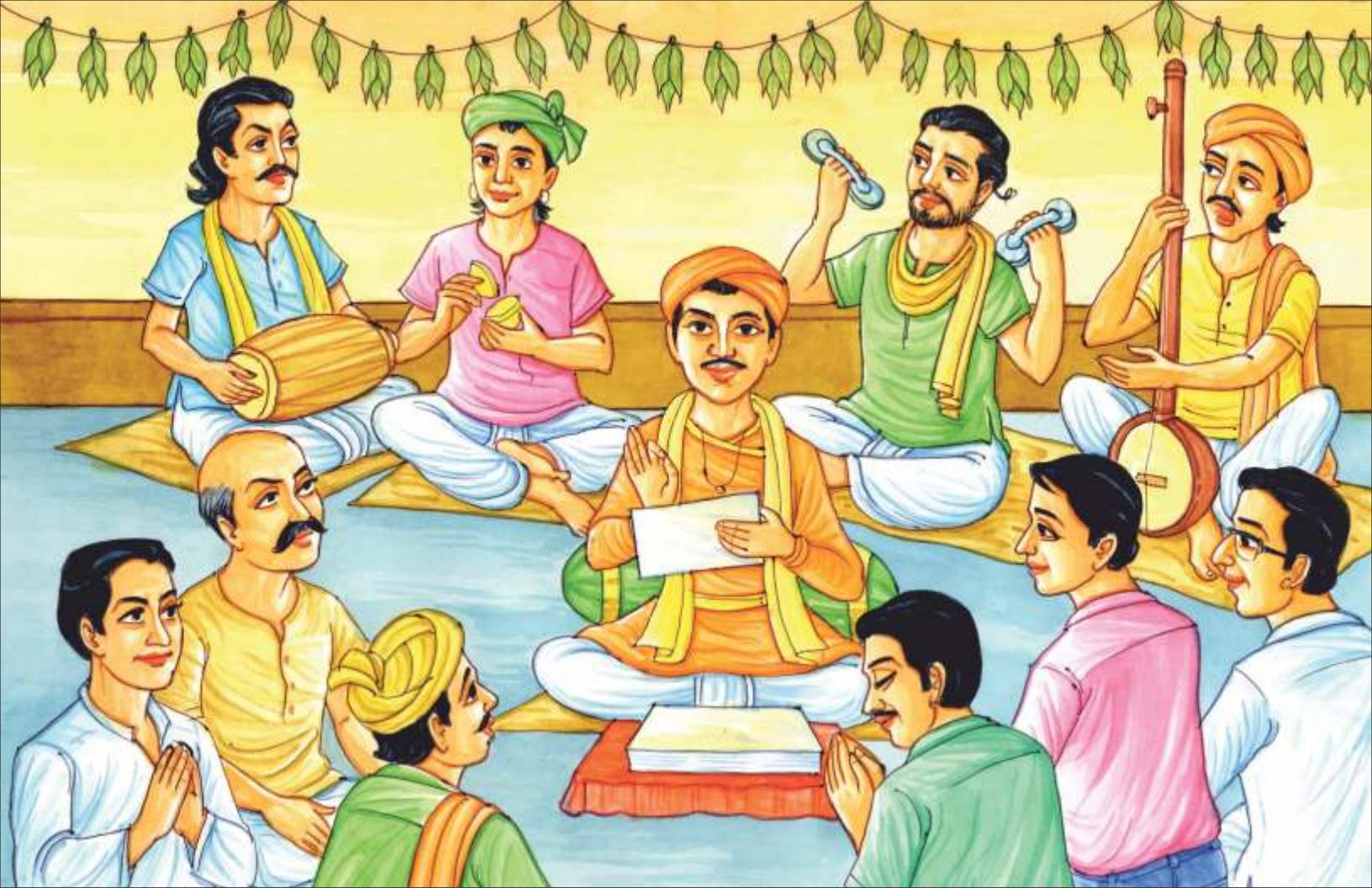


भगवन्मन्दिरं सर्वैः सायं गन्तव्यमन्वहम् ।  
 नामसङ्कीर्तनं कार्यं तत्रोच्चैः राधिकापतेः ॥६३॥

अने अमारा जे सर्वे सत्संगी, तेमाणे नित्य प्रत्ये सायंकाणे भगवानना मंदिर प्रत्ये जवुं, अने  
 ते मंदिरने विशे श्री राधिकाज्ञना पति ऐवा जे श्रीकृष्ण भगवान तेना नामनुं उच्य स्वरे करीने कीर्तन  
 करवुं ॥६३॥

हमारे सभी सत्संगीजन हमेशा सायंकाल भगवान्‌के मंदिर में जायँ और वहां (मंदिर में)  
 श्रीराधिकापति भगवान श्रीकृष्ण के नामों का उच्च स्वर से कीर्तन करें ॥६३॥

All my disciples shall go to the temple everyday in the evening and  
 there they shall sing loudly, Bhajans (hymns) in the praise of Lord Shree  
 Krishna. (63)



कार्यास्तस्य कथावार्ता: श्रव्याश्च परमादरात् ।  
वादित्रसहितं कार्यं कृष्णाकीर्तनमुत्सवे ॥६४॥

अने ते श्रीकृष्णनी जे कथा-वार्ता ते परम आदर थकी करवी ने सांभणवी; अने उत्सवने दिवसे वाजिंत्रे सहित श्रीकृष्णनां कीर्तन करवा. ॥६४॥

और परम आदर से श्रीकृष्ण भगवान्‌की कथा वार्ता करें तथा सुनें। उत्सव के दिन विविध वाद्योंके साथ श्रीकृष्ण भगवान्‌का कीर्तन करें। ॥६४॥

They shall read and listen to, with deep reverence, the narrations from the life of Lord Shree Krishna, and shall celebrate all festivals with His songs, in accompaniment of musical instruments. (64)

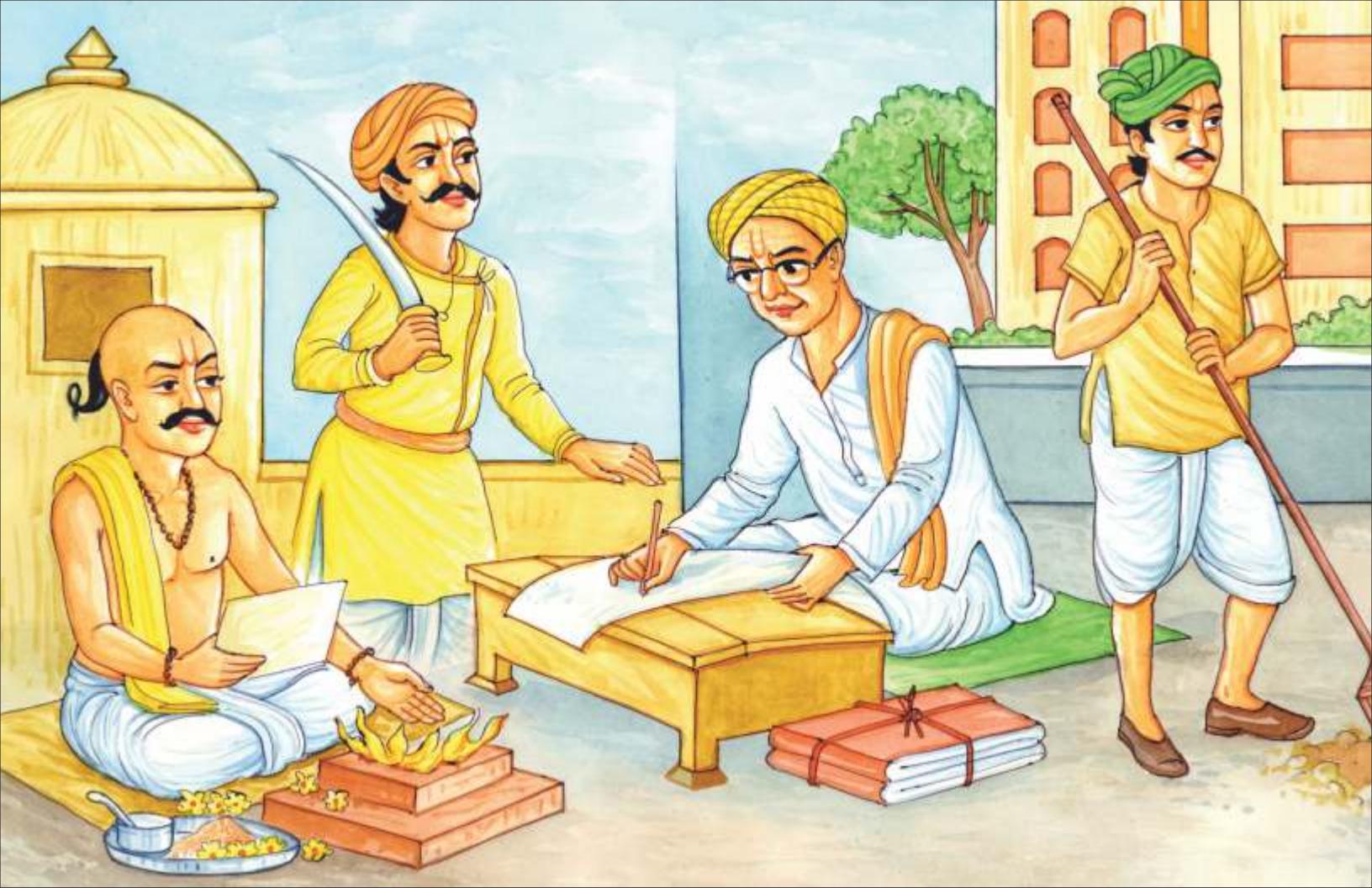


प्रत्यहं कार्यमित्थं हि सर्वैरपि मदाश्रितैः ।  
संस्कृतप्राकृतग्रन्थाभ्यासश्चापि यथामति ॥६५॥

अने अमारा आश्रित जे सर्वे सत्संगी तेमણે જે પ્રકારે પૂર્વે કહ્યું; એ પ્રકારે કરીને જ નિત્ય પ્રત્યે કરવું; અને સંસ્કૃત અને પ્રાકૃત એવા જે સદ્ગ્રંથ, તેમનો અભ્યાસ પણ પોતાની બુદ્ધિને અનુસારે કરવો. ॥૬૫॥

हमारे आश्रित सभी सत्संगी पूर्व कथनानुसार ही प्रतिदिन आचरण करें और अपनी बुद्धि के अनुसार संस्कृत एवं प्राकृत सद्ग्रन्थोंका अभ्यास भी करें ॥६५॥

All my disciples shall always behave as mentioned above and shall also study the religious scriptures in Sanskrit and Vernacular to the best of their abilities. (65)



यादृशौर्यो गुणैर्युक्तस्तादृशे स तु कर्मणि ।  
योजनीयो विचार्यैव नान्यथा तु कदाचन ॥६६॥

अने जे मनुष्य, जेवा गुणे करीने युक्त होय, ते मनुष्यने तेवा कार्यने विषे विचारीने जप्रेरवो,  
पाश जे कार्यने विषे जे योग्य न होय ते कार्यने विषे, तेने क्यारेय न प्रेरवो. ॥६६॥

जो मनुष्य जिन गुणों से युक्त हों उस मनुष्यको विचार करके वैसे ही कार्य में प्रेरित करें परन्तु उससे  
विपरीत जिस कार्य के लिए जो योग्य न हो उस कार्य के लिए उसे कदापि प्रेरित न करें ॥६६॥

A person should be assigned work only after careful consideration of  
his suitability, but not otherwise. (66)



अन्नवस्त्रादिभिः सर्वे स्वकीयाः परिचारकाः ।  
सम्भावनीयाः सततं यथायोग्यं यथाधनम् ॥६७॥

अने पोताना जे सेवक होय, ते सर्वनी पोताना सामर्थ्य प्रमाणे अन्न-वस्त्रादिके करीने  
यथायोग्य संभावना निरंतर राखवी. ॥६७॥

जो अपने सेवक हों उन सभी की निरन्तर अपने सामर्थ्यानुसार अन्न वस्त्रादि द्वारा यथायोग्य  
संभावना करें ॥६७॥

My disciples shall always take care of their servants with regard to food  
and clothes to the best of their abilities. (67)



यादृगुणो यः पुरुषस्तादृशा वचनेन सः ।  
 देशकालानुसारेण भाषणीयो न चान्यथा ॥६८॥

अने जे पुरुष जेवा गुणवाणो होय, ते पुरुषने तेवा वयने करीने देशकालानुसारे यथायोग्य  
 बोलावવो, पण एथी बीજ रीतेन बोलाववो ॥६८॥

जो पुरुष जिन गुणों से युक्त हो, उसे वैसे ही वचनों से देशकालानुसार यथायोग्य  
 संबोधित करें परन्तु अन्यथा संबोधित न करें ॥६८॥

A person should be addressed according to his status, taking into  
 consideration the time and place, but not otherwise. (68)

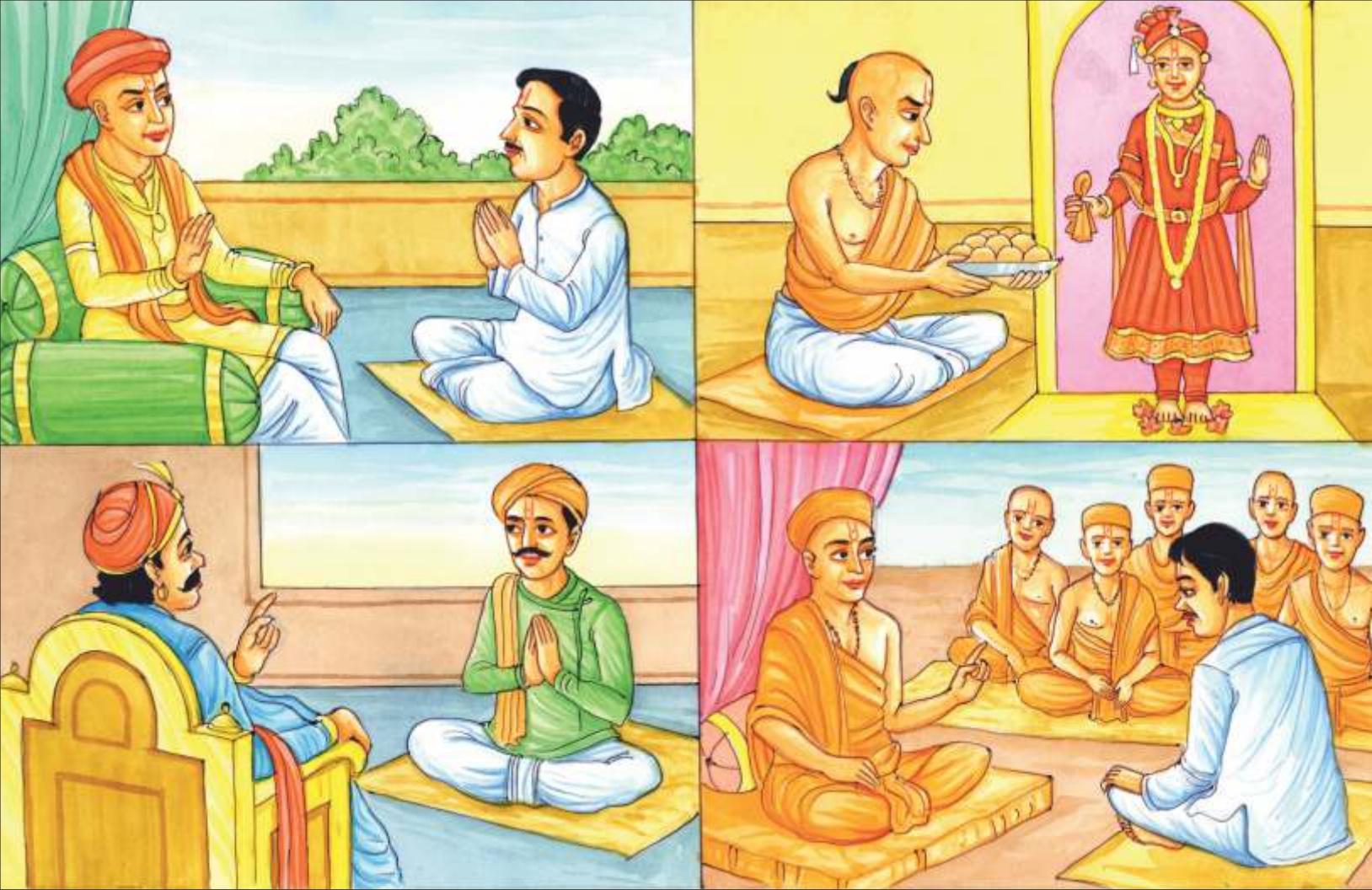


गुरुभूपालवर्षिष्ठत्यागिविद्वत्पस्त्वनाम् ।  
अभ्युत्थानादिना कार्यः सम्मानो विनयान्वितैः ॥६९॥

अने विनये करीने युक्त ऐवा जे अमारा आश्रित सत्संगी-तेमाणे गुरु, राजा, अतिवृद्ध, त्यागी, विद्वान् अने तपस्वी, ए छ जषा आवे, त्यारे सन्मुख उठवुं तथा आसन आपवुं तथा मधुरे वयने बोलाववुं, ईत्यादिक कियाए करीने अेमनुं सन्मान करवुं ॥६९॥

विनयवान हमारे आश्रित सत्संगी जन, जब गुरु, राजा, अतिवृद्ध, त्यागी, विद्वान् तथा तपस्वी ये छ: व्यक्ति पधारे तब सन्मुख उठना तथा आसन अर्पण करना तथा मधुर वाणी से संबोधित करना इत्यादि सभी प्रकार से उनका सन्मान करें ॥६९॥

My courteous disciples shall, on the arrival of a guru, a ruler, a very old person, a person who has renounced the material world, a scholar and an ascetic, accord a warm welcome by rising up from their seat, bowing down, offering a seat and saying pleasant words. (69)



नोरौ कृत्वा पादमेकं गुरुदेवनृपान्तिके ।  
उपवेश्यं सभायां च जानू बध्वा न वाससा ॥७०॥

अने गुरुदेव ने राजा - ऐमनी सभीपे तथा सभाने विषे पग उपर पग यडावीने न बेसवुं  
तथा वस्त्रे करीने ढीचणने बांधीने न बेसवुं ॥७०॥

गुरु, देव तथा राजाके आगे तथा सभा में पैर पर पैर चढ़ाकर न बैठें और वस्त्र द्वार  
घुटनोंको बाँधकर भी न बैठें ॥७०॥

One shall not sit with one leg over the other, or with knees bound with a cloth strap, in the presence of a guru, a deity or a king, or in a congregation.  
(70)



विवादो नैव कर्तव्यः स्वाचार्येण सह क्वचित् ।  
पूज्योऽन्नधनवस्त्राद्यैर्यथाशक्ति स चाखिलैः ॥७१॥

अने अमारा आश्रित जे सर्वे सत्संगी तेमाणे पोताना आचार्य संगाथे क्यारेय पण विवाद न करवो. अने पोताना सामर्थ्य प्रमाणे अन्न, धन, वस्त्रादिके करीने ते पोताना आचार्यने पूजवा.  
॥७१॥

हमारे आश्रित सभी सत्संगीजन अपने आचार्य के साथ कदापि विवाद न करें और अपनी शक्ति के अनुसार अन्न, धन वस्त्रादिक द्वारा उनकी पूजा करें ॥७१॥

My disciple shall never enter into arguments with their Acharya, but honour and serve him by offering food, money, clothing, etc., according to their abilities. (71)

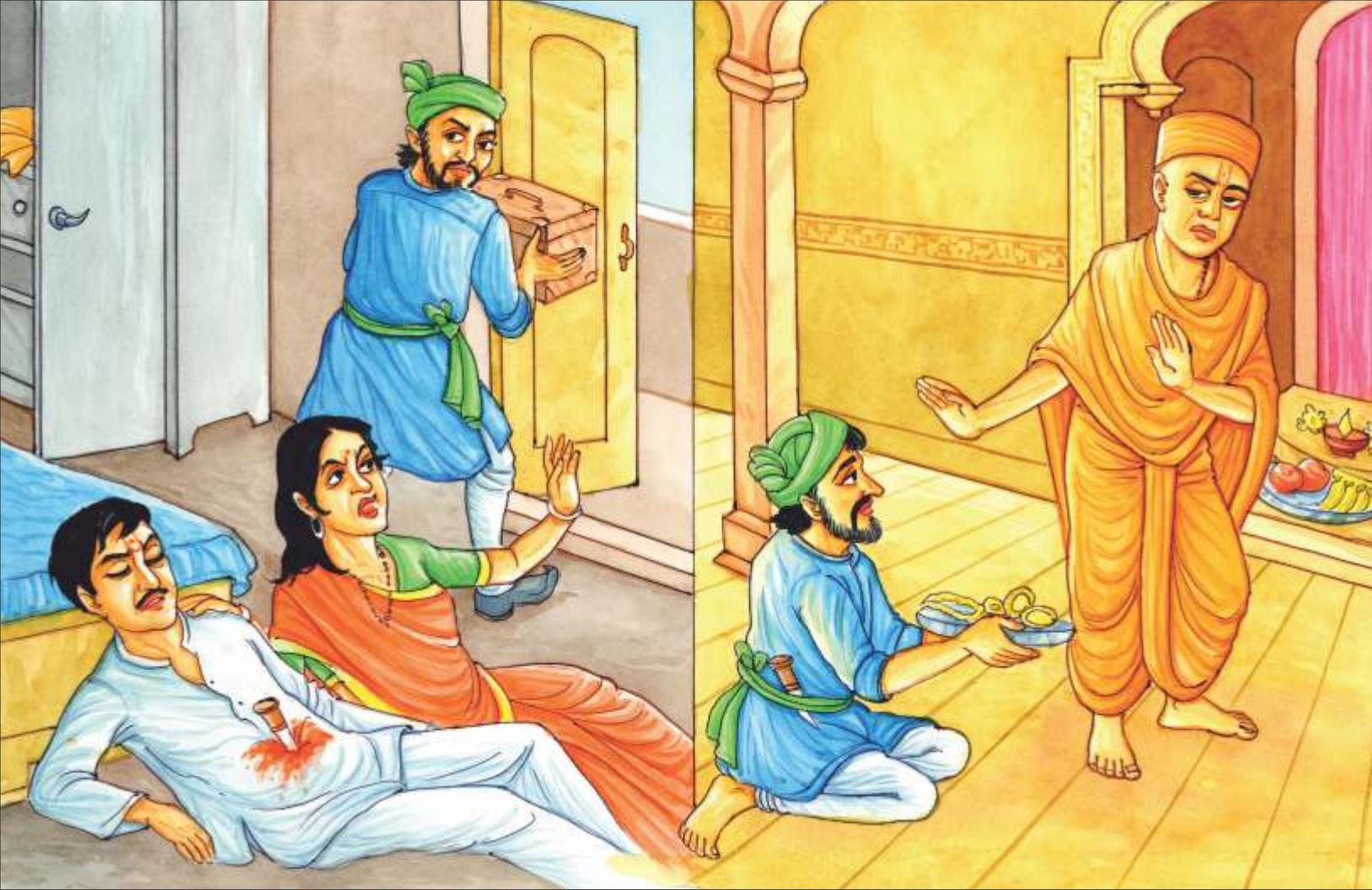


तमायान्तं निशम्याशु प्रत्युद्गतव्यमादरात् ।  
तस्मिन् यात्यनुगम्यं च ग्रामान्तावधि मच्छैः ॥७२॥

अमारा जे आश्रित जन, तेमणे पोताना आचार्यने आवता सांभणीने, आदर थकी तत्काण सन्मुख जवुं, अने ते आचार्य पोताना गामथी पाइ। पधारे, त्यारे गामनी भागोण सुधी वणाववा जवुं ॥७२॥

हमारे आश्रित जो जन हैं वे अपने आचार्य का आगमन सुनकर आदर से उनके सन्मुख जायें और वे जब गाँव से वापस पथारें तब गाँव की सीमा तक विदाई देने जायें ॥७२॥

On hearing the news of the arrival of the Acharya, My disciples shall go forthwith to the outskirts of the village or town to welcome him with honour and respect, and on his departure shall accompany him up to the outskirts of the village or town to bid him farewell. (72)



अपि भूरिफलं कर्म धर्मपेतं भवेद्यदि ।  
आचार्यं तर्हि तत्रैव धर्मः सर्वार्थदोऽस्ति हि ॥७३॥

अने धणुंक छे फળ जेने विषे अवुं पण जे कर्म, ते जो धर्म रहित होय, तो तेनुं आचरण न ज करवुं, केम जे धर्म छे, ते ज सर्व पुरुषार्थनो आपनारो छे; माटे कोई कफलना लोभे करीने धर्मनो त्याग न करवो. ॥७३॥

अधिक फलदायीं कार्य भी यदि धर्मरहित हो तो ( उसको ) कदापि न करें क्योंकि धर्म ही सभी पुरुषार्थों को देनेवाले हैं। अतः किसी फलप्राप्ति के लोभ से धर्म का त्याग न करें ॥७३॥

One shall never undertake any activity which is devoid of Dharma, irrespective of its benefits, as Dharma alone can fulfill all human aspirations, therefore one shall not give up Dharma in the hope of some benefits. (73)



पूर्वमहाद्विरपि यदधर्माचरणं क्वचित् ।  
कृतं स्यात्ततु न ग्राहं ग्राह्यो धर्मस्तु तत्कृतः ॥७४॥

अने पूर्वे थया जे मोटा पुरुष तेमाणे पशा जे क्यारेक अधर्माचरण कर्यु होय, तो तेनुं ग्रहण न करवुं; अने तेमाणे जे धर्माचरण कर्यु होय तो तेनुं ग्रहण करवुं। ॥७४॥

पूर्वकालीन महापुरुषों ने भी यदि कभी अधर्म का आचरण किया हो तो उसको ग्रहण न करें किन्तु उन्होंने जो धर्माचरण किया हो उसी को ग्रहण करें। ॥७४॥

One shall never adopt any of the unethical deeds of the great people of the past but shall follow their ethical deeds only. (74)



गुह्यवार्ता तु कस्यापि प्रकाश्या नैव कुत्रचित् ।  
समदृष्ट्या न कार्यश्च यथार्हार्चाव्यतिक्रमः ॥७५॥

अने कोई नी पण जे गुह्यवार्ता, ते तो कोई ठेकाणे पण प्रकाश करवी ज नहि; अने जे ज्ञवनुं जेवी रीते सन्मान करवुं घटतुं होय, तेनुं तेवी ज रीते सन्मान करवुं, पण समदृष्टिए करीने, ए मर्यादानुं उल्लंधन करवुं नहि. ॥७५॥

किसी की भी गोपनीय बात को कहीं पर भी प्रकाशित न करें और जिसका जैसे सन्मान करना उचित हो उसका वैसे ही सन्मान करें परन्तु समदृष्टि से इस मर्यादा का उल्लंधन न करें ॥७५॥

One shall never disclose the secrets of others to anyone else and shall give due respect to deserving persons, but under no circumstances shall the bounds of courtesy be violated for observing a false decorum of equality. (75)



विशेषनियमो धार्यश्चातुर्मास्येऽखिलैरपि ।  
एकस्मिन् श्रावणे मासि स त्वशक्तैस्तु मानवैः ॥७६॥

अने अमारा जे सर्वे सत्संगी तेमણે, ચातुर्मासને વિષે વિશેષ નિયમ ધારવો; અને જે મનુષ્ય અસમર્થ હોય, તેમણે તો એક શ્રાવણ માસને વિષે વિશેષ નિયમ ધારવો. ॥૭૬॥

हमारे सभी सत्संगी जन चातुर्मास में विशेष नियम धारण करें और जो असमर्थ हों वे केवल श्रावण मास में ही विशेष नियम धारण करें ॥७६॥

All My disciples shall perform additional religious duties during the four months of monsoon and those who are incapable shall perform them at least during the month of Shravan. (76)



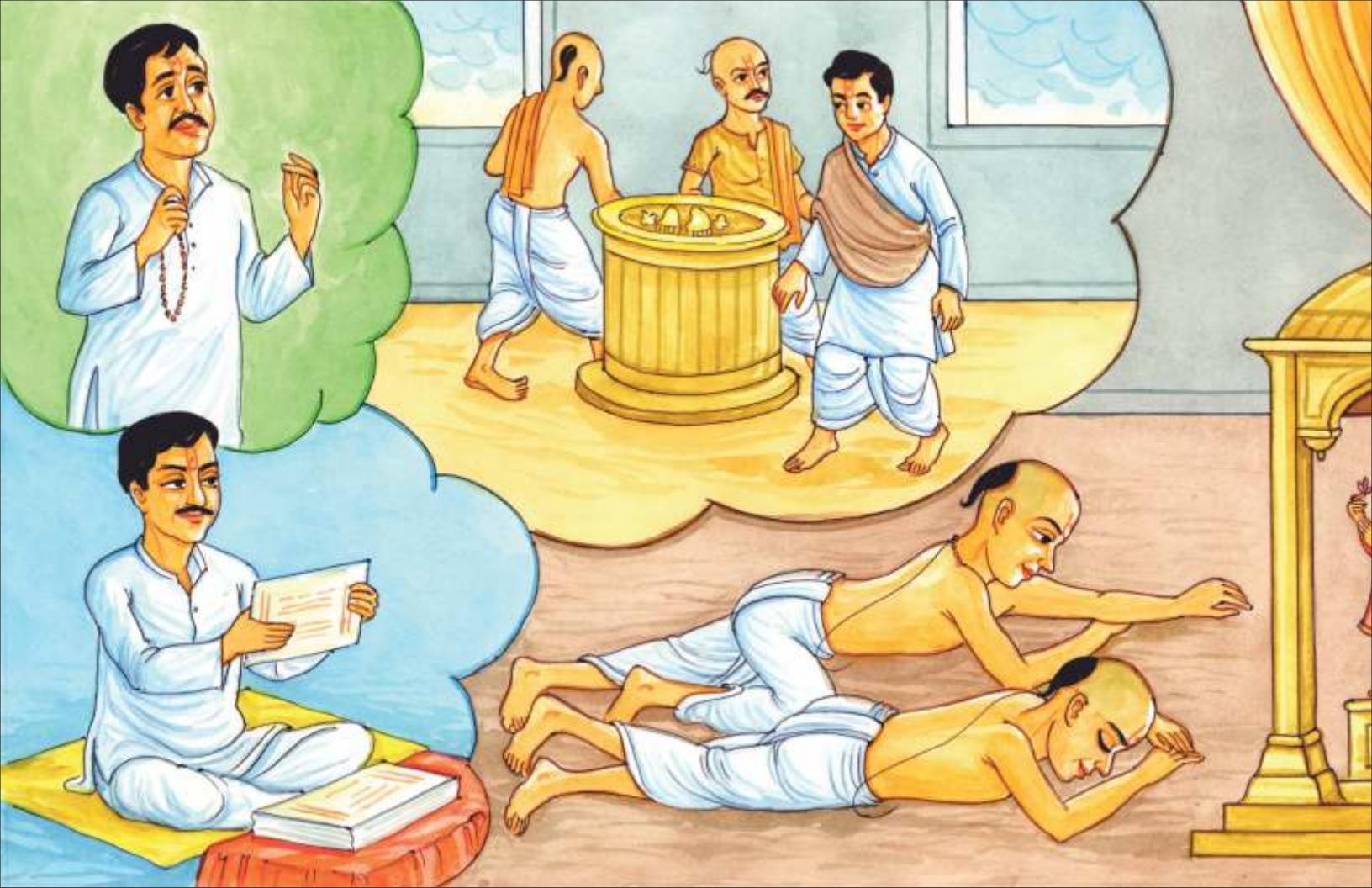
विष्णोः कथायाः श्रवणं वाचनं गुणकीर्तनम् ।  
महापूजा मन्त्रजपः स्तोत्रपाठः प्रदक्षिणाः ॥७७॥

अने ते विशेष नियम ते क्या, तो भगवाननी कथानुं श्रवण करवुं, तथा कथा वांचवी तथा भगवानना गुणानुं कीर्तन करवुं, तथा पंचामृत स्नाने करीने भगवाननी महापूजा करवी, तथा भगवानना मंत्रनो जप करवो, तथा स्तोत्रनो पाठ करवो तथा भगवानने प्रदक्षिणाओ करवी; ॥७७॥

वे विशेष नियम कौन से हैं ? तो भगवान्की कथाका श्रवण करना, कथा-वांचना, भगवान् के गुणोंका कीर्तन करना, पंचामृत स्नानादि द्वारा भगवान् की महापूजा करना, भगवान्के मंत्रका जप करना, स्तोत्रोंका पाठ करना, भगवान् की प्रदक्षिणा करना ॥७७॥

The following are the best methods of observance of additional religious duties to be adopted and followed :

(1) Listening to religious scriptures. (2) Reading religious scriptures. (3) Songs in praise of His divine qualities. (4) Performing Mahapooja of



साष्टाङ्गप्रणिश्वेति नियमा उत्तमा मताः ।  
एतेष्वेकतमो भक्त्या धारणीयो विशेषतः ॥७८॥

तथा भगवानने साष्टांग नमस्कार करवा, ए जे आठ प्रकारना नियम, ते अમे उत्तम मान्या छे, ते-माटे ए नियममांथी कोई एक नियम, जे ते चोमासाने विषे विशेषपद्धो भक्तिए करीने धारवो ॥७८॥

तथा भगवान्को साष्टांग नमस्कार करना ये आठ प्रकार के नियमों हमने उत्तम माने हैं, इनमें से किसी एक नियम की चातुर्मास में विशेषरूपसे भक्तिपूर्वक धारण करें ॥७८॥

Lord's image by bathing Him with five substances, namely milk, curd, ghee, honey and sugar. (5) Chanting His mantra. (6) Reciting His hymns. (7) Performing Pradakshina (going round the images of God in a clockwise direction). (8) Prostrating before God's images.

I highly value these eight practices, so all My disciples shall observe any one of them devoutly during the period of monsoon. (77-78)



एकादशीनां सर्वासां कर्तव्यं व्रतमादरात् ।  
कृष्णजन्मदिनानां च शिवरात्रेश्च सोत्सवम् ॥७९॥

अने सर्व જે એકાદશીઓ, તેમનું વ્રત જે તે આદર થકી કરવું; તથા શ્રીકૃષ્ણ ભગવાનના જે જન્માષ્મી આદિક જન્માદિવસ, તેમનું વ્રત જે તે આદર થકી કરવું. તથા શિવરાત્રિનું વ્રત જે તે આદર થકી કરવું. અને તે વ્રતના દિવસને વિષે મોટા ઉત્સવ કરવા. ॥૭૯॥

सभी एकादशियों का व्रत तथा श्रीकृष्ण भगवान् के जन्माष्मी आदि जन्मदिनों का व्रत आदરपूर्वक करें, तथा शिवरात्रि का व्रत भी आदरपूर्वक करें और उन व्रतों के दिन बड़े उत्सव मनावें ॥७९॥

They shall observe self-discipline on Ekadashi (the eleventh day of each half of every lunar month), Janmasthami (birthday of Lord Shree Krishna) and birth anniversaries of other deities (Shivratri, etc.); and celebrate them with great reverence and festivity. (79)



उपवासहिने त्याज्या दिवानिंद्रा प्रयत्नतः ।  
उपवासस्तया नश्येन्मैथुनेनेव यन्त्रणाम् ॥८०॥

अने જે દિવસે વ્રતનો ઉપવાસ કર્યો હોય, તે દિવસે અતિશય યત્ને કરીને, દિવસની નિંદ્રાનો ત્યાગ કરવો. કેમ કે, જેમ મૈથુને કરીને મનુષ્યના ઉપવાસનો નાશ થાય છે, તેમજ દિવસની નિંદ્રાએ કરીને, મનુષ્યના ઉપવાસનો નાશ થઈ જાય છે. ॥૮૦॥

जिस दिन व्रत के निमित्त उपवास किया हो उस दिन प्रयत्नपूर्वक दिवस की निंद्रा का त्याग करें, क्योंकि जैसे मैथुन द्वारा मनुष्य के उपवास का भंग होता है वैसे ही दिवस की निंद्रा से मनुष्य के उपवास का नाश होता है ॥८०॥

If one is fasting on the day of self-discipline, one shall make every effort to avoid sleeping during the day, as this nullifies the fast, just as sexual indulgence does. (80)



सर्ववैष्णवराजश्रीवल्लभाचार्यनन्दनः ।  
श्री विङ्गलेशः कृतवान् यं व्रतोत्सवनिर्णयम् ॥८१॥

अने सर्व वैष्णवना राजा ऐवा जे श्रीवल्लभाचार्य तेमना पुत्र जे श्रीविङ्गलनाथजि, ते जे ते  
व्रत अने उत्सवना निर्णयने करता हुता ॥८१॥

और सर्व वैष्णवों में श्रेष्ठ ऐसे जो श्रीवल्लभाचार्यजी, उनके पुत्र श्री विङ्गलनाथजी ने जो व्रत  
एवं उत्सवो का निर्णय किया है ॥८१॥

My disciples shall observe the days of Vrat (self-discipline) and  
festivals, and shall adopt the mode of worship of Lord Shree

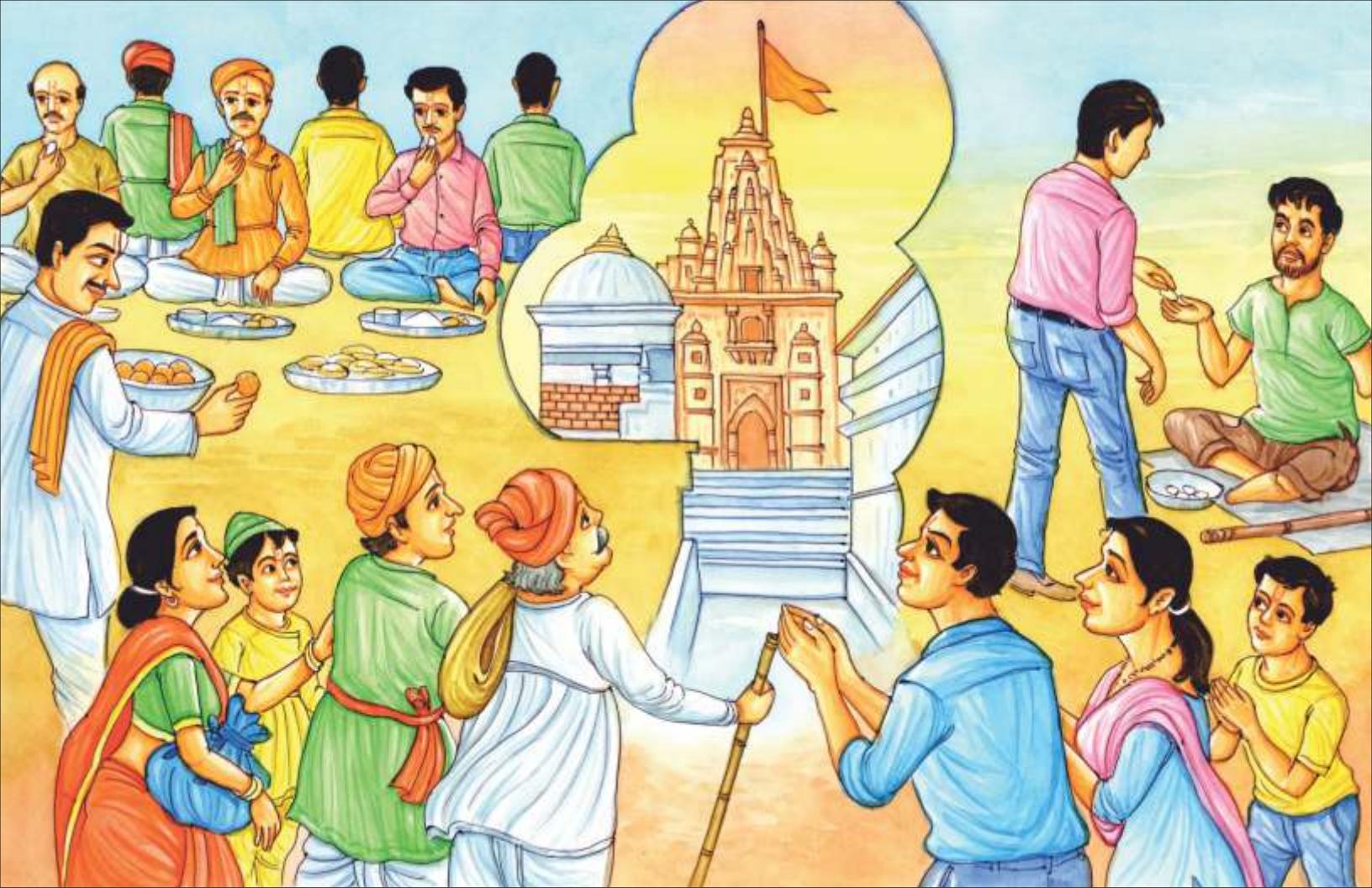


कार्यास्तमनुसृत्यैव सर्व एव व्रतोत्सवाः ।  
सेवारीतिश्च कृष्णस्य ग्राह्या तदुदितैव हि ॥८२॥

अने ते विठ्ठलनाथज्ञाने कर्यो जे निर्णय, तेने ज अनुसरीने सर्वे व्रतने उपवास करवा; अने ते विठ्ठलनाथज्ञाने कही जे श्रीकृष्णनी सेवा रीति तेनुं ज ग्रहण करवुं ॥८२॥

उसी के अनुसार ही सभी व्रत एवं उत्सव मनाये जाय और उन्होंने श्रीकृष्ण की जो सेवारीति बताई हैं उसी को ही ग्रहण किया जाय ॥८२॥

Krishna, as prescribed and expounded by Shree Vithalnathji, the son of Vallabhacharya, a king among the Vaishnavas. (81-82)



कर्तव्या द्वारिकामुख्यतीर्थयात्रा यथाविधि ।  
 सर्वैरपि यथाशक्ति भाव्यं दीनेषु वत्सलैः ॥८३॥

अने ते सर्वे जे अमारा आश्रित - तेमણे, द्वारिका आदिक जे तीर्थ, तेमनी यात्रा जे ते पोताना सामर्थ्य प्रमाणे, यथाविधिए करीने करवी. अने वणी पोताना सामर्थ्य प्रमाणे, दीनजनने विधे द्यावान थવुं. ॥८३॥

हमारे सभी आश्रिति जन द्वारिका आदि तीर्थों की यात्रा अपने सामर्थ्यानुसार यथाविधि करें तथा अपनी शक्ति के अनुसार दीन जनों के प्रति द्यावान बनें ॥८३॥

All My disciples shall make a pilgrimage with due rites, to the holy places like Dwarika, and shall always be charitable and compassionate towards the poor, all according to their resources. (83)

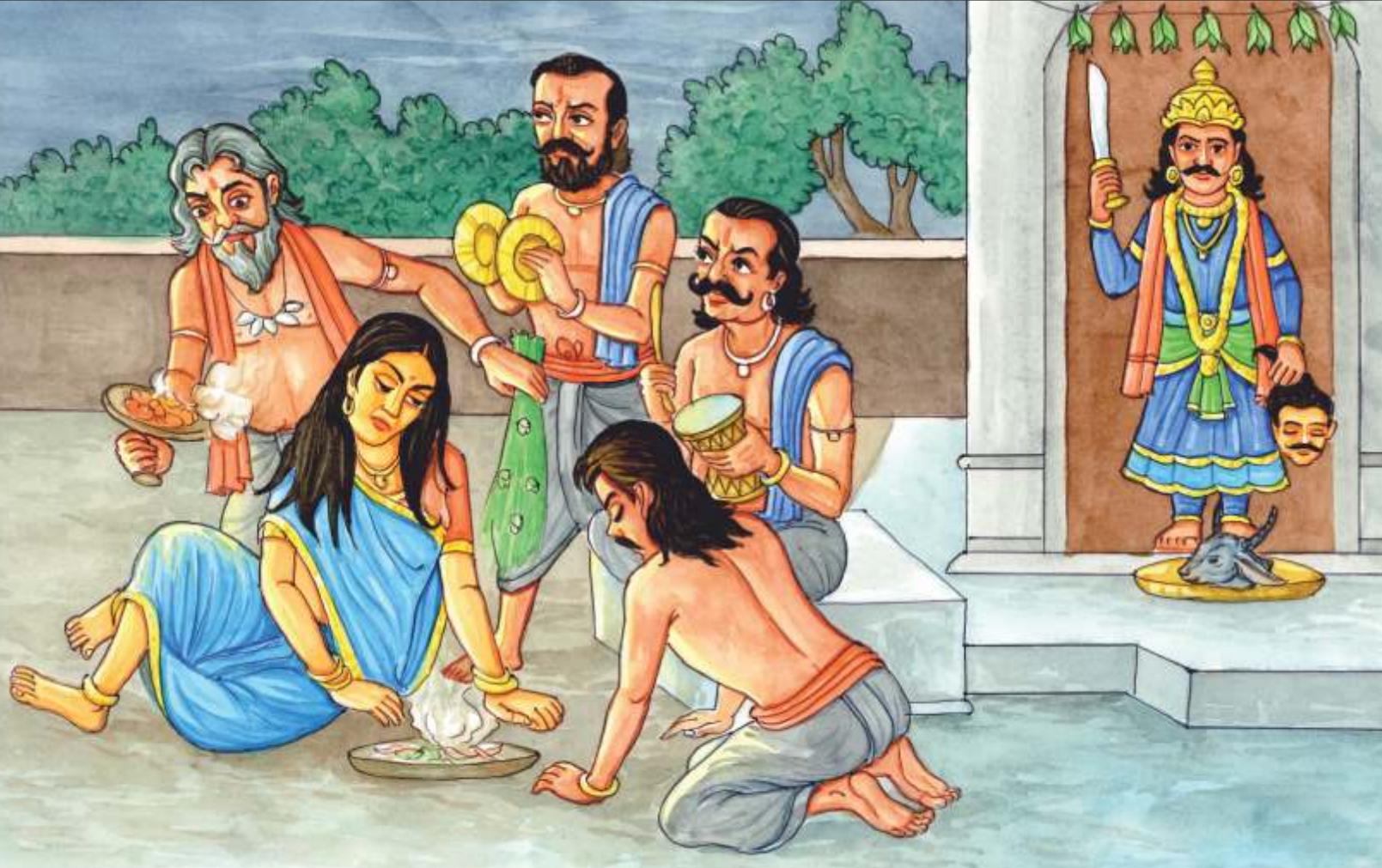


विष्णुः शिवो गणपतिः पार्वती च दिवाकरः ।  
एताः पूज्यतया मान्या देवताः पञ्च मामकैः ॥८४॥

अने अमारा जे आश्रित-तेमणे विष्णु, शिव, गणपति, पार्वती अने सूर्य; ए पांच देव, जे ते  
पूज्यपणे करीने मानवा ॥८४॥

हमारे सभी आश्रित जन, विष्णु, शिव, गणपति, पार्वती तथा सूर्य इन पांचो देवों को  
पूज्यभाव से मानें ॥८४॥

My disciples shall reverently respect the five deities namely Vishnu, Shiv, Ganapati and the Sun. (84)



भूताद्युपद्रवे क्वापि वर्म नारायणात्मकम् ।  
 जप्यं च हनुमन्मन्त्रो जप्यो न क्षुद्रदैवतः ॥८५॥

अने जो क्यारेक भूत-प्रेतादिकनो उपद्रव थाय, त्यारे तो नारायणकवचनो जप करवो अथवा  
 हनुमानना मंत्रनो जप करवो; पाण ए विना बीजा कोई शुद्रदेवना स्तोत्र अने मंत्रनो जप न करवो.  
 ॥८५॥

यदि कभी भूत प्रेतादि का उपद्रव हो तो नारायणकवच का जप करें अथवा हनुमानजी के मंत्र का  
 जप करें परन्तु इनके सिवा अन्य किसी भी क्षुद्र देवता के स्तोत्र या मंत्र का जप न करें ॥८५॥

In the event of afflictions caused by any evil spirits, they shall chant the Strotra of “Narayan Kavacham” or “Hanuman Mantra” but shall never chant the Strotra or Mantras of any other deities. (85)

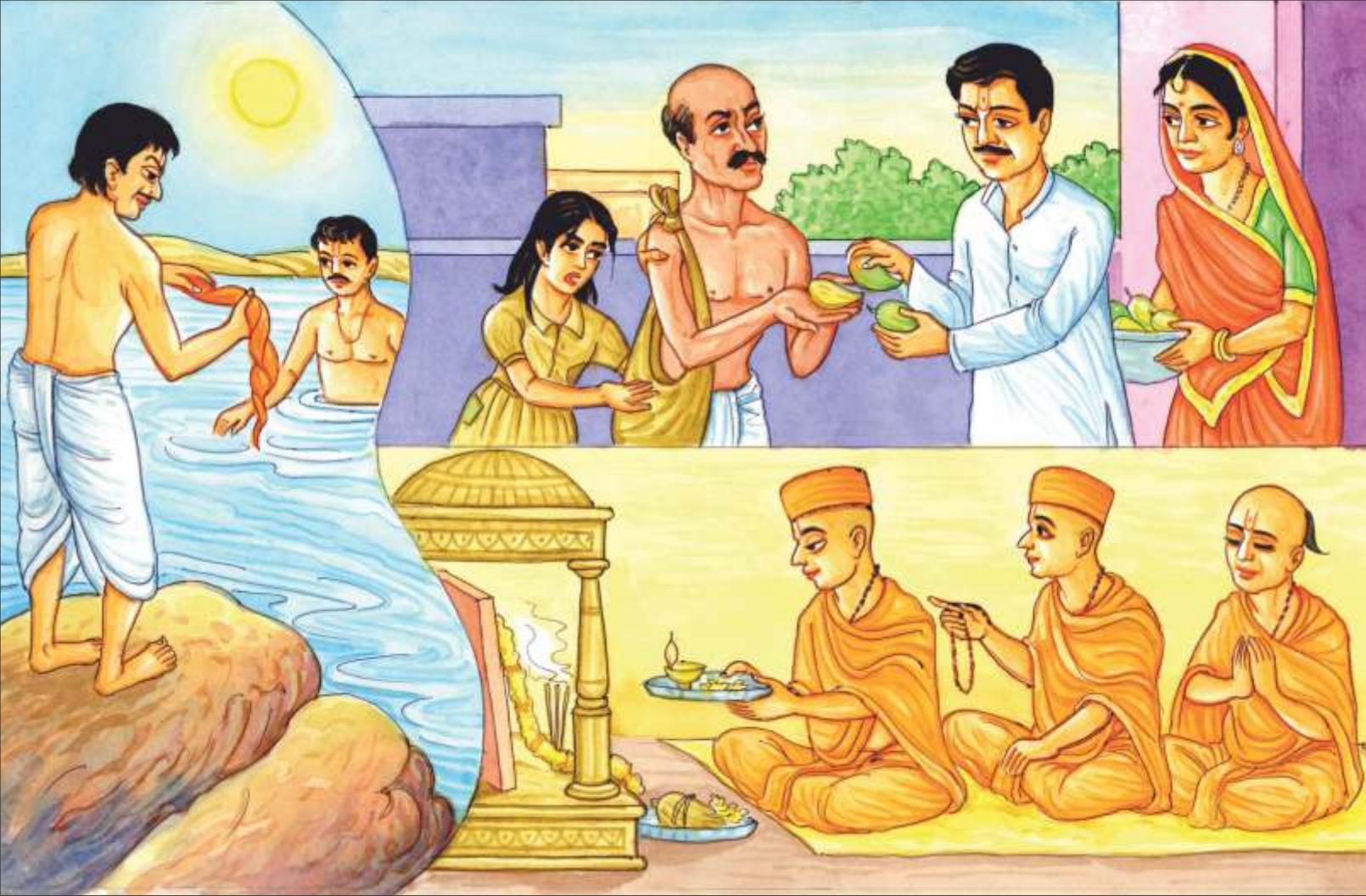


रवेरिन्द्रोश्चोपरागे जायमानेऽपराः क्रियाः ।  
हित्वाशु शुचिभिः सर्वैः कार्यैः कृष्णमनोरपि ॥८६॥

अने सूर्यनुं ने चंद्रमानुं ग्रहण थये सते अमारा जे सर्व सत्संगी, तेमણે બીજી સર્વ ક્રિયાનો તત્કાળ ત્યાગ કરીને, પવિત્ર થઈને, શ્રીકૃષ્ણ ભગવાનના મંત્રનો જપ કરવો. ॥८६॥

सूर्य एवं चन्द्रका ग्रहण लगने पर हमारे सभी सत्संगी जन अन्य सभी क्रियाओं को तत्काल છोड़कर पवित्र होकर श्रीकृष्ण भगवान्‌के मन्त्रका जप करें ॥८६॥

During an eclipse of the Sun or the Moon, all My disciples shall immediately suspend all work, and after purifying themselves shall chant the Mantra of Lord Shree Krishna. (86)

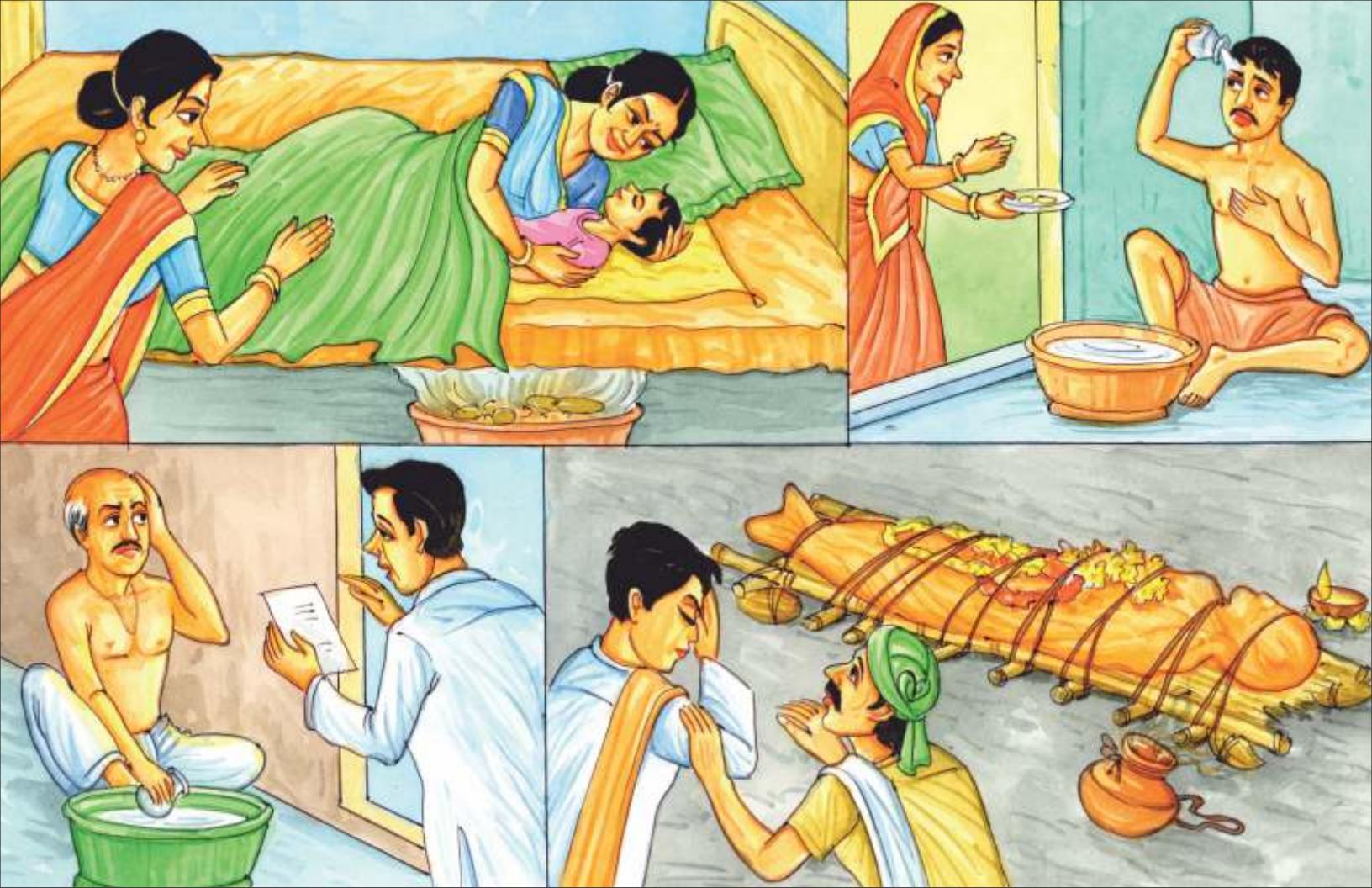


जातायामथ तन्मुक्तौ कृत्वा स्नानं सचेलकम् ।  
देयं दानं गृहिजनैः शक्त्याऽन्यैस्त्वर्च्य ईश्वरः ॥८७॥

अने ते ग्रहण मूर्कार्थ रह्या पधी, वस्त्र सहित स्नान करीने, जे अमारा गृहस्थ सत्संगी होय  
तेमाणे, पोताना सामर्थ्य प्रमाणे दान करवुं, अने जे त्यागी होय, तेमाणे भगवाननी पूजा करवी.  
॥८७॥

और ग्रहण-मोक्ष होने पर वस्त्र सहित स्नान करके जो हमारे गृहस्थ सत्संगी हो, वे अपने  
सामर्थ्यानुसार दान करें, और जो त्यागी हों, वे भगवान्‌की पूजा करें ॥८७॥

When the eclipse is over, they shall take a bath with clothes worn at that time. Householders shall give alms to the poor according to their means and the ascetics shall worship God. (87)

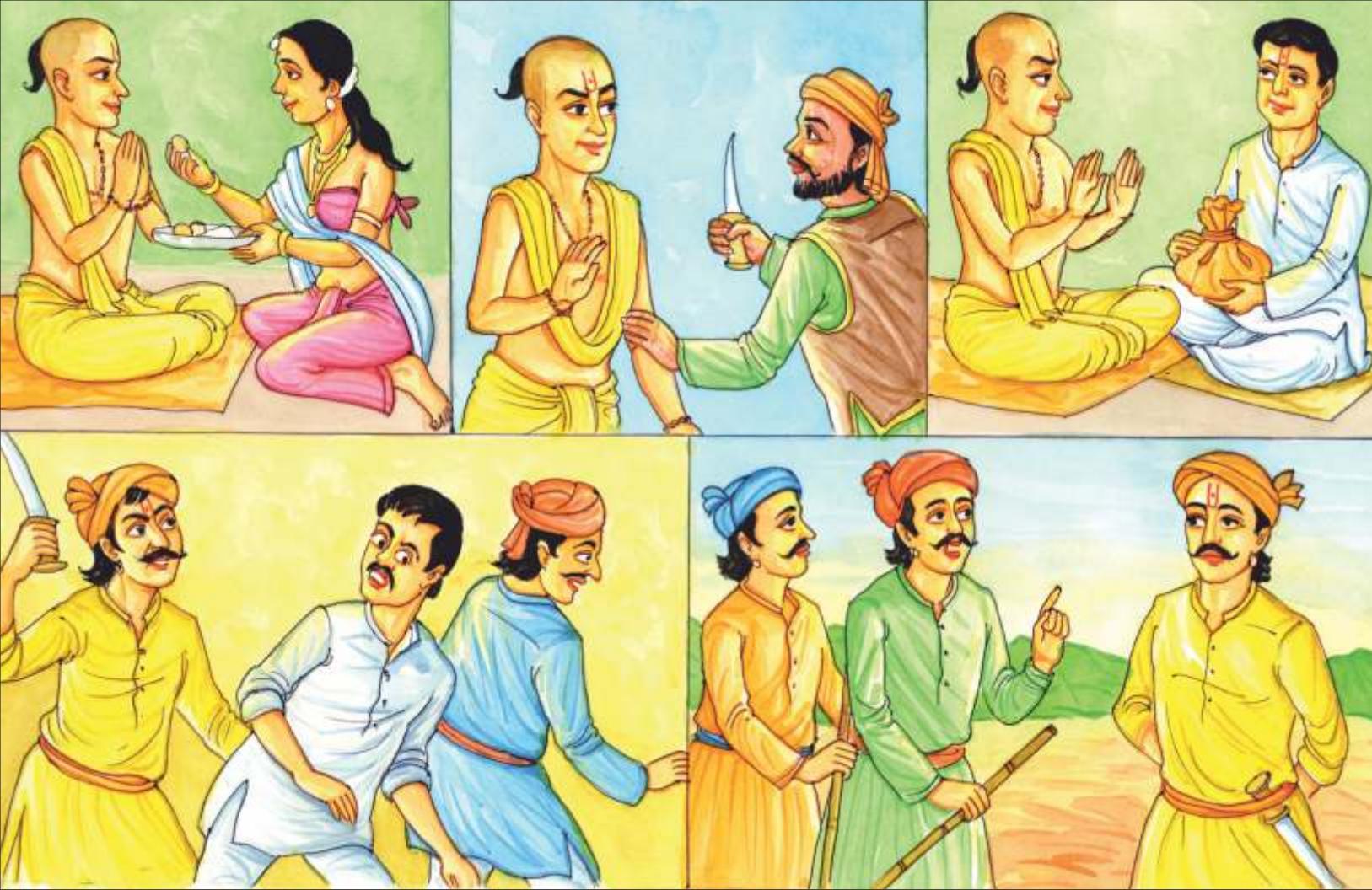


जन्माशौचं मृताशौचं स्वसम्बन्धानुसारतः ।  
पालनीयं यथाशास्त्रं चातुर्वर्ण्यजनैर्मम ॥८८॥

अने अमारा सत्संगी ऐवा जे यारे वर्षाना मनुष्य, तेमणे, जन्मनुं सूतक तथा मरणानुं सूतक,  
ते पोतपोताना संबंधने अनुसारे करीने, यथाशास्त्र पाणवुं ॥८८॥

चारो वर्ण के हमारे सत्संगी, वे जन्म तथा मरण के सूतक का अपने अपने सम्बन्ध के  
अनुसार यथाशास्त्र पालन करें ॥८८॥

My disciples of the four Varnas (hereditary social classes) shall observe Sutak (a period following a birth or a death in a family, during which all religious rites are prohibited) immediately after a birth or death of a relative, according to the closeness of the relationship, as prescribed by the scriptures. (88)



भाव्यं शमदमक्षान्तिसन्तोषादिगुणान्वितैः ।  
ब्राह्मणैः शौर्यधैर्यादिगुणोपेतैश्च बाहुजैः ॥८९॥

अने जे ब्राह्मण वर्षा होय तेमણે शમ, दम, क्षमा अने संतोष, એ આદિક જે ગુણ, તેમણે યુક્ત થવું; અને જે ક્ષત્રિય વર્ષા હોય, તેમણે શૂરવીરપણું અને ધીરજ, એ આદિક જે ગુણ, તેમણે યુક્ત થવું. ॥८९॥

और जो ब्राह्मण वर्ण के हैं, वे शम, दम, क्षमा तथा संतोष आदि गुणों से युक्त हो तथा क्षत्रिय वर्णके हों, वे शूरवीरता एवं धैर्य आदि गुणों से युक्त हो ॥८९॥

Brahmins shall have virtues such as tranquility, self-restraint, forgiveness, contentment, etc. and My Kshatriya devotees (warriors) shall have bravery, patience and similar virtues. (89)

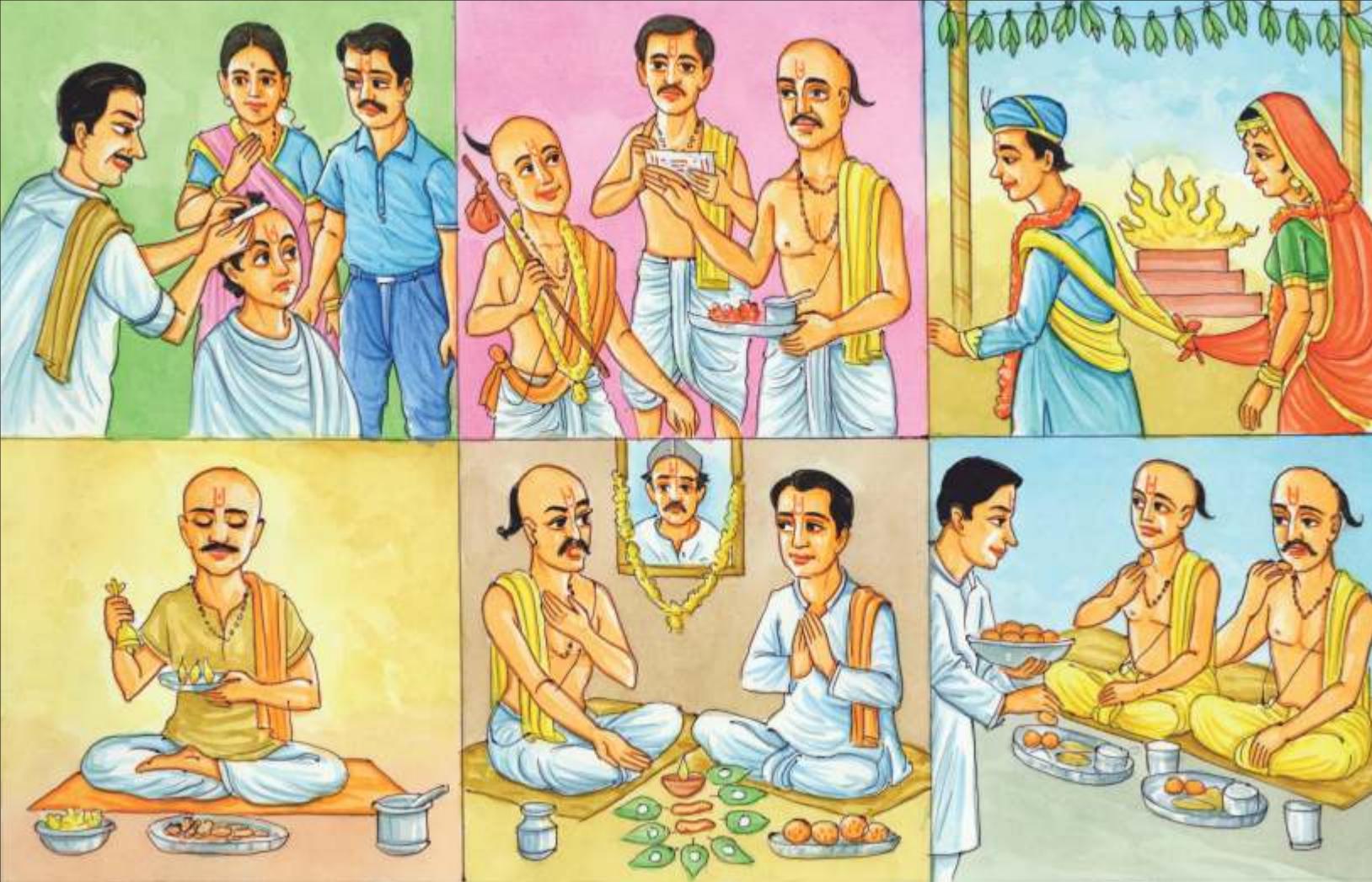


वैश्यैश्वर्कृषिवाणिज्यकुसीदमुखवृत्तिभिः ।  
भवितव्यं तथा शूद्रैर्द्विजसेवादिवृत्तिभिः ॥९०॥

अने वैश्य वर्षा होय, तेमणे कृषिकर्म तथा वाणिज व्यापार तथा व्याजवटो, ए आदिक जे वृत्तिओ तेमणे करीने वर्तवुं; अने जे शुद्र वर्षा होय, तेमणे ब्राह्मणादिक त्रिश वर्षानी सेवा करवी ए आदिक जे वृत्तिओ तेमणे करीने वर्तवु. ॥८०॥

जो वैश्यवर्ण के हैं वे खेती, वाणिज्य-व्यापार तथा महाजनी आदि वृत्तियों से युक्त हो, तथा शूद्र वर्ण के हों वे ब्रह्मणादि तीनों वर्णों की सेवा आदि वृत्तियों से अपना जीवन यापन करें ॥९०॥

The Vaishyas shall practise farming, trading, money lending, etc., and the Shudras shall serve the above mentioned three Varnas. (90)



संस्काराश्राहिकं श्राद्धं यथाकालं यथाधनम् ।  
स्वस्वगृह्यानुसारणे कर्तव्यं च द्विजन्मभिः ॥९१॥

अने जे द्विज होय, तेमाणे गर्भाधानादिक संस्कार तथा आहनिक तथा श्राद्ध, ए त्रषा जे ते पोताना गृह्यसूत्रने अनुसारे करीने, जेवो जेनो अवसर होय अने जेवी जेनी धनसंपत्ति होय, ते प्रभाणे करवा ॥९१॥

और जो द्विज-त्रैवर्णिक हों, वे गर्भाधानादि संस्कार, आहिक कर्म तथा श्राद्धकर्म, इन तीनों को अपने-अपने गृह्यसूत्र के अनुसार तथा समय एवं धनसंपत्ति के अनुसार करें ॥९१॥

The Dwij (twice born) shall perform the due rites following conception and perform daily rituals and Shraddh (rituals performed for the deceased) at the appropriate time according to the capacity of individuals. (91)



अज्ञानाज्ञानतो वापि गुरु वा लघु पातकम् ।  
क्वापि स्यात्तर्हि तत्प्रायश्चित्तं कार्यं स्वशक्तिः ॥९२॥

अने क्यारेक जाणे अथवा अजाणे जो नानुं-भोटुं पाप थई जाय, तो पोतानी शक्ति प्रभाणे, ते  
पापनुं प्रायश्चित्त करवुं ॥९२॥

और यदि कभी जाने अथवा अनजाने कोई छोटा-बड़ा पाप हो जाये तो अपनी शक्ति के  
अनुसार उसका प्रायश्चित्त करें ॥९२॥

If My disciples have committed any sins, small or big, knowingly or unknowingly, they shall expiate their sins according to their capacities. (92)



ऋग्वेद

वेजुवेद

अथर्ववेद

सामवेद

व्यासरस्त्र

श्रीमद्  
भागवत

श्री  
भगवद् गीता

श्री वासुदेव  
महात्म्य

विद्वर्तोति

महाभारत

वाग्नवल्क्य  
सूस्ति

वेदाश्च व्याससूत्राणि श्रीमद्भागवतमिधम् ।  
 पुराणं भारते तु श्रीविष्णोर्नामसहस्रकम् ॥९३॥  
 तथा श्रीभगवद्गीता नीतिश्च विदुरोदिता ।  
 श्रीवासुदेवमाहात्म्यं स्कान्दवैष्णवखण्डगम् ॥९४॥  
 धर्मशास्त्रान्तर्गता च याज्ञवल्क्यऋषेः स्मृतिः ।  
 एतान्यष्ट ममेष्टानि सच्छास्त्राणि भवन्ति हि ॥९५॥

अने यार वेद तथा व्याससूत्र; तथा श्रीमद्भागवत नामे पुराण, तथा महाभारतने विषे तो  
 श्रीविष्णुसहस्रनाम; ॥८३॥

तथा श्रीभगवद्गीता, तथा विदूरज्ञाने कहेली जे नीति, तथा स्कंदपुराणनो जे विष्णुखंड तेने  
 विषे रह्युं ऐवुं जे श्रीवासुदेवमाहात्म्य; ॥८४॥

अने धर्मशास्त्रना भध्यमां रही ऐवी जे याज्ञवल्क्य ऋषिनी स्मृति ए जे आठ सच्छास्त्र ते  
 अभने ईष्ट छे. ॥८५॥

चार वेद, व्याससूत्र, श्रीमद्भागवत पुराण, महाभारत में स्थित श्रीविष्णुसहस्रनाम  
 स्तोत्र ॥९३॥

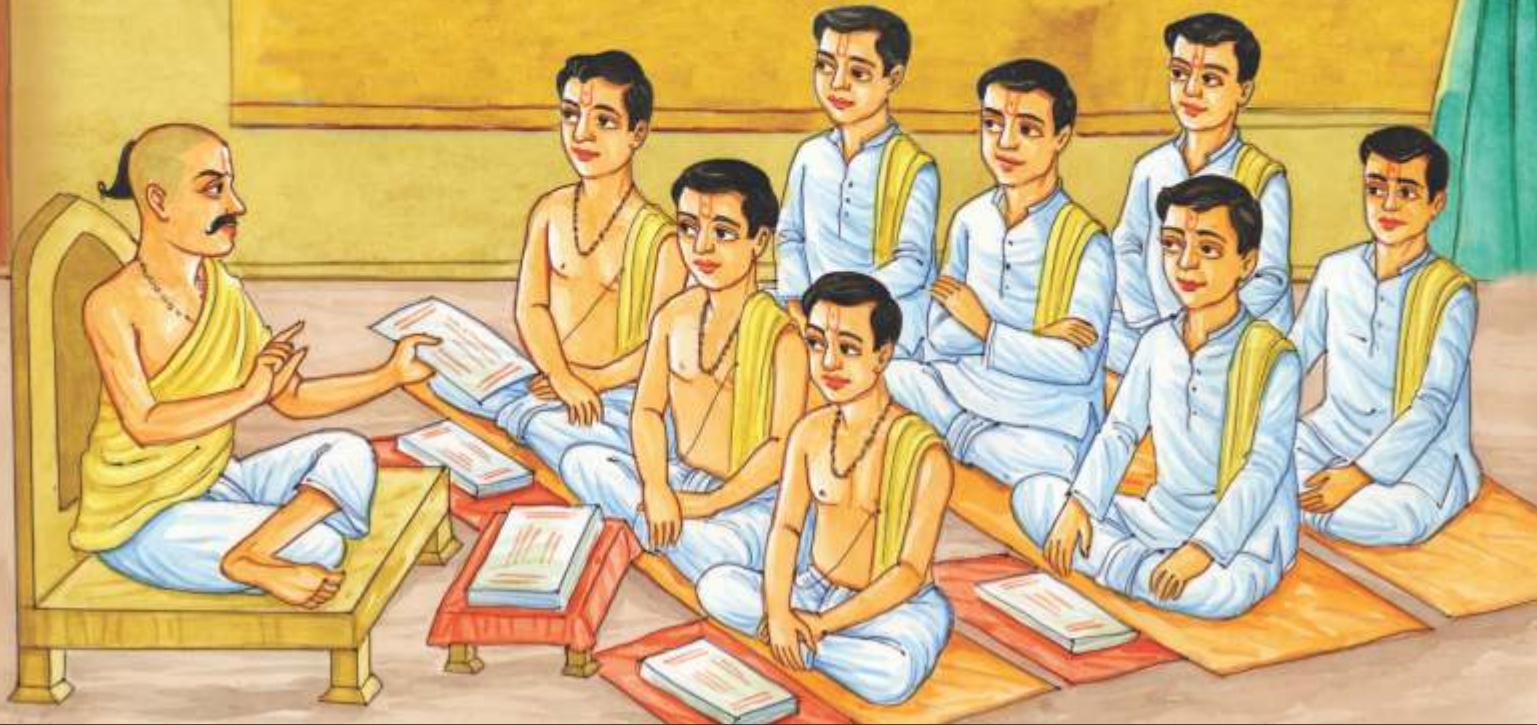
श्रीमद्भगवद्गीता, विदुर-नीति, स्कंदपुराण के विष्णुखंड में कहा हुआ  
 श्रीवासुदेवमहात्म्य ॥९४॥

और धर्मशास्त्रों के अन्तर्गत याज्ञवल्क्य ऋषि की स्मृति, ये आठ सच्छास्त्र हमें इष्ट हैं  
 ॥९५॥

I hold the following eight scriptures as superior and true authority on  
 our philosophy and religion :

1. The four Vedas
2. Vyas-Sutra
3. Shreemad Bhagwat Puran
4. Shree Vishnu Sahastranam in the Mahabharat
5. Shree Bhagwad Geeta (Mahabharat)
6. Vidurniti (code of ethics enunciated by Shree Vidurji) (Mahabharat)
7. Shree Vasudev Mahatmya from Vishnu Khand of Skandh Puran
8. Smriti by Yagnavalkya Rishi

which are central to all religious scriptures. (93-94-95)

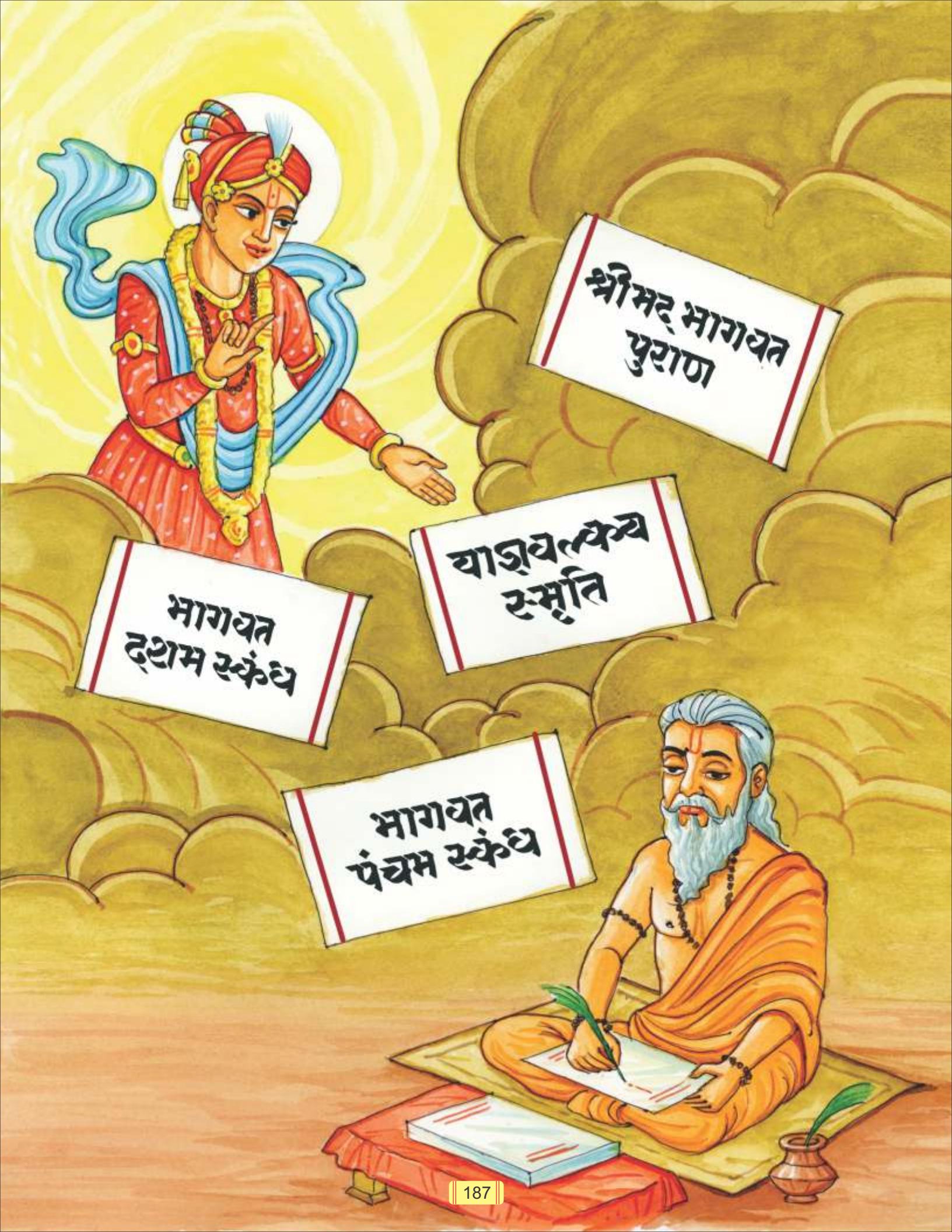


स्वहितेच्छुभिरेतानि मच्छिष्यः सकलैरपि ।  
 श्रोतव्यान्यथ पाठ्यानि कथनीयानि च द्विजैः ॥९६॥

अने पोताना हितने ईर्ष्यता एवा जे अमारा सर्वे शिष्य-तेमणे ए आठ सच्छास्त्र, जे ते सांभणवां अने अमारा आश्रित, जे द्विज तेमणे ए सच्छास्त्र जे ते भाषावां तथा भाषाववां तथा ऐमनी कथा करवी ॥९६॥

अपना हि चाहनेवाले हमारे सभी शिष्य, उन आठों सच्छास्त्रों को सुनें और हमारे आश्रित जो द्विज हैं, वे उन सच्छास्त्रों को पढ़े, पढ़ावे और उनकी कथा करें ॥९६॥

All my disciples who desire salvation, shall listen to all these eight scriptures and My Brahmin devotees shall study, teach and preach them to the others. (96)



तत्राचारव्यहृतिनिष्कृतानां च निर्णये ।  
 ग्राहा मिताक्षरोपेता याज्ञवल्क्यस्य तु स्मृतिः ॥१७॥  
 श्रीमद्भागवतस्यैवु स्कन्धौ दशमपञ्चमौ ।  
 सर्वाधिकतया ज्ञेयौ कृष्णमाहात्म्यबुद्धये ॥१८॥  
 दशमः पञ्चमः स्कन्धौ याज्ञवल्क्यस्य च स्मृतिः ।  
 भक्तिशास्त्रं योगशास्त्रं धर्मशास्त्रं क्रमेण मे ॥१९॥

अने ते आठ सच्चास्त्रमांथी आचार, व्यवहार अने प्रायश्चित ए त्राणानो जे निर्णय करवो तेने विषे तो, मिताक्षरा टीकाए युक्त ऐवी जे याज्ञवल्क्य ऋषिनी स्मृति, तेनुं ग्रहण करवुं ॥८७॥

अने वणी ए आठ सच्चास्त्रने विषे जे श्रीमद्भागवत पुराण-तेना दशम ने पंचम नामे जे बे स्कन्ध, ते जे श्रीकृष्ण भगवानना माहात्म्य जाणवाने अर्थ सर्वथी अधिकपणे जाणवा ॥८८॥

अने दशमस्कन्ध तथा पंचमस्कन्ध तथा याज्ञवल्क्यनी स्मृति-ए जे त्राण, ते अनुकमे करीने अमारुं भक्तिशास्त्र, योगशास्त्र अने धर्मशास्त्र छे, कहेता, दशम स्कन्ध ते भक्तिशास्त्र छे अने पंचमस्कन्ध ते योगशास्त्र छे अने याज्ञवल्क्यनी स्मृति ते धर्मशास्त्र छे अभ जाणवुं ॥८९॥

उन आठ सच्चास्त्रों में से आचार, व्यवहार तथा प्रायश्चित इन तीनों के निर्णय के लिए मिताक्षरा टीकायुक्त याज्ञवल्क्य ऋषि की स्मृति को ग्रहण करें ॥१७॥

और उन आठ सच्चास्त्रों में जो श्रीमद्भागवत पुराण है, उसके दशम तथा पञ्चम, इन दो स्कन्धों को श्रीकृष्ण भगवानका माहात्म्य जानने के लिए सबसे अधिक रूप से जानें ॥८८॥

दशमस्कन्ध, पंचमस्कन्ध तथा याज्ञवल्क्य ऋषिकी स्मृति ये तीनों क्रमशः हमारे भक्तिशास्त्र, योगशास्त्र एवं धर्मशास्त्र हैं। अर्थात् दशमस्कन्ध भक्तिशास्त्र है, पंचमस्कन्ध योगशास्त्र है तथा याज्ञवल्क्य ऋषिकी स्मृति धर्मशास्त्र है, ऐसा समझें ॥९१॥

Amongst the eight scriptures mentioned above, My disciples shall consider the Mitakshara Commentary on Yagnavalkya Smriti as the guiding authority to take decisions on matters of daily routines of rites and rituals, secular business affairs and code of expiation. (97)

The Fifth and the Tenth Skandhs of Shreemad Bhagwat Puran shall be regarded as the best amongst these scriptures for clear understanding of the greatness and glory of Lord Shree Krishna. (98)

The Tenth Skandh shall be esteemed as Bhaktishastra (devotion), Fifth Skandh as Yogashastra (meditation), and Yagnavalkya Smriti as Dharmashastra (religion). (99)



शारीरकाणां भगवद्गीतायाश्वावगम्यताम् ।  
 रामानुजाचार्यकृतं भाष्यमाध्यात्मिकं मम ॥१००॥  
 एतेषु यानि वाक्यानि श्रीकृष्णस्य वृषस्य च ।  
 अत्युत्कर्षपराणि स्युस्तथा भक्तिविरागयोः ॥१०१॥  
 मन्तव्यानि प्रधानानि तान्येवेतरवाक्यतः ।  
 धर्मेण सहिता कृष्णभक्तिः कार्येति तद्रहः ॥१०२॥

अने श्री रामानुजाचार्ये कर्यु ऐवुं जे व्याससूत्रनुं श्रीभाष्य तथा श्रीभगवद्गीतानुं भाष्य, ए जे बे ते, अमालं अध्यात्मशास्त्र छे अम जाणवुं ॥१००॥

अने ए सर्वे सच्छास्त्रने विषे जे वयन, ते जे ते श्रीकृष्ण भगवाननुं स्वरूप तथा धर्म तथा भक्ति तथा वैराग्य ए चारना अति उत्कर्षपश्चाने कहेतां होय ॥१०१॥

ते वयन जे ते भीजां वयन करतां प्रधानपशे मानवां अने श्रीकृष्ण भगवाननी भक्ति, ते जे ते धर्म सहित ज करवी; एवी रीते ते सर्वे सच्छास्त्रनुं रहस्य छे ॥१०२॥

श्रीरामानुजाचार्य द्वारा किया हुआ व्याससूत्र का श्रीभाष्य तथा श्रीभगवद्गीता का भाष्य, ये दोनों हमारे अध्यात्मशास्त्र हैं ॥१००॥

इन सभी सच्छास्त्रों मे जो वचन श्रीकृष्ण भगवान् का स्वरूप, धर्म, भक्ति तथा वैराग्य इन चारों का अत्यन्त उत्कर्ष बताते हैं ॥१०१॥

उन वचनोंको अन्य वचनों की अपेक्षा विशेषरूप से मानें । श्रीकृष्ण भगवान् की भक्ति धर्मपूर्वक ही करना ऐसा उन सभी सच्छास्त्रों का रहस्य है ॥१०२॥

They shall acknowledge the Bhashya (commentaries) on Vyasa-Sutra and Shree Bhagwad Geeta by Shree Ramanujacharya, as My spiritual philosophy. (100)

Those texts in these scriptures which tell the greatness of divinity of Lord Shree Krishna, religion, devotion and renunciation, shall be considered to be of greater value than others.

The secret of these scriptures is that the devotion to Lord Shree Krishna is inseparable from Dharma. (101-102)



धर्मो ज्ञेयः सदाचारः श्रुतिस्मृत्युपपादितः ।  
माहात्म्यज्ञानयुभूरिस्त्वेहो भक्तिश्च माधवे ॥१०३॥

अने श्रुति स्मृति तेभाषे प्रतिपादन कर्यो एवो जे सदाचार, ते धर्म जाणवो; अने श्रीकृष्ण भगवानने विषे माहात्म्यज्ञाने सहित जे धाषो स्नेह ते भक्ति जाणवी। ॥१०३॥

और श्रुति एवं स्मृतियों द्वारा प्रतिपादित सदाचारोंको धर्म समझना तथा श्रीकृष्ण भगवान् के प्रति माहात्म्यज्ञान से युक्त अपार स्नेहको भक्ति समझना ॥१०३॥

Dharma is the right conduct as authenticated by Shruti and Smruti (scriptures). Bhakti is profound love for God coupled with knowledge of the majesty and magnificence of Lord Shree Krishna. (103)

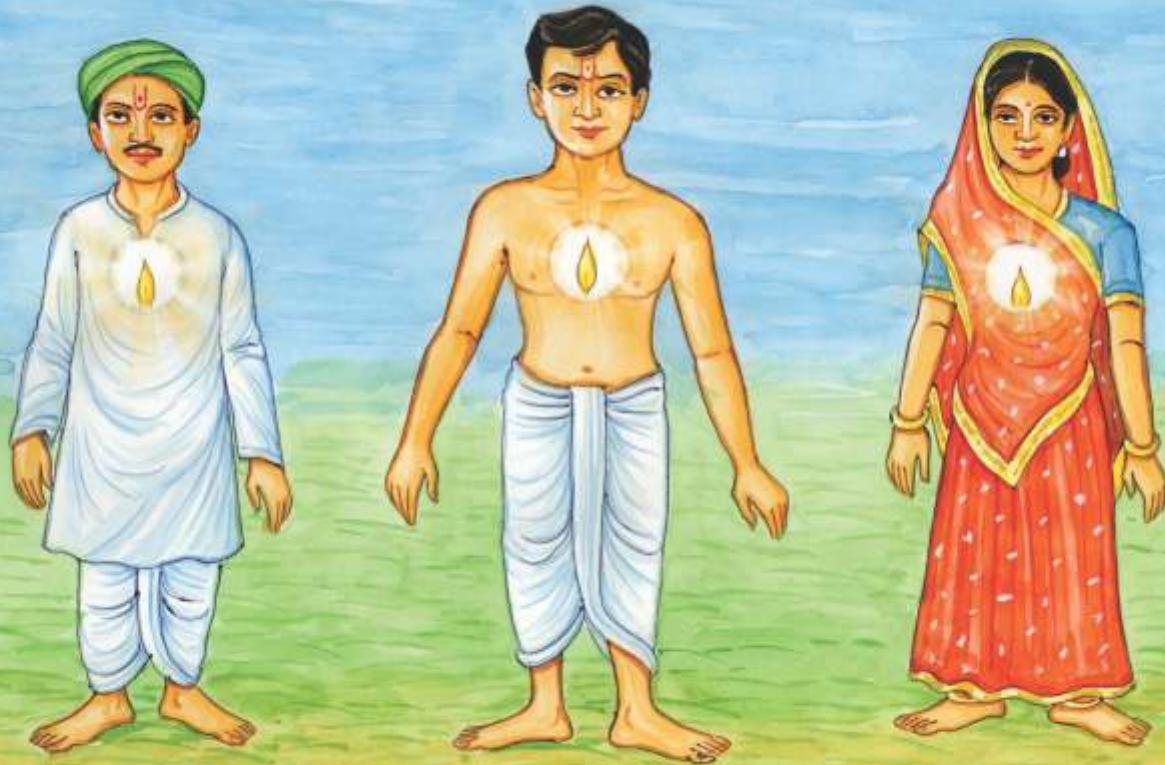


वैराग्यं ज्ञेयमप्रीतिः श्रीकृष्णोत्तरवस्तुषु ।  
ज्ञानं च जीवमायेशरुपाणां सुषु वेदनम् ॥१०४॥

अने श्रीकृष्ण भगवान् विना अन्य पदार्थमां प्रीति नहि, ते वैराग्य जाषवो; अने ज्ञव, माया  
अने ईश्वर, तेमना स्वरूपने जे झडी रीते जाषवुं, तेने ज्ञान कहीअे. ॥१०४॥

श्रीकृष्ण भगवान् के बिना अन्य पदार्थों में प्रीति-आसक्ति न हो इसे वैराग्य समझें तथा जीव,  
माया और ईश्वर के स्वरूपको भलीभाँति जानना इसे ज्ञान समझें ॥१०४॥

Vairagya is non-attachment to everything except Lord Shree Krishna.  
Gn-an (knowledge) is comprehensive understanding of Jiva- (soul), Ma-y-a-  
(illusion) and Ishwar (God). (104)



हृत्थोऽणुसूक्ष्मशिद्रूपो ज्ञाता व्याप्तिखिलां तनुम् ।  
 ज्ञानशक्त्या स्थितो जीवो ज्ञेयोऽच्छेद्यादिलक्षणः ॥१०५॥

અને જે જીવ છે, તે હૃદયને વિશે રહ્યો છે, ને અણુ સરખો સૂક્ષ્મ છે; ને ચૈતન્યરૂપ છે; ને જાણનારો છે; અને પોતાની જ્ઞાનશક્તિએ કરીને નખથી શિખા પર્યત સમગ્ર પોતાના દેહ પ્રત્યે વ્યાપીને રહ્યો છે; અને અછેદ, અભેદ, અજર, અમર, ઇત્યાદિક છે લક્ષણ જેનાં એવો જીવ છે; એમ જાણવો. ॥૧૦૫॥

અब જીવકા લક્ષણ બતાતે હું । જો જીવ હૈ, વહ હૃદય મેં રહા હૈ, અણુ સમાન અત્યન્ત સૂક્ષ્મ હૈનું, ચૈતન્યસ્વરૂપ હૈ, જ્ઞાતા હૈ, અપની જ્ઞાન, શક્તિ દ્વારા નખ-શિખ પર્યન્ત અપને સમસ્ત શરીર મેં વ્યાપી હું તથા અછેદ, અભેદ, અજર, અમર ઇત્યાદિ લક્ષણોં સે યુક્ત હું, ઇસ પ્રકાર જીવ કો સમર્પણના ॥૧૦૫॥

The Jivā dwells in the heart, and is as minute as an atom. It is conscious and knowledgeable, and by the virtue of its subjectivity, pervades the whole body. It is indivisible, impenetrable, indestructible, eternal, etc. (105)



त्रिगुणात्मना तमः कृष्णशक्तिर्देहतदीययोः ।  
जीवस्य चाहं ममताहेतुर्मायावगम्यताम् ॥१०६॥

अने जे माया છે, તે ત્રિગુણાત્મકા છે; ને અંધકારરૂપ છે; ને શ્રીકૃષ્ણ ભગવાનની શક્તિ છે;  
અને આ જીવને દેહ તથા દેહના જે સંબંધી, તેમને વિશે અહંમમત્વની કરાવનારી છે; એમ માયાને  
જાણવી. ॥૧૦૬॥

अब माया का स्वरूप बताते हैं: - जो माया है, वह त्रिगुणात्मिका है, अन्धकार स्वरूप है, श्रीकृष्ण  
भगवान् की शक्ति हैं तथा जीवको देह और देह संबंधी पदार्थों में अहं ममत्व उत्पन्न कराने वाली है - इस  
प्रकार मायाको समझना ॥१०६॥

Ma-ya- is Trigunatmika, i.e. it has three qualities namely Satva (goodness or purity), Rajas (passion) and Tamas (temperament). It is the power of Lord Shree Krishna. It is full of darkness (ignorance), it is attachment to the body and relations thereof, and it is the source of egoism. (106)



हृदये जीववज्जीवे योऽन्तर्यामितया स्थितः ।  
ज्ञेयः स्वतन्त्र ईशोऽसौ सर्वकर्म फलप्रदः ॥१०७॥

अने जे ईश्वर છે, તે જે તે, જેમ હૃદયને વિશે જીવ રહ્યો છે, તેમ તે જીવને વિશે અંતર્યામીપણે કરીને રહ્યા છે; ને સ્વતંત્ર છે; ને સર્વ જીવને કર્મફળના આપનારા છે; એમ ઈશ્વરને જાણવા. ॥૧૦૭॥

अब ईश्वरका स्वरूप बताते हैं - जो ईश्वर है, वे जैसे जीव हृदय में रहा है, वैसे ही उस जीव में अन्तर्यामी रूप से रहे हैं, और स्वतन्त्र हैं तथा सर्व जीवों के कर्म फल प्रदाता हैं, इस प्रकार ईश्वरको समझना ॥१०७॥

Ishwar (God) dwells in Jivā by His indwelling and controlling power, just as Jiva dwells in the heart. He is the Supreme and sovereign and gives rewards to all according to their Karmas (actions). (107)



स श्रीकृष्णः परंब्रह्म भगवान् पुरुषोत्तमः ।  
उपास्य इष्टदेवो नः सर्वाविर्भावकारणम् ॥१०८॥

अने ते ईश्वर ते क्या - तो परब्रह्म पुरुषोत्तम ऐवा जे श्रीकृष्ण भगवान् ते ईश्वर छे अने ते श्रीकृष्ण, जे ते आपणा ईश्टदेव छे, ने उपासना करवा योग्य छे अने सर्व अवतारना कारण छे।  
॥१०८॥

ईश्वर कौन ? वे तो परब्रह्म पुरुषोत्तम ऐसे जो श्रीकृष्ण भगवान् हैं, वे ही ईश्वर हैं तथा वे श्रीकृष्ण हमारे इष्टदेव हैं और उपासना करने योग्य हैं और सर्व अवतारों के कारण हैं। ॥१०८॥

And that Ishwar is Lord Shree Krishna who is Parbrahma Purushottam (Supreme Being) and our most cherished deity. He is worthy of worship by us all. He is the source of all incarnations. (108)



स राधया यतो ज्ञेयो राधाकृष्ण इति प्रभुः ।  
रुक्मिण्या रमयोपेतो लक्ष्मीनारायणः सहि ॥१०९॥

अने समर्थ एवा जे श्रीकृष्ण, ते जे ते राधिकाज्ञे युक्त होय, त्यारे ‘राधाकृष्ण’ एवे नामे जाणवा; अने रुक्मणी रूप जे लक्ष्मी तेमाणे युक्त होय, त्यारे ‘लक्ष्मीनारायण’ एवे नामे जाणवा;  
॥१०९॥

समर्थ ऐसे वे श्रीकृष्ण भगवान् जब राधिकाजी के साथ हो तब ‘राधाकृष्ण’ कहलाते हैं तथा वे ही जब रुक्मिणी स्वरूप लक्ष्मीजी से युक्त हों तब ‘लक्ष्मीनारायण’ कहलाते हैं ॥१०९॥

When Lord Shree Krishna is by the side of Radhikaji, He shall be known as Radha Krishna. When He is by side of Laxmiji in the form of Rukmaniji, He shall be known as Laxminarayan. (109)



ज्ञेयोऽर्जुनेन युक्तोऽसौ नरनारायणाभिधः ।  
बलभद्रादियोगेन तत्तत्रामोच्यते स च ॥११०॥

अने ए श्रीकृष्ण, जे ते अर्जुने युक्त होय, त्यारे ‘नरनारायण’ एवे नामे जाणवा अने वणी ते  
श्रीकृष्ण, जे ते बलभद्रादिके योगे करीने ते ते नामे कहेवाय छे, एम जाणवुं; ॥११०॥

वे ही श्रीकृष्ण जब अर्जुन से युक्त हों तब उन्हें ‘नरनारायण’ नाम से जानना और वे ही श्रीकृष्ण जब  
बलभद्रादि के साथ हों तब उन-उन नामों से कहे जाते हैं ऐसे जानना ॥११०॥

When He is by the side of Arjun, He shall be known as Narnarayan, and  
in the same manner, when Balbhadra or other deities are by His side, He shall  
be known by such other appropriate names. (110)



एते राधादयो भक्तास्तस्य स्युः पार्श्वतः क्वचित् ।  
क्वचित्तदङ्गेऽतिस्नेहात्सु ज्ञेयस्तदैकलः ॥१११॥

अने ए जे राधादिक भक्त, ते जे ते क्यारेक तो ते श्रीकृष्ण भगवानने पडभे होय छे अने क्यारेक तो अति स्नेहे करीने, श्रीकृष्ण भगवानना अंगने विषे रहे छे, त्यारे तो ते श्रीकृष्ण भगवान एकला ४ होय, अेम जाणावुं ॥१११॥

वे राधादि भक्त कभी तो श्रीकृष्ण भगवान् के पाश्व में रहते हैं, और कभी अत्यन्त स्नेह से श्रीकृष्ण भगवान् के अंग में लीन रहते हैं, तब तो श्रीकृष्ण भगवान् को अकेले ही समझाना ॥१११॥

At times, devotees such as Radhikaji and others are alongside Lord Shree Krishna but at other times, they, with extreme devotion, dwell within Lord Shree Krishna, then Lord Shree Krishna shall be considered as by Himself. (111)



अतश्चास्य स्वरू पेषु भेदो ज्ञेयो न सर्वथा ।  
चतुरादिभुजत्वं तु द्विबाहोस्तस्य चैच्छिकम् ॥११२॥

ऐ हेतु माटे श्रीकृष्ण भगवाननां जे स्वरूप, तेमने विशे सर्व प्रकारे करीने भेद न जाणावो; अने चतुर्भुजपणुं, अष्टभुजपणुं, सहस्रभुजपणुं, ईत्यादिक जे भेद जणाय छे, ते तो द्विभुज ऐवा जे ते श्रीकृष्ण, तेमनी ईच्छाए करीने छे अम जाणावुं. ॥११२॥

अतएव श्रीकृष्ण भगवान् के स्वरूपों में किसी भी प्रकार का भेद न समझें और चतुर्भुज, अष्टभुज, सहस्रभुज इत्यादि जो भेद मालूम पड़ते हैं, वे तो द्विभुज ऐसे श्रीकृष्ण की ईच्छा से ही हैं, ऐसा समझें ॥११२॥

Therefore one shall not discriminate between the different manifestations of Lord Shree Krishna, as the four armed or thousand armed manifestations of Lord Shree Krishna are the manifestations of the two armed Lord Shree Krishna, Himself, at His own free will. (112)

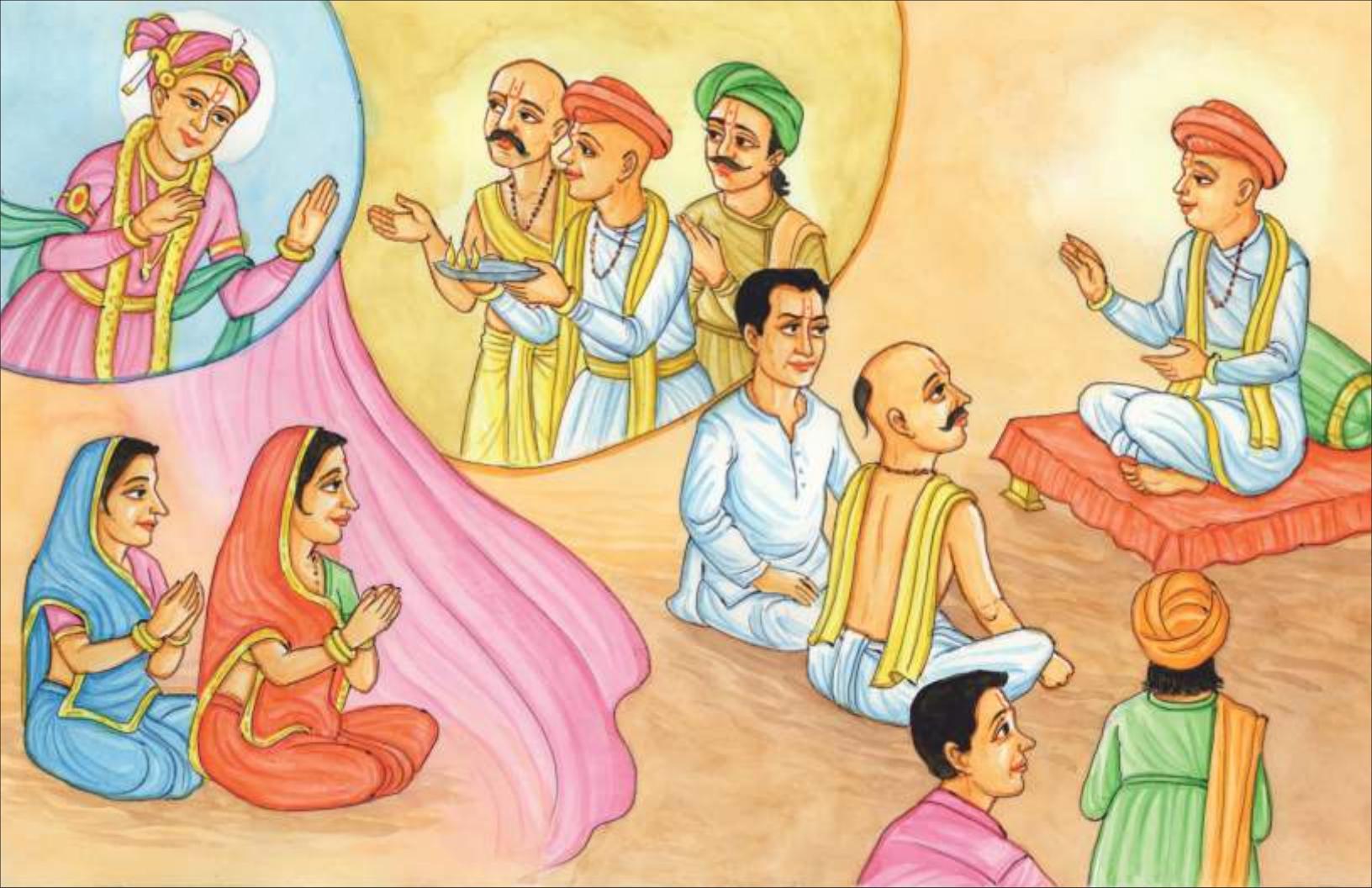


तस्यैव सर्वथा भक्तिः कर्तव्या मनुजैर्भुवि ।  
निःश्रेयसकरं किञ्चित्ततोऽन्यन्नेति दृश्यताम् ॥११३॥

अने अेवा जे ते श्रीकृष्ण भगवान्, तेनी जे भक्ति ते जे ते पृथ्वीने विषे सर्व मनुष्य तेमणे  
करवी अने ते भक्ति थकी, बीजुं कल्याणकारी साधन कांड नथी, अेम जाणवुं ॥११३॥

ऐसे जो श्रीकृष्ण भगवान् उनकी भक्ति पृथ्वी पर के सभी मनुष्य करें और उस भक्ति से  
अधिक कल्याणकारी कोई अन्य साधन नहीं है ऐसा जाने ॥११३॥

All persons shall worship Lord Shree Krishna with devotion, knowing  
that there is nothing more conducive to the realization of salvation other than  
devotion to Lord Shree Krishna. (113)

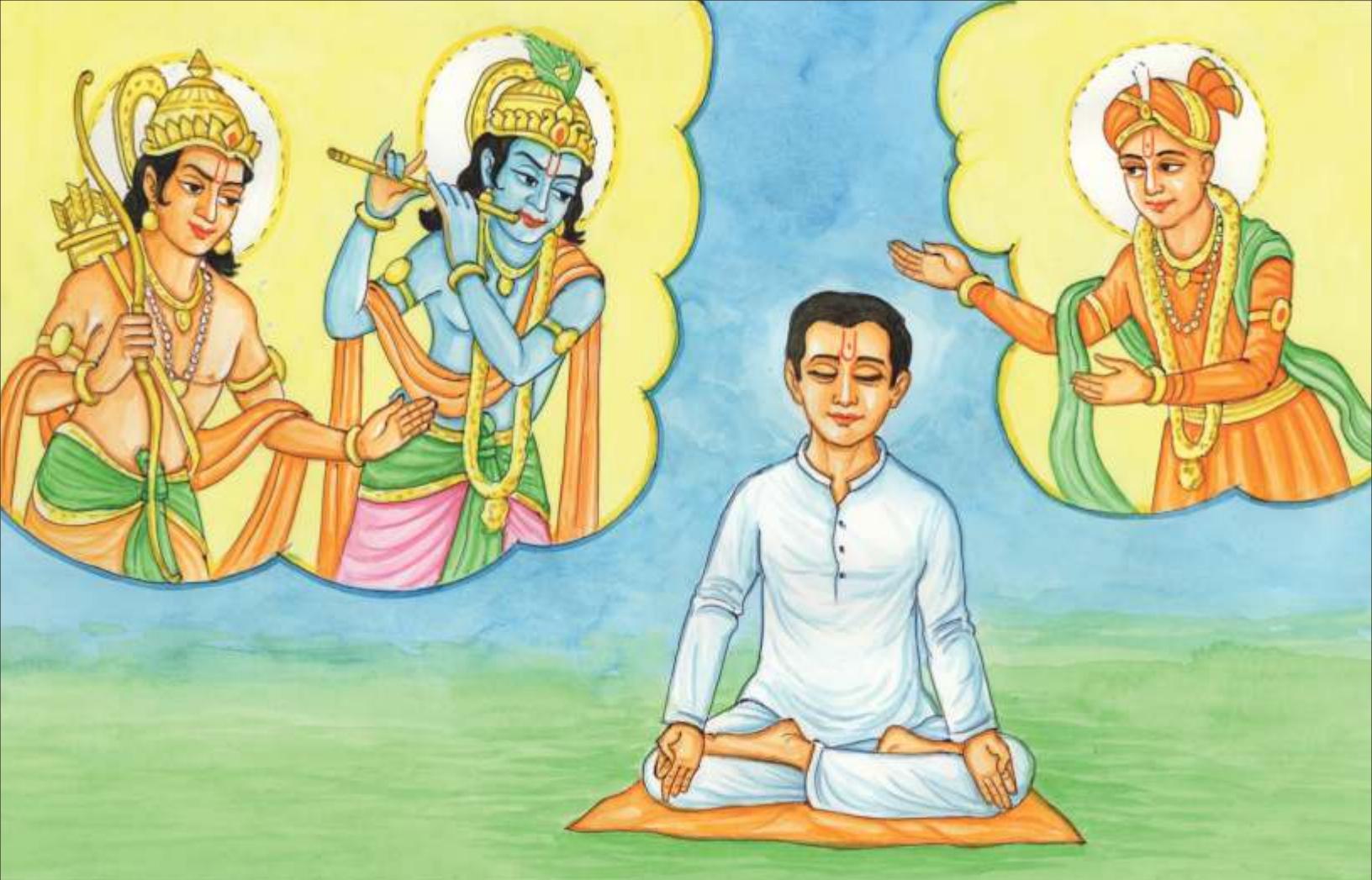


गुणिनां गुणवत्ताया ज्ञेयं ह्येतत् परं फलम् ।  
 कृष्णो भक्तिश्च सत्सङ्गोऽन्यथा यान्ति विदोऽप्यथः ॥११४॥

अने विद्यादिक गुणवाणा जे पुरुष, तेमना गुणवानपणानुं ए ज परम इण जाणवुं. क्युं तो जे  
 श्रीकृष्ण भगवानने विषे भक्ति करवी ने सत्संग करवो; अने ऐम भक्ति ने सत्संग-ऐ बे विना तो  
 विद्वान होय, ते पण अधोगतिने पामे छे. ॥११४॥

श्रीकृष्ण भगवान् की भक्ति तथा सत्संग करना यही विद्यादि गुणों से युक्त पुरुषों के गुणों का  
 परम फल है, अन्यथा-भक्ति तथा सत्संग, इन दोनों के बिना तो विद्वान् भी अधोगति का प्राप्त करता है  
 ॥११४॥

The righteousness of the virtuous persons such as the learned ones is only due to their devotion to Lord Shree Krishna and Satsang (association with saintly persons), because without devotion and Satsang even a learned person is bound to degenerate. (114)

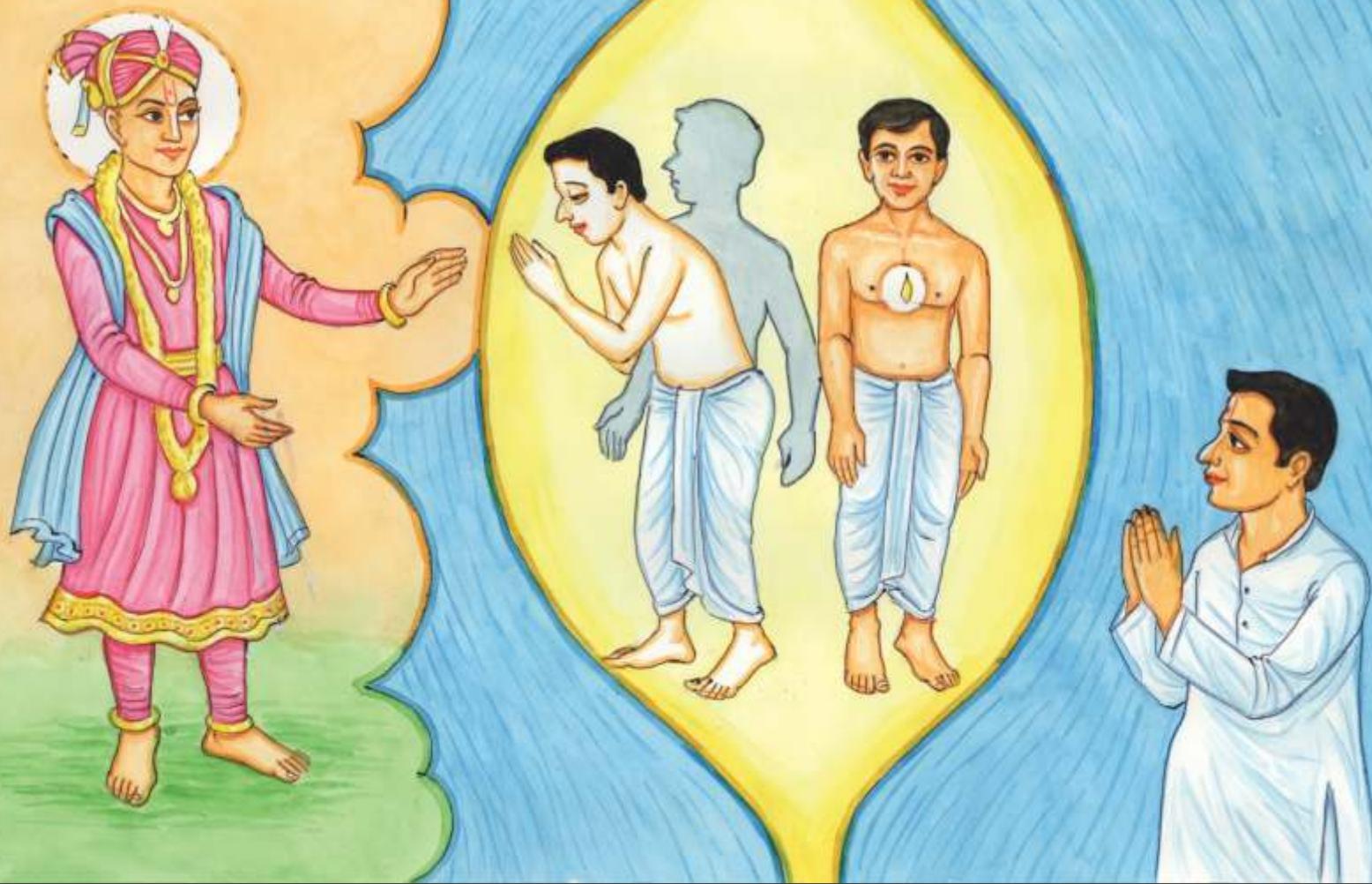


कृष्णस्तदवताराश्च ध्येयास्तत्प्रतिमापि च ।  
 न तु जीवा नृदेवाद्या भक्ता ब्रह्मविदोऽपि च ॥११५॥

अने श्रीकृष्ण भगवान् तथा श्रीकृष्ण भगवानना जे अवतार ते जे ध्यान करवा योग्य छे, तथा श्रीकृष्ण भगवाननी जे प्रतिमा, ते पश्च ध्यान करवा योग्य छे; माटे ऐमनुं ध्यान करवुं अने मनुष्य तथा देवादिक जे जीव, ते तो श्रीकृष्ण भगवानना भक्त होय अने ब्रह्मवेता होय तो पश्च ध्यान करवा योग्य न थी. माटे ऐमनुं ध्यान न करवुं. ॥११५॥

और श्रीकृष्ण भगवान् तथा उनके अवतार ध्यान करने योग्य हैं तथा उनकी प्रतिमा भी ध्यान करने योग्य हैं अतः उनका ध्यान करें परन्तु मनुष्य तथा देवादि जो जीव, वे तो श्रीकृष्ण - भगवान् के भक्त हों तथा ब्रह्मवेता हों तो भी ध्यान करने योग्य नहीं हैं, अतः उनका ध्यान न करें ॥११५॥

Lord Shree Krishna, His incarnations and His images alone are worthy of meditation, therefore they alone shall be meditated upon, but one shall never meditate upon a person, a deity or Jiva- (a being) even though he may be a profound devotee of Lord Shree Krishna or a Brahmaveta. (115)

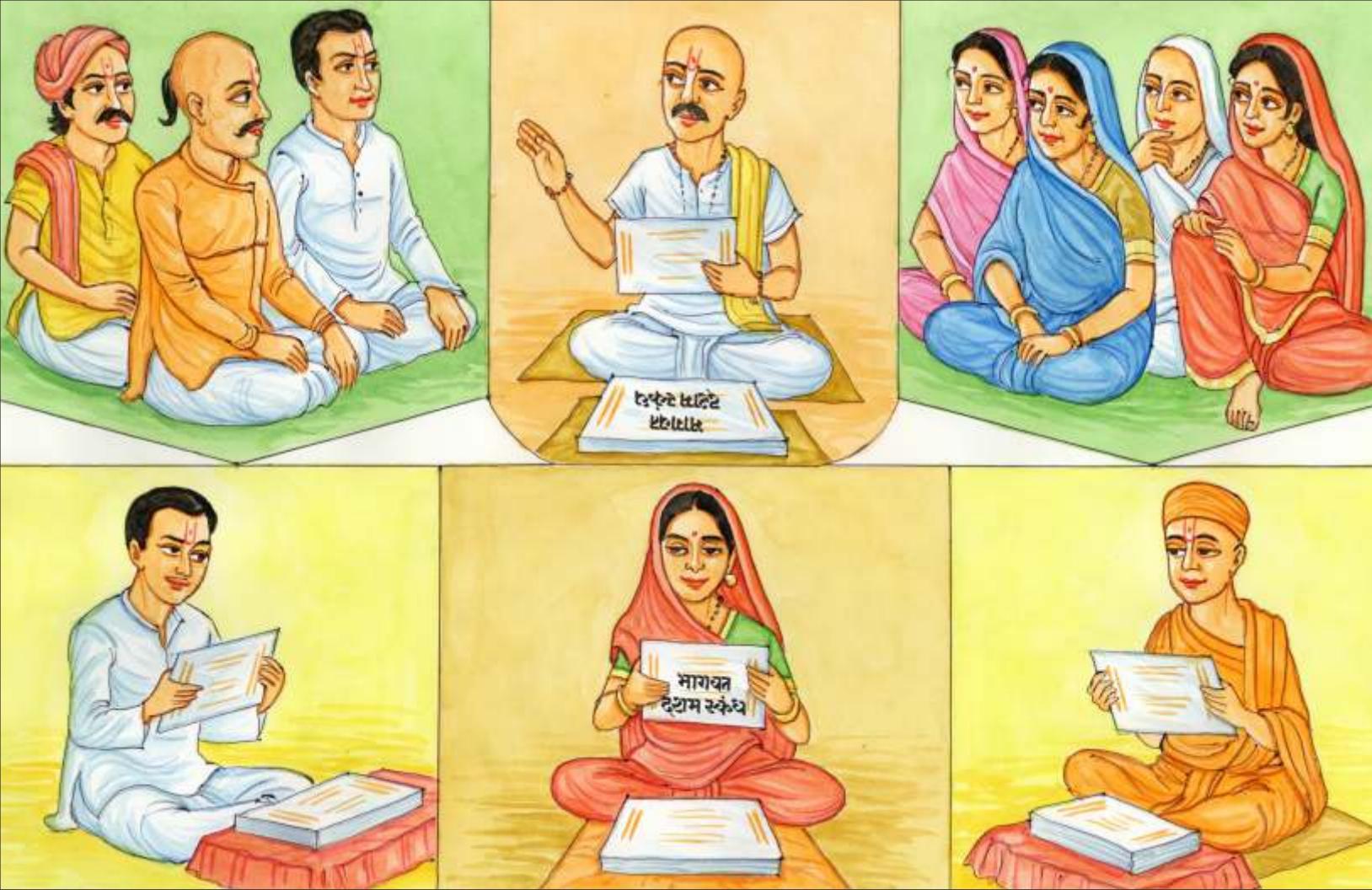


निजात्मां ब्रह्मरूपं देहत्रयविलक्षणम् ।  
 विभाव्य तेन कर्तव्या भक्तिः कृष्णस्य सर्वदा ॥११६॥

अने स्थूल, सूक्ष्म अने कारण-એ જે ત્રણ દેહ, તે થકી વિલક્ષણ એવો જે પોતાનો જીવાત્મા,  
 તેને બ્રહ્મરૂપની ભાવના કરીને, પછી તે બ્રહ્મરૂપે કરીને શ્રીકૃષ્ણ ભગવાનની ભક્તિ, જે તે સર્વ કાળને  
 વિષે કરવી. ॥११६॥

और अपने जीवात्माको स्थूल, सूक्ष्म तथा कारण, तीनों देह से विलक्षण समझकर ब्रह्मरूप  
 से निरन्तर श्रीकृष्ण भगवान् की भक्ति करें ॥११६॥

One shall consider one's soul as distinct from the three forms of body –  
 Sthool (gross), Sukshma (subtle) and Kaaran (causal) and identify the soul  
 with Brahma and with that sublime form shall always worship Lord Shree  
 Krishna. (116)



श्रव्यः श्रीमद्भागवतदशमस्कन्ध आदरात् ।  
प्रत्यहं वा सकृद्वर्षे वर्षे वाच्योऽथ पण्डितैः ॥११७॥

अने श्रीमद् भागवतपुराणानो जे दशम स्कंध ते जे ते नित्यप्रत्ये आदर थकी सांभणवो;  
अथवा वर्षो वर्ष एक वार सांभणवो अने जे पंडित होय, तेमाणे नित्य प्रत्ये वांचवो अथवा वर्षो वर्ष  
एकवार वांचवो ॥११७॥

और श्रीमद्भागवत पुराण के दशमस्कंध को आदरपूर्वक सुनें अथवा प्रतिवर्ष एकबार सुनें और  
जो पंडित हों वे उसका प्रतिदिन पाठ करें अथवा प्रतिवर्ष एक बार पाठ करें ॥११७॥

My disciples shall listen to, with reverence, the Tenth Skandh of Shreemad Bhagwat everyday or once a year, and the pundit shall read it daily or once yearly. (117)



कारणीया पुरश्चर्या पुण्यस्थानेऽस्य शक्तिः ।  
विष्णुनामसहस्रादेशापि कार्येष्वितप्रदा ॥११८॥

अने ए जे दशम स्कंध तेनुं पुरश्चरण, जे ते पुण्य स्थानकने विषे पोताना सामर्थ्य प्रभाषे करवुं-कराववुं; अने वणी विष्णुसहस्रनाम आदिक जे सच्छास्त्र, तेनुं पुरश्चरण पण पोताना सामर्थ्य प्रभाषे करवुं-कराववुं; ते पुरश्चरण केवुं छे, तो पोताना मनवांछित फलने आपे ऐवुं छे ॥११८॥

उस दशमस्कंध का पुरश्चरण अपनी शक्ति के अनुसार किसी पवित्र स्थान में करें, करावें तथा विष्णुसहस्र नाम आदि सच्छास्त्रों का पुरश्चरण भी अपनी शक्ति के अनुसार करें तथा करावें, यह पुरश्चरण अपने मनोवांछित फलको देने वाले हैं ॥११८॥

They shall perform the Purascharan (the pious reading) of the Tenth Skandh of Shreemad Bhagwat and Vishnu Sahastranam in a holy place, performed by self or through others as per one's capability as these performances help them to attain their desired objects. (118)



दैव्यामापदि कष्टायां मानुष्यां वा गदादिषु ।  
यथा स्वपररक्षा स्यात्तथा वृत्यं न चान्यथा ॥११९॥

अने कष्टनी देनारी ऐवी कोई देवसंबंधी आपदा आवी पडे तथा मनुष्य संबंधी आपदा आवी पडे, तथा रोगादिक आपदा आवी पडे, तेने विषे जेम पोतानी ने भीजानी रक्षा थाय, तेम वर्तवुं, पण भीज रीते न वर्तवुं ॥११९॥

देव सम्बन्धी, मनुष्य सम्बन्धी तथा रोगादि सम्बन्धी कोई भी कष्टदायक आपत्ति आ पडे, तो अपनी और अन्य की रक्षा हो वैसा आचरण करें, किन्तु अन्यरीति से आचरण न करें ॥११९॥

In the event of a calamity, which has come naturally or through a person or an epidemic etc., one shall always act in such a way that one can save one's own life and also that of others but shall never act otherwise. (119)



देशकालवयोवित्तजातिशक्त्यनुसारतः ।  
आचारो व्यवहारश्च निष्कृतं चाबधार्यताम् ॥१२०॥

अने आचार, व्यवहार अने प्रायश्चित ऐ जे त्रष्णा वानां, ते जे ते देश, काण, अवस्था, द्रव्य, जाति अने सामर्थ्य एटलांने अनुसारे करीने जाणावां ॥१२०॥

और आचार, व्यवहार एवं प्रायश्चित इन तीनों बातों को देश, काल, अवस्था, द्रव्य, जाति और शक्ति के अनुसार जानें ॥१२०॥

The place, time, age, means, status and ability shall be taken into consideration when deciding upon the matters of daily rites and rituals, secular business affairs and the code of expiation. (120)

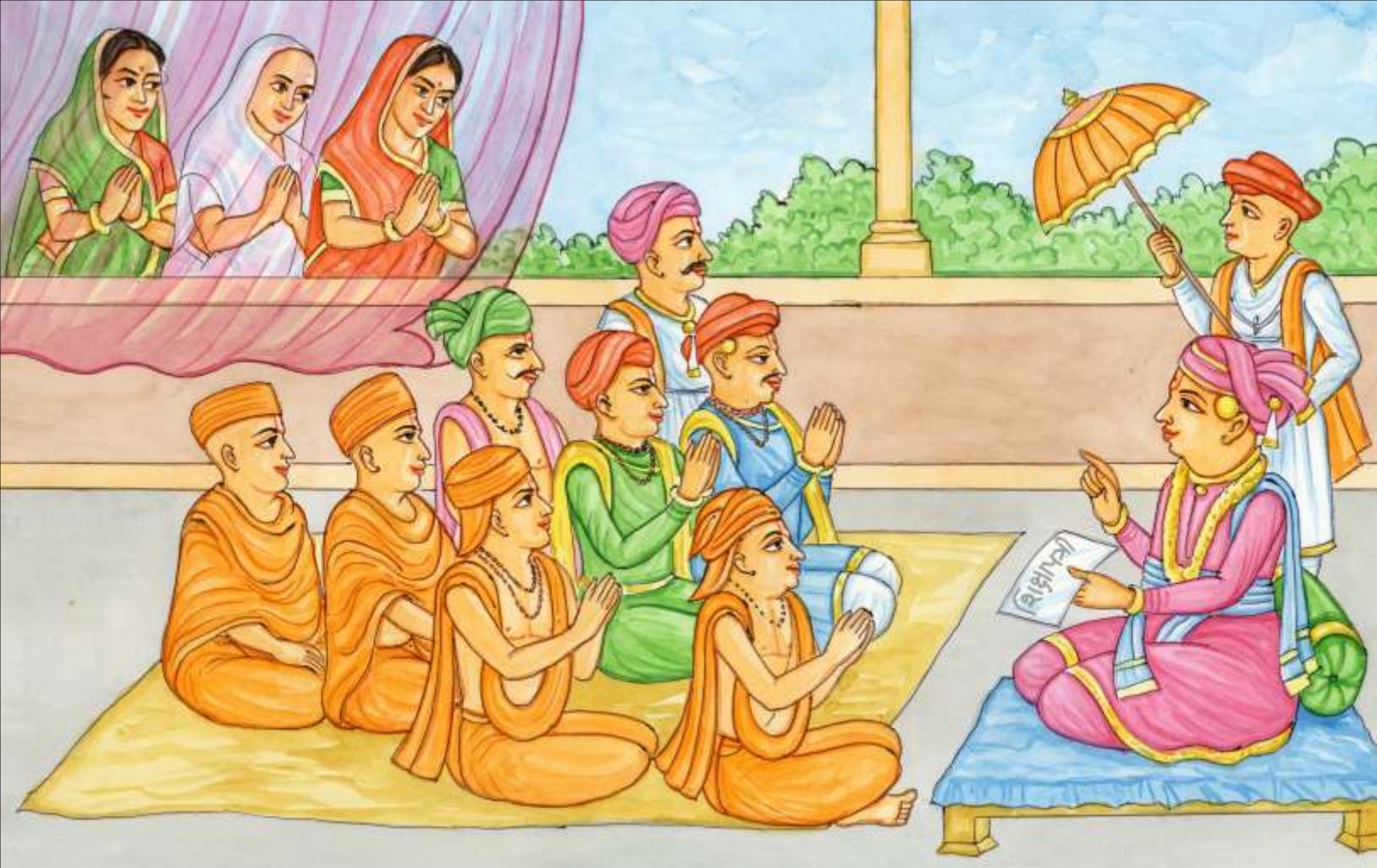


मतं विशिष्टाद्वैतं मे गोलोको धाम चेप्सितम् ।  
तत्र ब्रह्मात्मना कृष्णसेवा मुक्तिश्च गम्यताम् ॥१२१॥

अने अभारो जे भत, ते विशिष्टाद्वैत छे, ऐम जाणवुँ; अने अभने प्रिय ऐवुँ जे धाम ते गोलोक छे, ऐम जाणवुँ अने ते धामने विषे, ब्रह्मरूपे करीने जे श्रीकृष्ण भगवाननी सेवा करवी, तने अमे मुक्ति मानी छे, ऐम जाणवुँ ॥१२१॥

हमारा मत विशिष्टाद्वैत है, हमारा प्रिय धाम गोलोक है, और उस धाम में ब्रह्मरूप से श्रीकृष्ण भगवान् की सेवा करना उसी को हमने मुक्ति मानी हैं, ऐसा समझें ॥१२१॥

My philosophy rests in the theory of Vishishtaaadwait (a special theory of non-dualism). Golok Dham is my beloved abode. I believe Mukti (salvation) as being able to serve Lord Shree Krishna, in the sublime state, in Golok Dham. (121)



एते साधारणाः धर्माः पुंसां स्त्रीणां च सर्वतः ।  
मदाश्रितानां कथिता विशेषानन्थ कीर्तये ॥१२२॥

अने आ જે પૂર્વે સર્વે ધર્મ કહ્યા, તે જે તે અમારા આશ્રિત-જે ત્યાગી, ગૃહસ્થબાઈ, ભાઈ-સર્વે સત્સંગી-તેમના સામાન્ય ધર્મ કહ્યા છે; કહેતાં સર્વ સત્સંગી માત્રને સરખા પાળવાના છે. અને હવે એ સર્વેના જે વિશેષ ધર્મ છે તેમને પૃથક્ પૃથક્ કરીને કહીએ છીએ. ॥१२२॥

वें पूर्वोक्त સभી ધર્મ, हमारे आश्रित त्यागी तथा गृहस्थ-स्त्री पुरुष-सभी सत्संगीजनों के सामान्य धर्म है, अर्थात् सभी सत्संगीजनों द्वारा समानरूप से पालनीय हैं और अब इन सभीके विशेष धर्मोंको पृथक्-पृथक् रूप से कहते हैं ॥१२२॥

The codes of conduct described so far are the ones applicable equally to all My male and female disciples, and shall be followed accordingly. I shall now describe additional codes of conduct applicable to specific groups. (122)



मञ्छेष्ठावरजभातृसुताभ्यां तु कदाचन ।  
 स्वासन्नसम्बन्धहीना नोपदेश्या हि योषितः ॥१२३॥

उवे प्रथम धर्मवंशी जे आचार्य अने तेमनी पत्नीओ, तेमना जे विशेष धर्म, ते कहीओ, धीओ : अमारा भोटाभाई अने नानाभाई-तेमना पुत्र जे अयोध्याप्रसाद अने रघुवीर, तेमणे पोताना समीप संबंध विनानी जे बीछ स्त्रीओ, तेमने मंत्र-उपदेश, क्यारेय न करवो ॥१२३॥

अब प्रथम धर्मवंशी आचार्य तथा उनकी पत्नियों के विशेष धर्म कहते हैं - हमारे बड़े भाई तथा छोटे भाई के पुत्र ( क्रमशः ) जो अयोध्याप्रसादजी तथा रघुवीरजी हैं, वे अपने समीप सम्बन्ध रहित स्त्रियों को मंत्र उपदेश कदापिन करें ॥१२३॥

Firstly, I will describe the codes of conduct for the Acharyas, and their wives. My elder brother's son Ayodhyaprasad and My younger brother's son Raghuvir and their successors, shall never initiate or preach to females who are not closely related to them. (123)

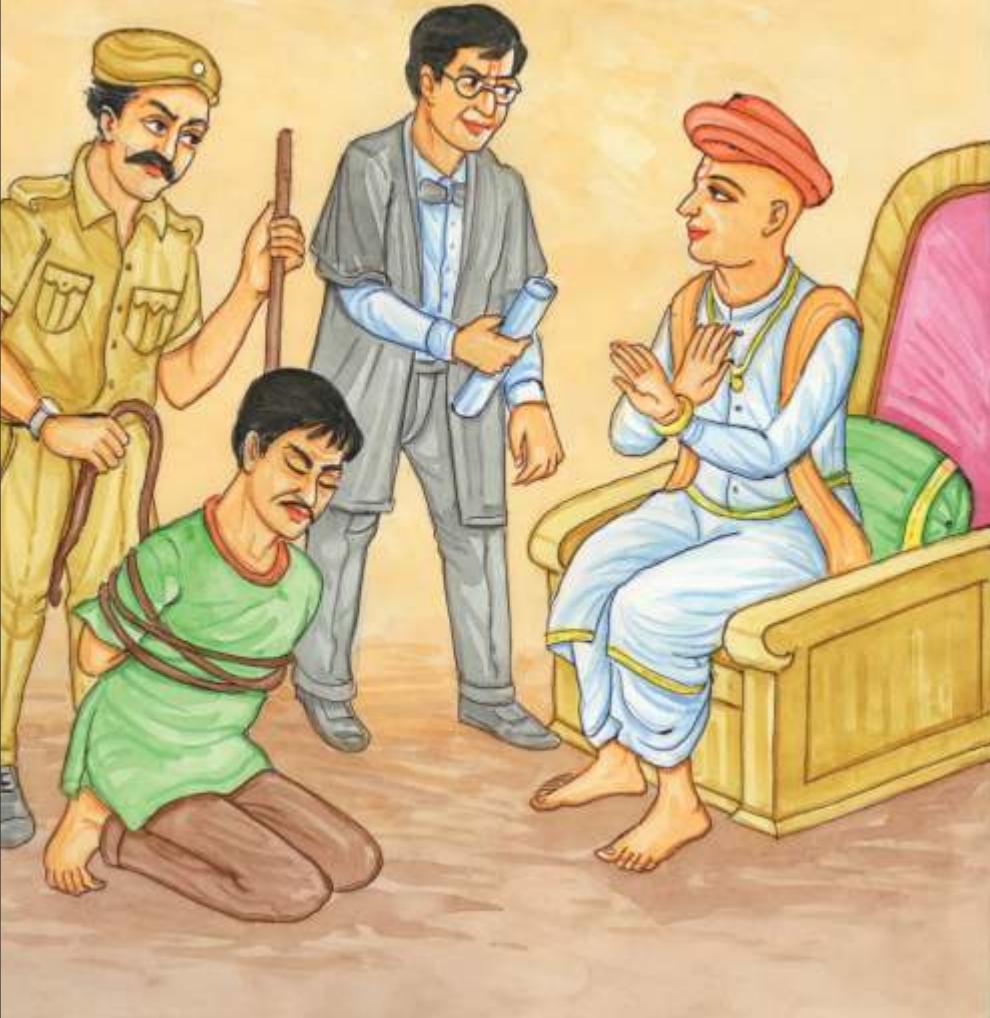


न स्पष्टव्याश्च ताः क्वापि भाषणीयाश्च ता नहि ।  
क्रोर्यं कार्यं न कश्मश्चिन्न्यासो रक्ष्यो न कस्यचित् ॥१२४॥

अने ते स्त्रीओने क्यारेय पशु अडवुं नहि अने ते साथे बोलवुं नहि अने कोई ज्वने विषे  
कुरपशुं न करवुं अने कोईनी थापशु न राखवी ॥१२४॥

और कभी उन स्त्रियों का स्पर्श न करें तथा न उनके साथ बात करें तथा किसी जीव पर  
कूरता न करें और किसी की धरोहर कदापि न रखें ॥१२४॥

They shall never touch or talk to females not closely related to them.  
They shall not be cruel to any living beings nor accept any deposits from anyone. (124)

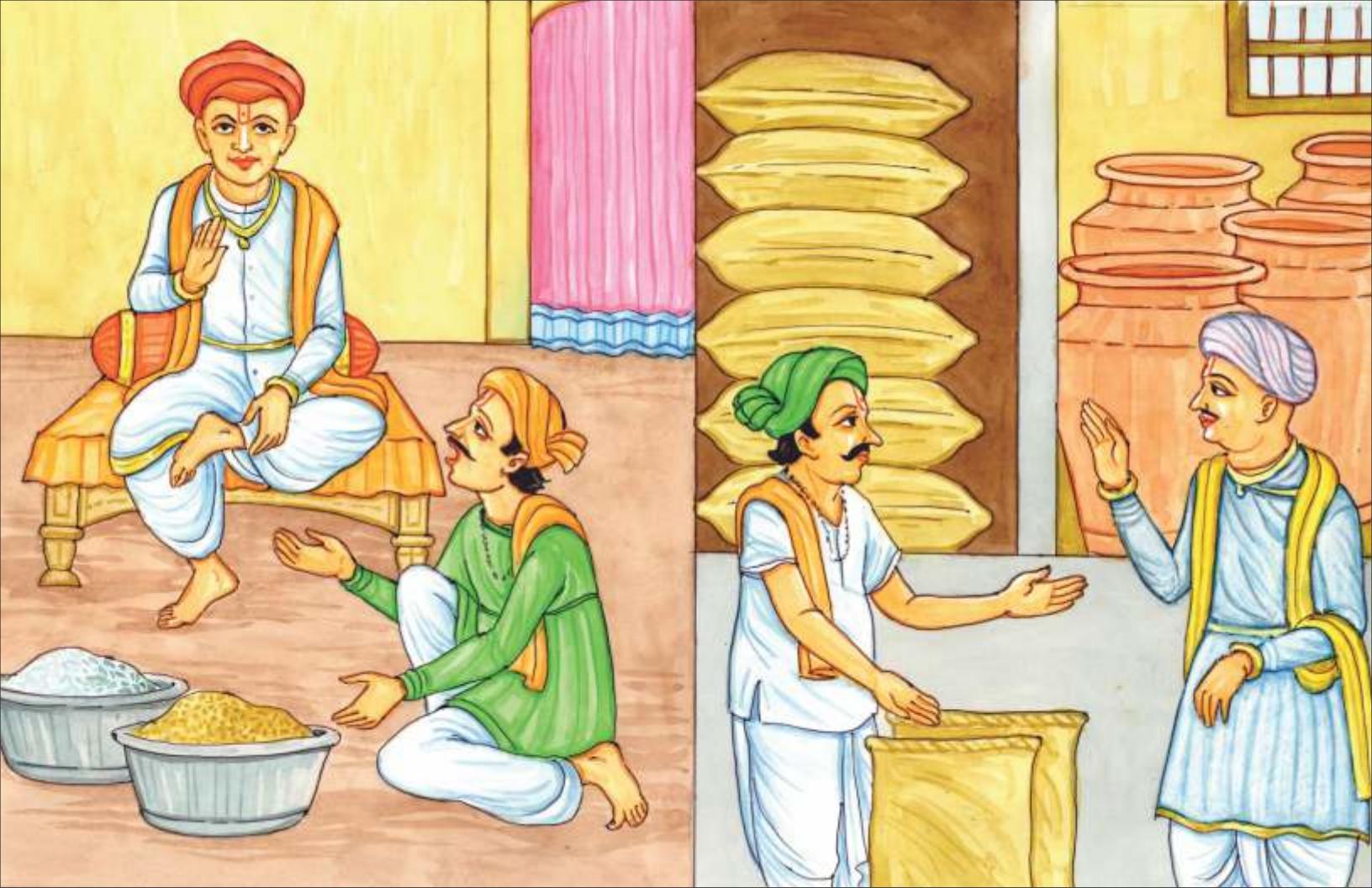


प्रतिभूत्वं न कस्यापि कार्यं च व्यावहारिके ।  
भिक्षायापदतिक्रम्या न तु कार्यमृणं क्वचित् ॥१२५॥

अने व्यवहार-कार्यने विषे केनुं पश जमानगरनुं न करवुं अने कोई आपत्काण आवी पडे तो भिक्षा मागीने पोतानो निर्वाह करीने ते आपत्काणने उल्लंघवो, पश कोई नुं करज तो क्यारेय न करवुं।  
॥१२५॥

व्यवहार कार्य में किसी को भी जामिनी न करें तथा कोई आपत्काल आ पडे तो भिक्षा से जीवन निर्वाह करके आपत्काल पार करे, परन्तु किसी से कर्ज तो कदापि न लें ॥१२५॥

They shall never stand as surety for others in social matters. In the event of hardship they shall subsist on alms but never incur debts. (125)



स्वशिष्यापितधान्यस्य कर्तव्यो विक्रयो न च ।  
जीर्ण दत्वा नवीनं तु ग्राह्यं तत्रैष विक्रयः ॥१२६॥

अने पोताना जे शिष्य, तेमणे धर्म निभिते पोताने आप्युं जे अन्न, ते वेच्यवुं नहि; अने ते अन्न, जूनुं थाय तो ते जूनुं कोईकने दैर्हने नवुं लेवुं; अने ऐवी रीते जे जूनानुं नवुं करवुं, ते वेच्युं न कहेवाय. ॥१२६॥

अपने शिष्योंने धर्म के निमित्त से जो अन्न दिया हो उसको बेचे नहीं, यदि वह अन्न पुराना हो जाय तो पुराना किसी को देकर नया लेना। इस प्रकार पुराने का नया लेना यह विक्रय नहीं माना जाता ॥१२६॥

They shall never sell food grains offered to them by their disciples. However, old cereals may be exchanged for new, as such an exchange is not considered as a sale. (126)



भाद्रशुक्लचतुर्थ्या च कार्यं विध्नेशपूजनम् ।  
इषकृष्णचतुर्दश्यां कार्याऽर्चा च हनूमतः ॥१२७॥

अने भाद्रवा सुटी चतुर्थीने दिवसे गणपतिनी पूजा करवी तथा आसो वटी चतुर्दशीने दिवसे हनुमानज्ञनी पूजा करवी ॥१२७॥

और भाद्रपद शुक्ल चतुर्थी के दिन गणपति की पूजा करें तथा आश्विन कृष्ण चतुर्दशी के दिन हनुमानजी की पूजा करें ॥१२७॥

They shall perform the worship of Shree Ganapati on the fourth day of the first half of the month of Bhadrapad, and that of Hanuman on the fourteenth day of the second half of the month of Ashwin. (127)

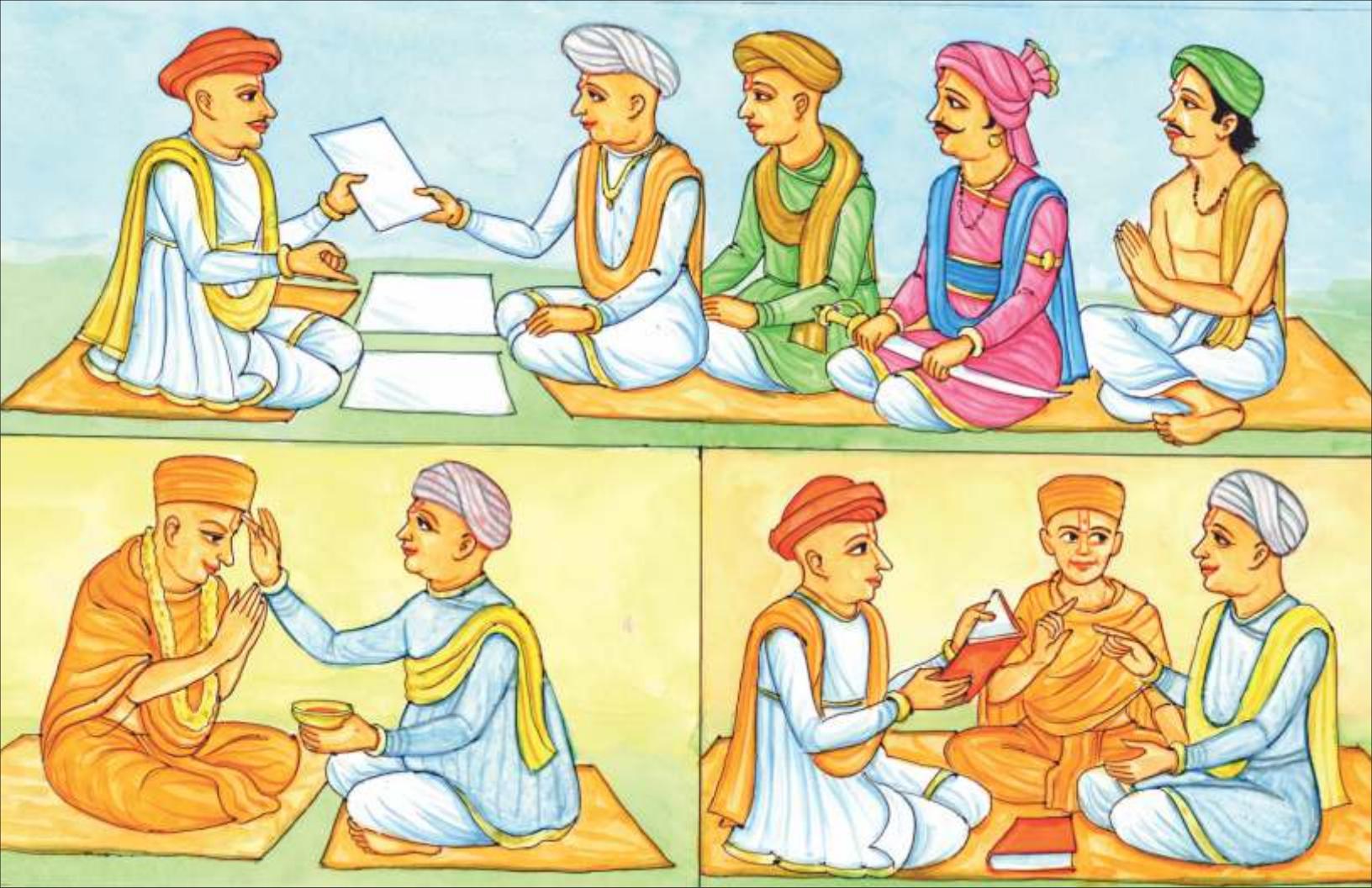


मदाश्रितानां सर्वेषां धर्मरक्षणहेतवे ।  
गुरुत्वे स्थापिताभ्यां च ताभ्यां दीक्ष्या मुमुक्षवः ॥१२८॥

अने अमारे आश्रित जे सर्वे सत्संगी, तेमना धर्मनी रक्षा करवाने अर्थे ए सर्वेना गुरुपण्डाने विशे, अमे स्थापन कर्या, ऐवा जे ते अयोध्याप्रसाद अने रघुवीर, तेमाणे मुमुक्षु जनने दीक्षा आपवी।  
॥१२८॥

हमारे आश्रित सभी सत्संगी जनों के धर्म की रक्षा के लिए उन सभी के आचार्य पद पर हमारे द्वारा स्थापित जो दोनों आचार्य अयोध्याप्रसादजी तथा रघुवीरजी वे मुमुक्षु जनों को ( भागवती ) दीक्षा दें ॥१२८॥

I have enthroned two Acharyas as spiritual leaders in order to defend and preserve the religion of all My disciples. They shall initiate My faith, to those male aspirants who desire salvation. (128)



यथाधिकारं संस्थाप्याः स्वे स्वे धर्मे निजाश्रिताः ।  
मान्याः सन्तश्च कर्तव्यः सच्छास्त्राभ्यास आदरात् ॥१२९॥

अने पोताना आश्रित जे सर्वे सत्संगी, तेमने, अधिकार प्रभाषे पोतपोताना धर्मने विषे राखવा अने साधुने आदर थकी मानवा. तथा सच्छास्त्रनो अभ्यास आदर थकी करवो. ॥१२९॥

और अपने आश्रित सभी सत्संगी जनोंको अधिकानुसार अपने अपने धर्म में रखें और साधुओं को आदरपूर्वक मानें तथा सच्छास्त्र का अध्ययन आदरपूर्वक करें ॥१२९॥

They shall see that all disciples conform to their respective Dharmas. They shall treat all saintly persons with respect and study Satshastras with reverence. (129)



मया प्रतिष्ठापितानां मन्दिरेषु महत्सु च ।  
लक्ष्मीनारायणादीनां सेवा कार्या यथाविधि ॥१३०॥

अने भोटां जे भंडिर-तेमने विषे अमे स्थापन कर्या ऐवां जे श्रीलक्ष्मीनारायण आदिक  
श्रीकृष्णानां स्वरूप, तेमनीजे सेवा, ते यथा विधिए करीने करवी ॥१३०॥

हमारे द्वारा बड़े बड़े मंदिरो में संस्थापित श्रीलक्ष्मीनारायणादि श्रीकृष्णके स्वरूपों की सेवा  
यताविधि करें ॥१३०॥

They shall serve with due rites, Shree Laxminarayan and other images  
of Lord Shree Krishna installed by Me in the prominent temples. (130)

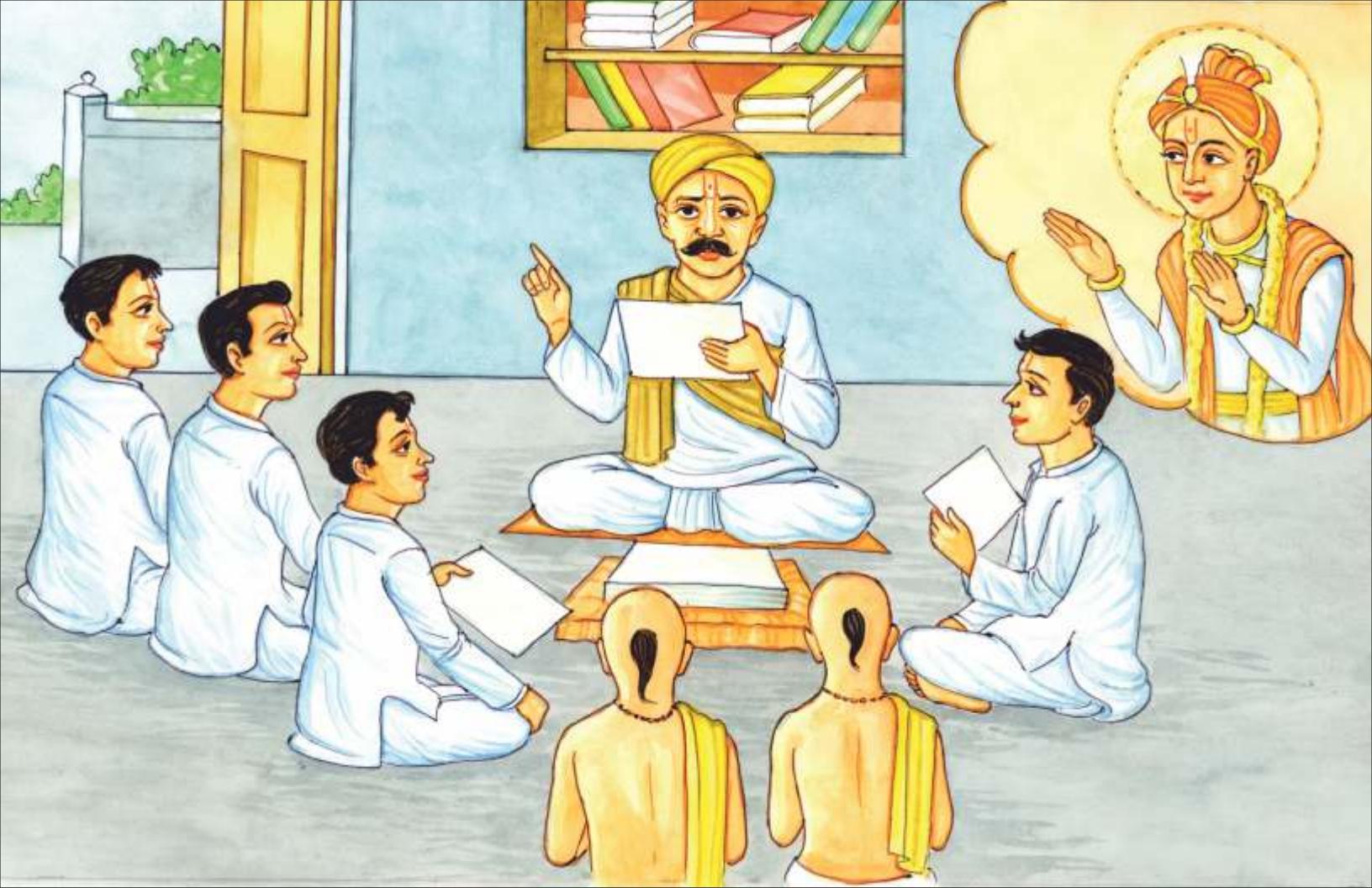


भगवन्मन्दिरं प्राप्तो योऽन्नार्थी कोऽपि मानवः ।  
आदरात्स तु सम्भाव्यो दानेनान्नस्य शक्तिः ॥१३१॥

अने भगवानना मंदिर प्रत्ये आत्यो, जे हरकोई अन्नार्थी मनुष्य, तेनी पोताना सामर्थ्य प्रमाणे अन्नना दाने करीने आदर थकी संभावना करवी ॥१३१॥

भगवान् के मंदिर में आये हुए किसी भी अन्नार्थी ऐसे हर एक मनुष्य की अपनी शक्तिके अनुसार अन्नदान द्वारा आदरपूर्वक संभावना करें ॥१३१॥

They shall give food to those people who come to the temple in need of food and treat them with due hospitality according to their means. (131)



संस्थाप्य विग्रं विद्वांसं पाठशालां विधाप्य च ।  
प्रवर्तनीया सद्विद्या भुवि यत्सुकृतं महत् ॥१३२॥

अने विद्यार्थी भण्डाव्यानी शाणा करावीने, पछी तेमां एक विद्वान ब्राह्मणने राखीने, पृथ्वीने विषे सद्विद्यानी प्रवृत्ति कराववी; केम जे विद्यादाने करीने भोटुं पुण्य थाय छे ॥१३२॥

और विद्याध्ययन के लिए पाठाशाला स्थापित करके उसमें विद्वान ब्राह्मण को रखकर पृथ्वी पर सद्विद्या का प्रवर्तन करावें क्योंकि विद्यादान से महान् पुण्य होता है ॥१३२॥

They shall establish educational institution and appoint Brahmin scholars to impart true knowledge on the Earth, as propagation of true knowledge is an act of great benediction. (132)

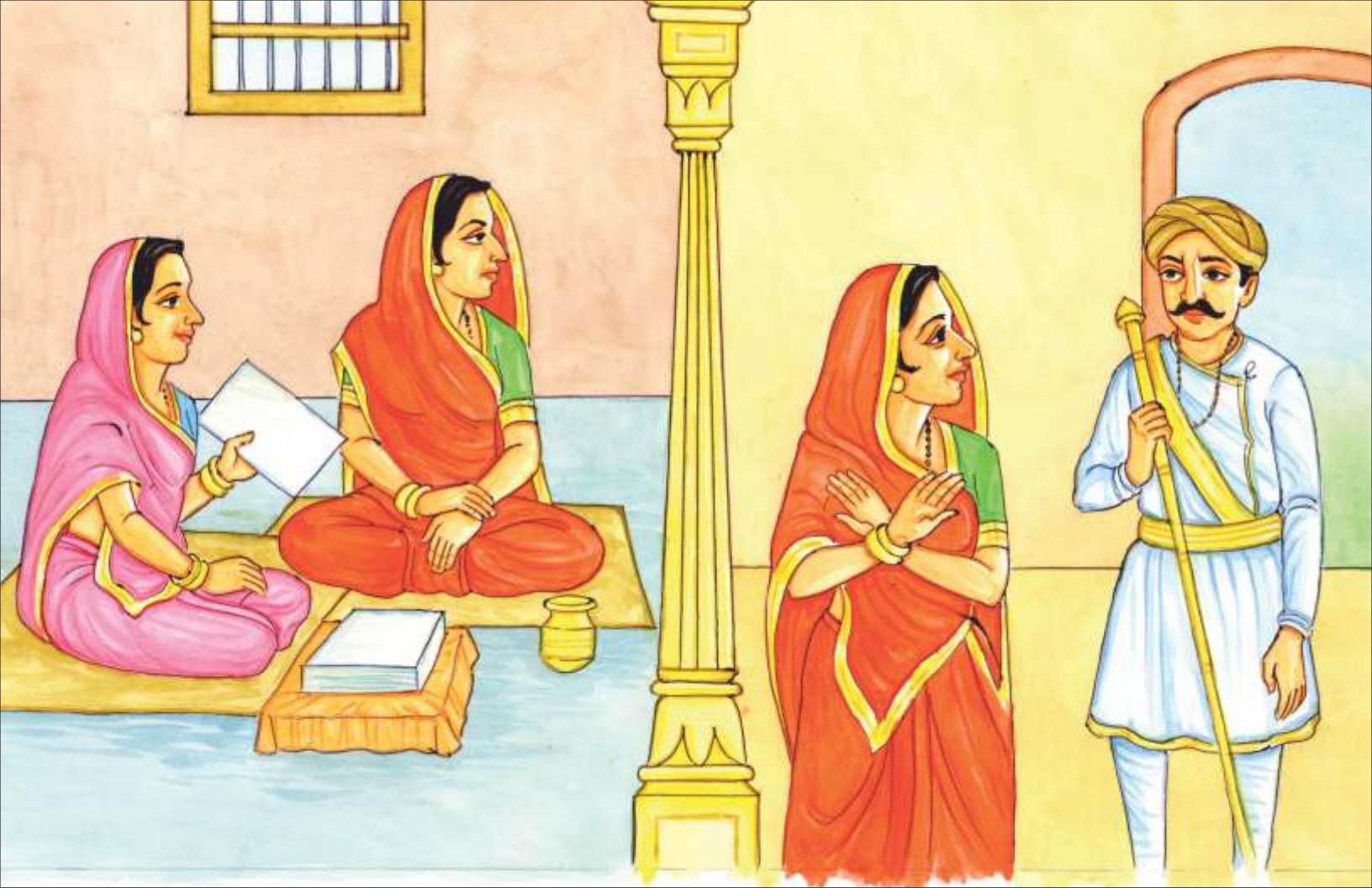


अथैतयोस्तु भार्याभ्यामाज्ञया पत्युरात्मनः ।  
कृष्णमन्त्रोपदेशश्च कर्तव्यः स्त्रीभ्य एव हि ॥१३३॥

अने हવे ए अयोध्याप्रसाद अने रघुवीर ए बेनी जे पत्नीओ, तेमणे पोतपोताना, पतिनी आज्ञाए करीने, स्त्रीओने ज श्रीकृष्णना मंत्रनो उपदेश करवो, पश पुरुषने न करवो. ॥१३३॥

अब अयोध्याप्रसादजी तथा रघुवीरजी, इन दोनों की जो पत्नियाँ हैं वे अपने पति की आज्ञा से स्त्रियों को ही श्रीकृष्ण के मन्त्र का उपदेश करें, परन्तु पुरुषको मन्त्र उपदेश न करें ॥१३३॥

The wives of the Acharyas, with the permission of their husbands shall initiate, preach and give Shree Krishna Mantra to females only. (133)

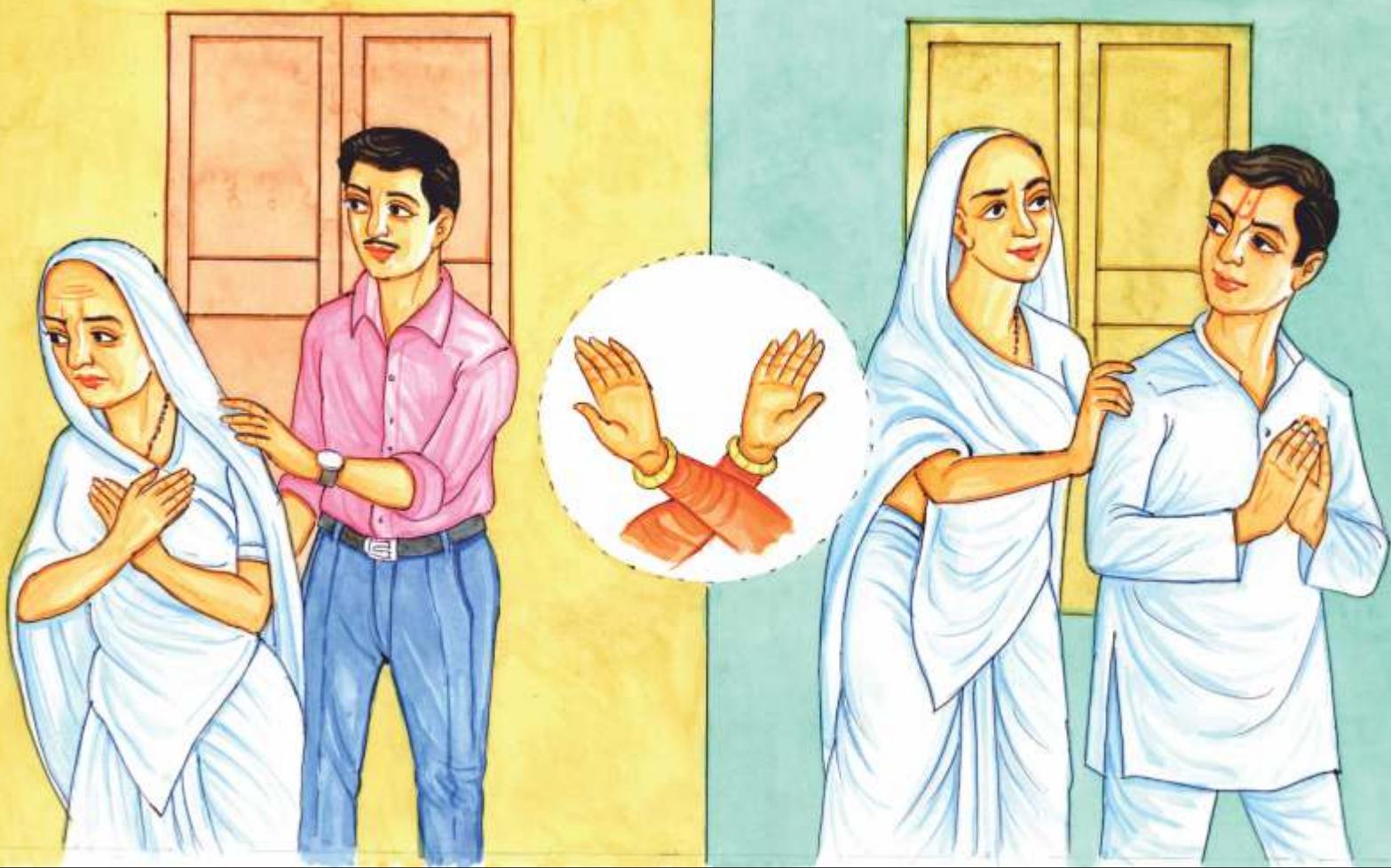


स्वासन्नसम्बन्धीना नरास्ताभ्यां तु कर्हिचित् ।  
न स्पृष्टव्या न भाष्याश्व तेभ्यो दर्श्य मुखं न च ॥१३४॥

अने वणी ते बे जणनी जे पत्नीओ, तेमाणे पोताना सभीप संबंध विनाना जे पुरुष तेमनो स्पर्श क्यारेय न करवो, अने तेमनी साथे बोलवुं नहि, ने अभने पोतानुं मुख पश्न न टेखाइवुं (अवी रीते धर्मवंशी आचार्य अने तेमनी पत्नीओ तेमना जे विशेष धर्म छे ते कह्या) ॥१३४॥

उन दोनों की पत्नियाँ अपने सभीप सम्बन्ध रहित पुरुषों का स्पर्श कदापि न करें और उसके साथ बात भी न करें तथा उन्हें अपना मुख भी न दिखावें (इस प्रकार धर्मवंशी आचार्य और उनकी पत्नियों के धर्म कहे गये) ॥१३४॥

They shall not touch, talk or even show their faces to males, except those who are closely related. (134)



ગૃહાખ્યાશ્રમિણો યે સ્યુઃ પુરુષા મદુપાશ્રિતાઃ ।  
સ્વાસન્નસમ્બન્ધહીના ન સ્પૃશ્યા વિધવાશ્ર તૈઃ ॥૧૩૫॥

હવે ગૃહસ્થાશ્રમીના જે વિશેષ ધર્મ છે, તે કહીએ છીએ : અમારે આશ્રિત જે, ગૃહસ્થાશ્રમી  
પુરુષ તેમણે પોતાના સમીપ સંબંધ વિનાની જે વિધવા સ્ત્રીઓ, તેમનો સ્પર્શ ન કરવો. ॥૧૩૫॥

अब गृहस्थाश्रमियों के विशेष धर्म कहते हैं - हमारे आश्रित गृहस्थाश्रमी पुरुष अपने समीप  
सम्बन्ध रहित विधवा स्त्रियों का स्पर्श न करें ॥१३५॥

My disciples who are male householders shall not touch widows except those who are closely related to them. (135)



मात्रा स्वस्त्रा दुहित्रा वा विजने तु वयःस्थया ।  
अनापदि न तैः स्थेयं कार्यं दानम् न योषितः ॥१३६॥

अने ते गृहस्थाश्रमी पुरुष, तेभाषे युवान अवस्थाए युक्त ऐवी जे पोतानी मा, बहेन अने दिकरी, ते संगाथे पशा आपत्काण विना एकांत स्थलने विषे न रहेवुं अने पोतानी स्त्रीनुं दान कोईने न करवुं ॥१३६॥

और वे गृहस्थाश्रमी पुरुष युवा अवस्था युक्त अपनी माता, बहन, एवं पुत्री के साथ भी बिना आपत्काल एकान्त स्थल में न रहें और अपनी स्त्री का दान किसी को न करें ॥१३६॥

They shall never remain in a secluded place with their mothers, sisters or daughters who are young, except in unavoidable circumstances and shall never give away their wives to anybody. (136)

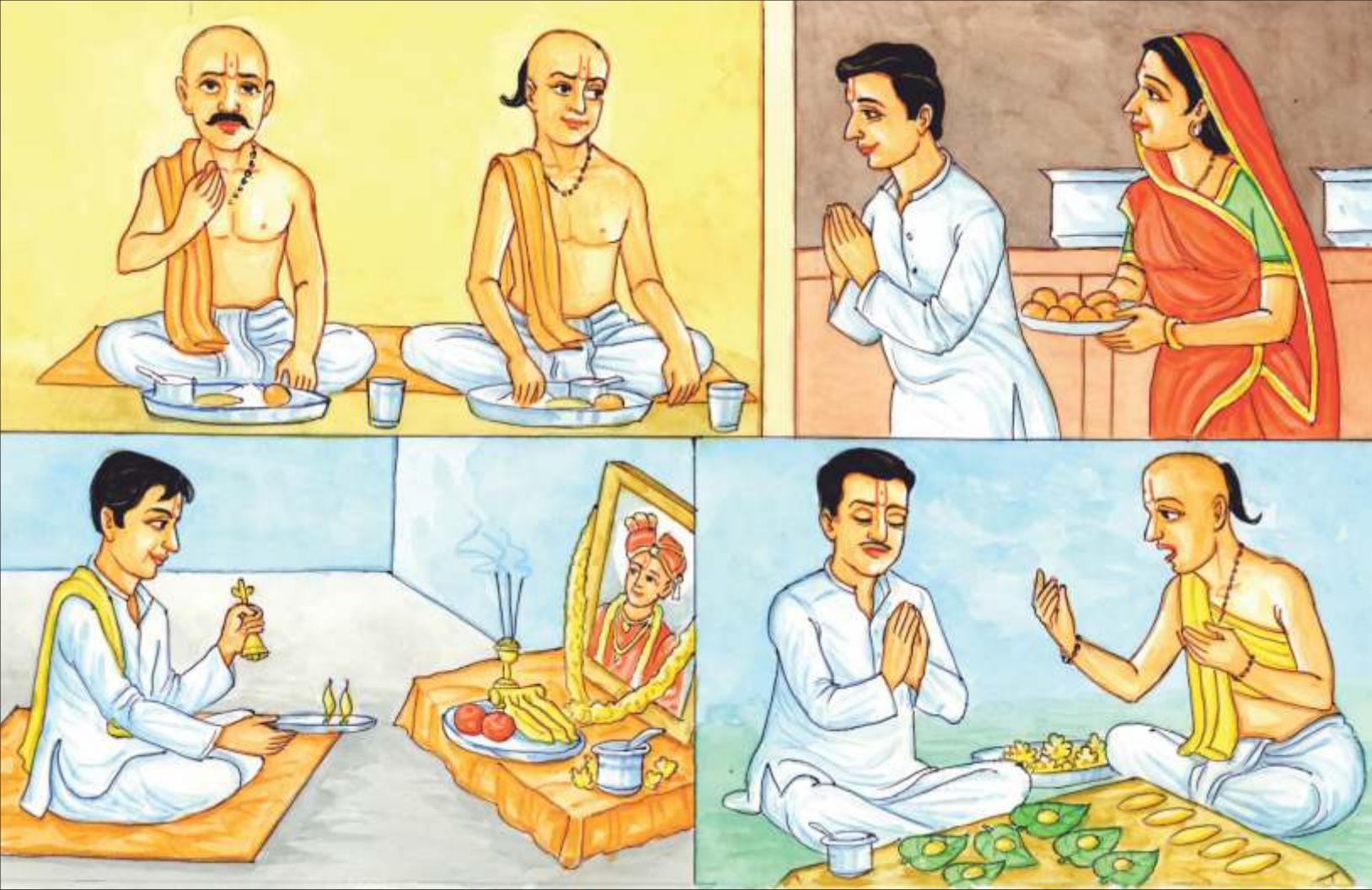


प्रसङ्गो व्यवहारेण यस्याः केनापि भूपतेः ।  
भवेत्तस्याः स्त्रियाः कार्यः प्रसङ्गो नैव सर्वथा ॥१३७॥

अने जे स्त्रीने कोई प्रकारना व्यवहारे करीने, राजानो प्रसंग होय तेवी स्त्रीनो जे प्रसंग ते,  
कोई प्रकारे पाण न करवो. ॥१३७॥

और जिस स्त्री का किसी प्रकार के व्यवहार द्वारा राजा से सम्बन्ध हो, ऐसी स्त्री से किसी भी  
प्रकार के सम्बन्ध न रखें ॥१३७॥

They shall not associate with a woman who has contacts with rulers.  
(137)

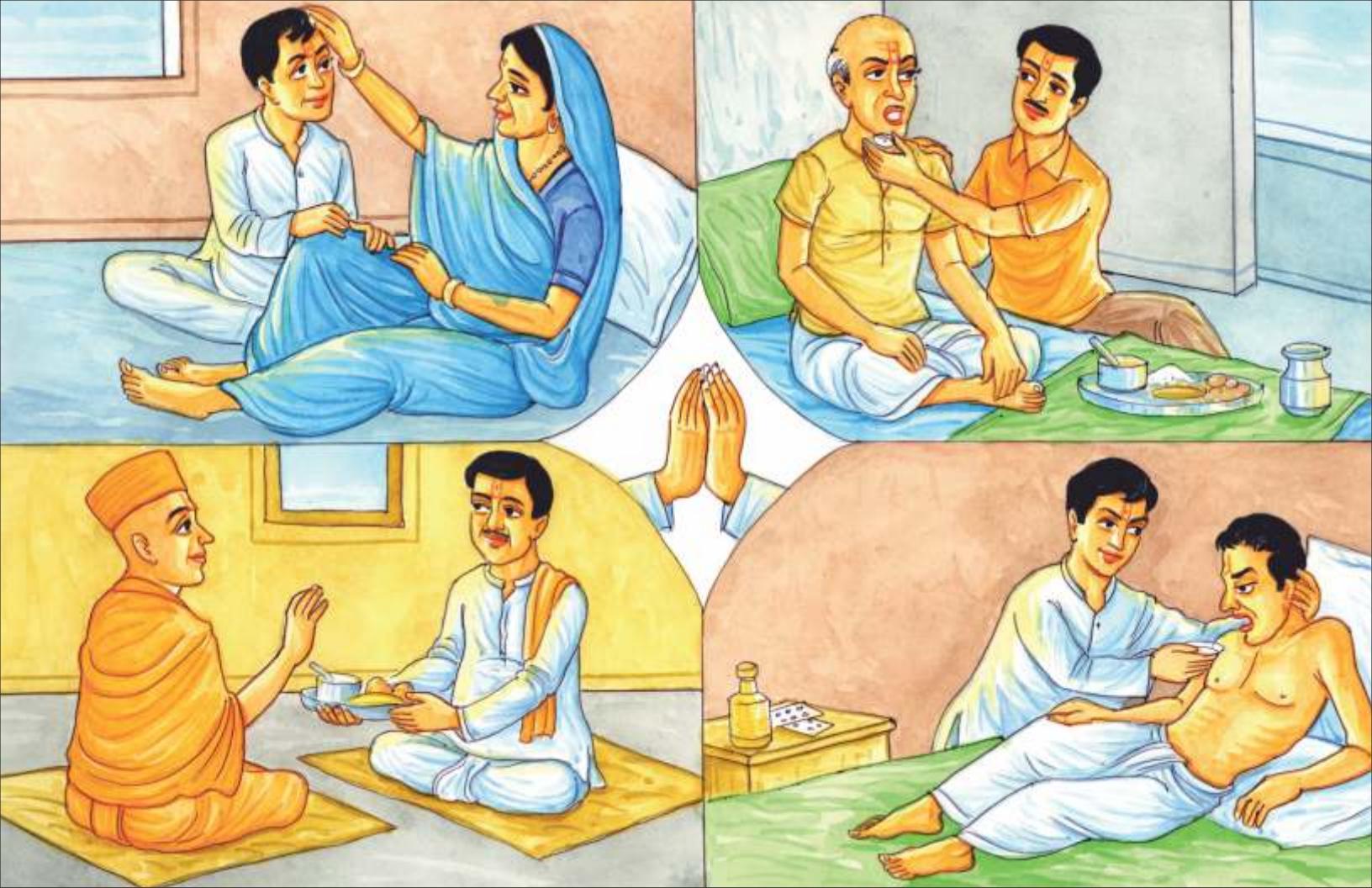


अन्नाद्यैः शक्तितोऽभ्यर्च्यो ह्यतिथिस्तैगृहागतः ।  
दैवं पैत्रं यथाशक्ति कर्तव्यं च यथोचितम् ॥१३८॥

अने ते गृहस्थाश्रमी, तेमाणे पोताने घेर आव्यो ऐवो जे अतिथि, तेने, पोताना सामर्थ्य प्रमाणे अन्नादिके करीने पूजवो; अने वणी होमादिक जे देवकर्म अने श्राद्धादिक जे पितृकर्म, ते जे ते पोताना सामर्थ्य प्रमाणे यथाविधि जेम घटे तेम करवुं ॥१३८॥

वे गृहस्थाश्रमी अपने घर पर आये हुए अतिथि का अपनी शक्ति के अनुसार अन्नादि से सल्कार करें तथा होमादिक देवकर्म एवं श्राद्ध आदि पितृकर्म अपने सामर्थ्य के अनुसार यथाविधि-जैसे उचित हो वैसे करें ॥१३८॥

They shall welcome and entertain with food, drink, etc., according to their means, anyone who comes to their house as a guest, They shall perform with due respect, sacrificial rites to deities and oblational rites to Pitrīs (ancestors), according to their abilities. (138)

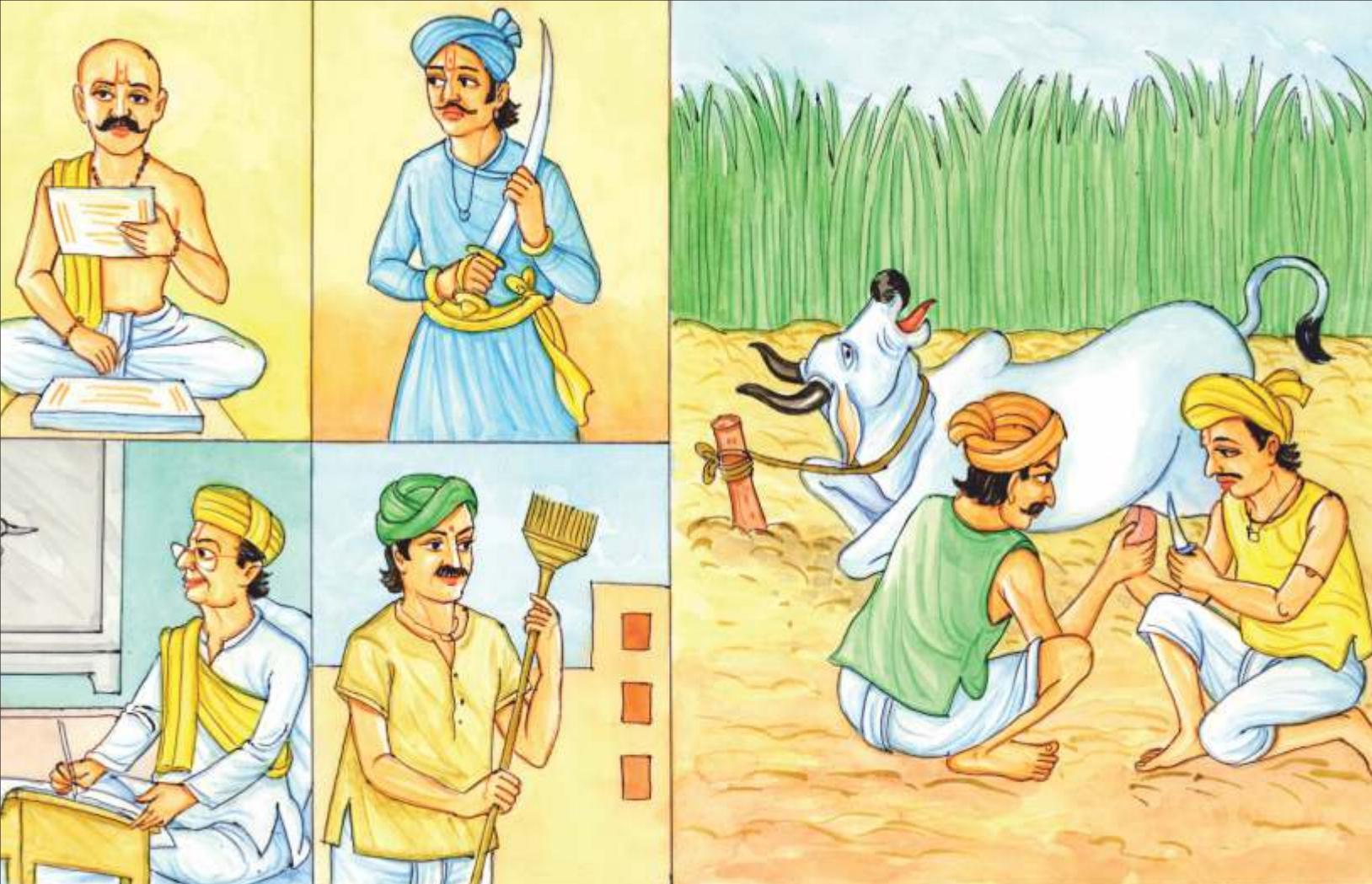


यावज्जीवं च शुश्रूषा कार्या मातुः पितुर्गुरोः ।  
रोगार्तस्य मनुष्यस्य यथाशक्ति च मामकैः ॥१३९॥

अने अमारा आश्रित जे गृहस्थ, तेमणे माता-पिता अने गुरु तथा रोगातुर ऐवा जे कोई  
मनुष्य, तेमनी जे सेवा, ते ज्ञवनपर्यंत पोताना सामर्थ्य प्रमाणे करवी। ॥१३९॥

हमारे आश्रित जो गृहस्थ हैं वे माता, पिता, गुरु तथा कोई भी रोगातुर मनुष्य उनकी सेवा  
जीवन पर्यंत अपने सामर्थ्यानुसार करें। ॥१३९॥

My disciples shall render lifelong services to their parents, guru and  
ailing persons according to their abilities. (139)



यथाशक्त्युद्यमः कार्यो निजवर्णश्रमोचितः ।  
मुष्कच्छेदो न कर्तव्यो वृषस्य कृषिवृत्तिभिः ॥१४०॥

अने वणी पोताना वर्षांश्रमने घटित ऐवो जे उद्यम, ते पोताना सामर्थ्य प्रमाणे करवो अने  
कृषिवृत्तिवाणा जे गृहस्थ सत्संगी, तेमाणे बण्टियाना वृषाशनो उच्छेद न करवो ॥१४०॥

अपने वर्णश्रम के योग्य उद्यम अपने सामर्थ्यानुसार करें और कृषिवृत्तिवाले गृहस्थ  
सत्संगी बैल के वृषण का उच्छेद न करें ॥१४०॥

They shall take vocations suitable to their social status, according to  
their abilities. Farmers shall never castrate the bulls. (140)



यथाशक्ति यथाकालं सद्ग्रहोऽन्नधनस्य तैः ।  
यावद्व्ययं च कर्तव्यः पशुमद्दिस्तृणस्य च ॥१४१॥

अने ते गृहस्थ सत्संगी, तेमाणे पोताना सामर्थ्य प्रभाणे समयने अनुसरीने जेटलो पोताना धरमां वरो होय, तेटलां अन्न-द्रव्यनो संग्रह जे ते करवो, अने जेना धरमां पशु होय ऐवा जे गृहस्थ, तेमाणे पोताना सामर्थ्य प्रभाणे चार्यपूणानो संग्रह करवो. ॥१४१॥

और वे गृहस्थ सत्संगी अपने सामर्थ्य और समय के अनुसार अपने घर में जितना खर्च-व्यय होता हों उतने अन्न-द्रव्य का संग्रह करें और जिनके घर में पशु हों, वे गृहस्थ अपनी शक्ति के अनुसार घास-चारेका संग्रह करें ॥१४१॥

They shall store food and accumulate wealth for their future requirements according to their circumstances and their abilities. Those who own cattle shall store sufficient stock of fodder. (141)



गवादीनां पशूनां च तृणतोयादिभिर्यदि ।  
सम्भावनं भवेत्स्वेन रक्ष्यास्ते तर्हि नान्यथा ॥१४२॥

अने गाय, बण्ठ, भेंस, घोड़ा आदिक जे पशु तेमनी तृण-जणाडिके करीने पोतावते जो संभावना थाय, तो ते पशुने राखवां, अने जो संभावना न थाय, तो न राखवां ॥१४२॥

गाय, बैल, भेंस, घोड़े आदि जो पशु, उनको यदि घासपानी द्वारा स्वयं संभाल सकें, तभी उनको रखें, अगर देख-भाल न हो सके तो उन्हेन रखें ॥१४२॥

They shall keep cows, and other cattle only if they are capable of taking care of them with fodder, water, etc., otherwise they shall not keep them. (142)

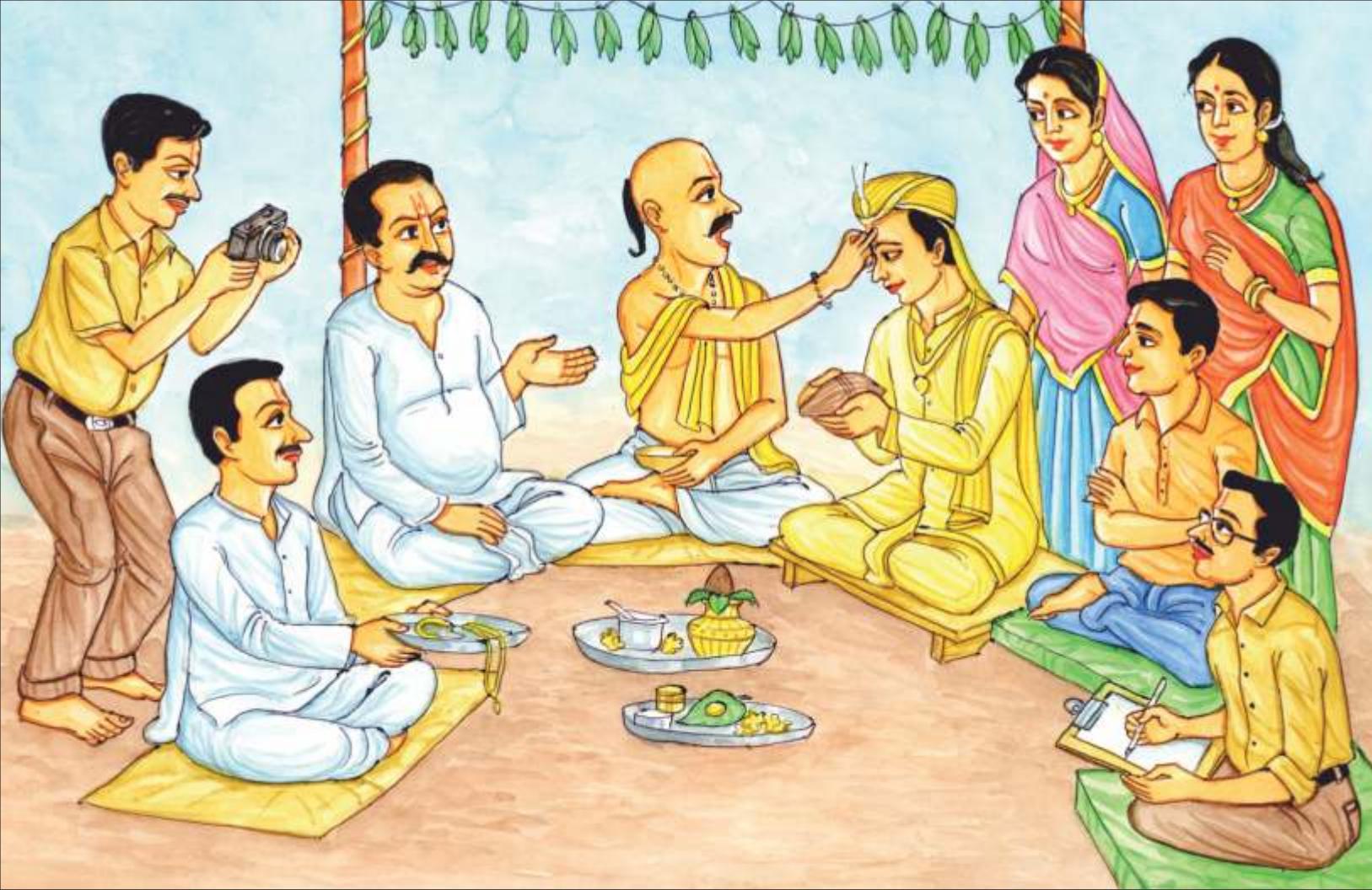


ससाक्ष्यमन्तरा लेखं पुत्रमित्रादिनाऽपि च ।  
भूवित्तदानादानाभ्यां व्यवहार्यं न कर्हिचित् ॥१४३॥

अने साक्षीं सहित लघत कर्या विना तो पोताना पुत्र अने मित्रादिक साथे पशा पृथ्वी ने धनना लेण्डेणे करीने व्यवहार, जे ते क्यारेय न करवो ॥१४३॥

साक्षि सहित लेख के बिना तो अपने पुत्र तथा मित्रादिक के साथ भी पृथ्वी और धन के लेन-देन का व्यवहार कदापि न करें ॥१४३॥

They shall not undertake any sort of dealings pertaining to land or money even with their sons or friends without a written document duly witnessed. (143)



कार्ये वैवाहिके स्वस्थान्यस्य वाऽर्प्यधनस्य तु ।  
भाषाबन्धो न कर्तव्यः ससाक्ष्यं लेखमन्तरा ॥१४४॥

अने पोतानुं अथवा भीजानुं जे विवाह संबंधी कार्य, तेने विषे आपवा योग्य जे धन, तेनुं साक्षीऐ सहित लभत कर्याविना केवળ बोली जन करवी. ॥१४४॥

और अपने अथवा दूसरे के विवाह सम्बन्धी कार्य में दिये जानेवाले धन के संबंध में साक्षी सहित लेख किये बिना केवल मौखिक वादा न करें ॥१४४॥

One shall not rely merely on oral agreements with regard to amounts payable by either party in matrimonial affairs, but such agreements shall be in writing and duly witnessed. (144)



आयद्रव्यानुसारेण व्ययः कार्यो हि सर्वदा ।  
अन्यथा तु महद्दुःखं भवेदित्यवधार्यताम् ॥१४५॥

अने पोतानी ઉપજનું જે દ્રવ્ય, તેને અનુસારે નિરંતર ખર્ચ કરવો, પણ તે ઉપરાંત ન કરવો;  
અને જે ઉપજ કરતાં વધારે ખર્ચ કરે છે, તેને મોટું દુઃખ થાય છે, એમ સર્વે ગૃહસ્થોએ મનમાં જાણવું.  
॥१४५॥

अपनी आय के अनुसार ही निरंतर व्यय करें परंतु उससे अधिक व्यय न करें और जो आय से  
अधिक व्यय करते हैं वे बहुत दुःखी होते हैं ऐसा सभी गृहस्थ समझें ॥१४५॥

They shall spend money according to their income. Those who spend more than their income put themselves into severe difficulties. (145)



द्रव्यस्यायो भवेद्यावान् व्ययो वा व्यावहारिके ।  
तौ संस्मृत्य स्वयं लेख्यौ स्वक्षरैः प्रतिवासरम् ॥१४६॥

अने पोताना व्यवहारकार्यने विषे जेटला धननी उपज होय तथा जेटलो खर्च होय, ते बेयने संभारीने नित्य प्रत्ये रुडा अक्षरे करीने पोते तेनुं नामुं लखवुं ॥१४६॥

अपने व्यवहारकार्य में जितने धन की आमदनी हो तथा जितना व्यय हो, इन दोनों को याद करके प्रतिदिन सुन्दर अक्षरों में स्वयं उनका हिसाब लिखें ॥१४६॥

They shall keep daily records of their income and expenditure relating to their social affairs in their own legible handwriting. (146)



निजवृत्त्युद्यमप्राप्नधनधान्यादितश्च तैः ।  
अप्यो दशांशः कृष्णाय विंशोऽशस्त्वह दुर्बलैः ॥१४७॥

अने ते गृहस्थाश्रमी सत्संगी तेमणे, पोतानी जे वृत्ति अने उद्यम, ते थकी पाख्युं जे धनधान्यादिक, ते थकी दसभो भाग काढीने श्रीकृष्ण भगवानने अर्पण करवो; अने जे व्यवहारे दुर्बल होय, तेमणे वीसभो भाग अर्पण करवो. ॥१४७॥

और वे गृहस्थाश्रमी सत्संगी अपनी वृत्ति एवं उद्यम से प्राप्त धन-धान्यादि में से दसवाँ हिस्सा निकाल कर श्रीकृष्ण भगवान् को अर्पण करें और जो व्यवहार में दुर्बल हों वे बीसवाँ हिस्सा अर्पण करें ॥१४७॥

They shall donate one tenth of their earnings, money or food grains, to Lord Shree Krishna. Those with small income shall offer one twentieth. (147)

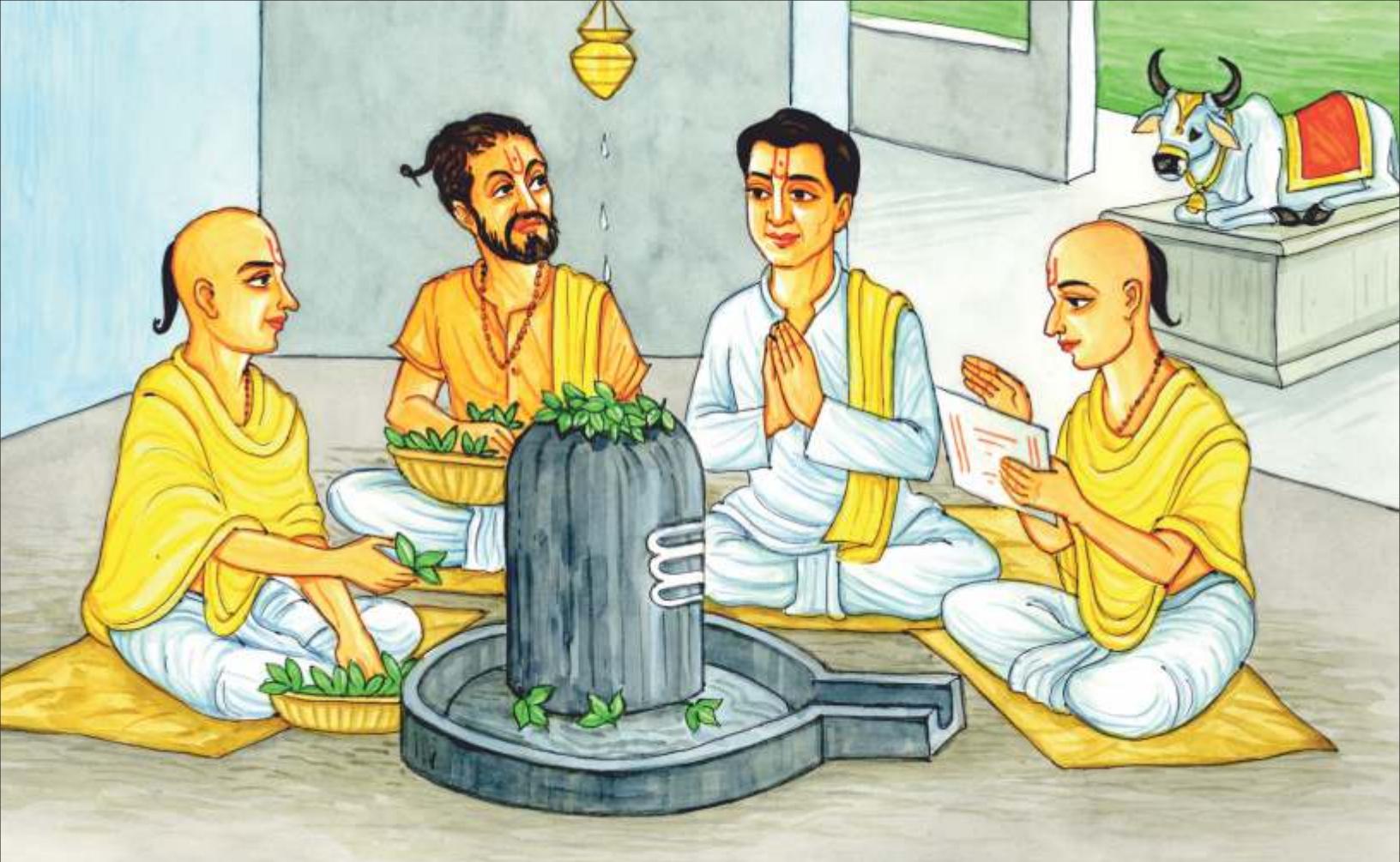


एकादशीमुखानां च व्रतानां निजशक्तिः ।  
उद्यापनं यथाशास्त्रं कर्तव्यं चिन्तितार्थदम् ॥१४८॥

अने एकादशी आदिक जे व्रत, तेमनुं जे उद्यापन ते जे ते पोताना सामर्थ्य प्रमाणे यथाशास्त्र करवुँ; ते उद्यापन केवुँ छे, तो मनवांछित फलनुं आपनालूँ छे. ॥१४८॥

ऐकादशी आदि जो व्रत, उनका उद्यापन अपने सामर्थ्यानुसार यथाशास्त्र करें, क्योंकि यह उद्यापन मनोवांछित फल को देनेवाला है ॥१४८॥

The concluding ceremonies of Vrat such as Ekadashi and others, shall be performed and celebrated as prescribed in religious scriptures and according to their means. The concluding ceremonies so performed fulfill one's aspirations. (148)



कर्तव्यं कारणीयं वा श्रावणे मासि सर्वथा ।  
बिल्वपत्रादिभिः प्रीत्या श्रीमहादेवपूजनम् ॥१४९॥

अने श्रावण मासने विशे श्रीमहादेवज्ञनुं पूजन जे ते बिल्वपत्रादिके करीने प्रितिपूर्वक सर्व प्रकारे पोते करवुं अथवा बीजा पासे कराववुं ॥१४८॥

श्रावण मास में श्री महादेवजी का पूजन बिल्वपत्रादि द्वारा प्रीति पूर्वक सभी प्रकार से स्वयं करें अथवा अन्य से करावें ॥१४९॥

In the month of Shravan they shall worship with reverence Mahadev (Lord Shiv), with Bilva leaves etc. like, or ask others to worship Mahadev on their behalf. (149)



स्वाचार्यान्न ऋणं ग्राह्यं श्रीकृष्णास्य च मन्दिरात् ।  
ताभ्यां स्वव्यवहारार्थं पात्रभूषांशुकादि च ॥१५०॥

अने पोताना जे आचार्य, ते थकी तथा श्रीकृष्ण भगवाननां जे मंटिर, ते थकी करजन काढवुं; अने वणी ते पोताना आचार्य थकी अने श्रीकृष्णना मंटिर थकी पोताना व्यवहारने अर्थे पात्र, धरेषां अने वस्त्रादिक जे वस्तु, ते माझी लाववां नहि. ॥१५०॥

अपने आचार्यसे तथा श्रीकृष्ण भगवानके मंदिर से कर्ज न लें और अपने आचार्य तथा श्रीकृष्णके मंदिरसे अपने व्यवहार के लिए बरतन, गहनें एवं वस्त्रादि चीजें माँग कर भी न लावें ॥१५०॥

They shall never borrow money from their Acharyas or from the temples of Lord Shree Krishna nor shall they borrow, for their social use, utensils, ornaments, clothes and such other articles owned by the Acharyas or the temple of Lord Shree Krishna. (150)

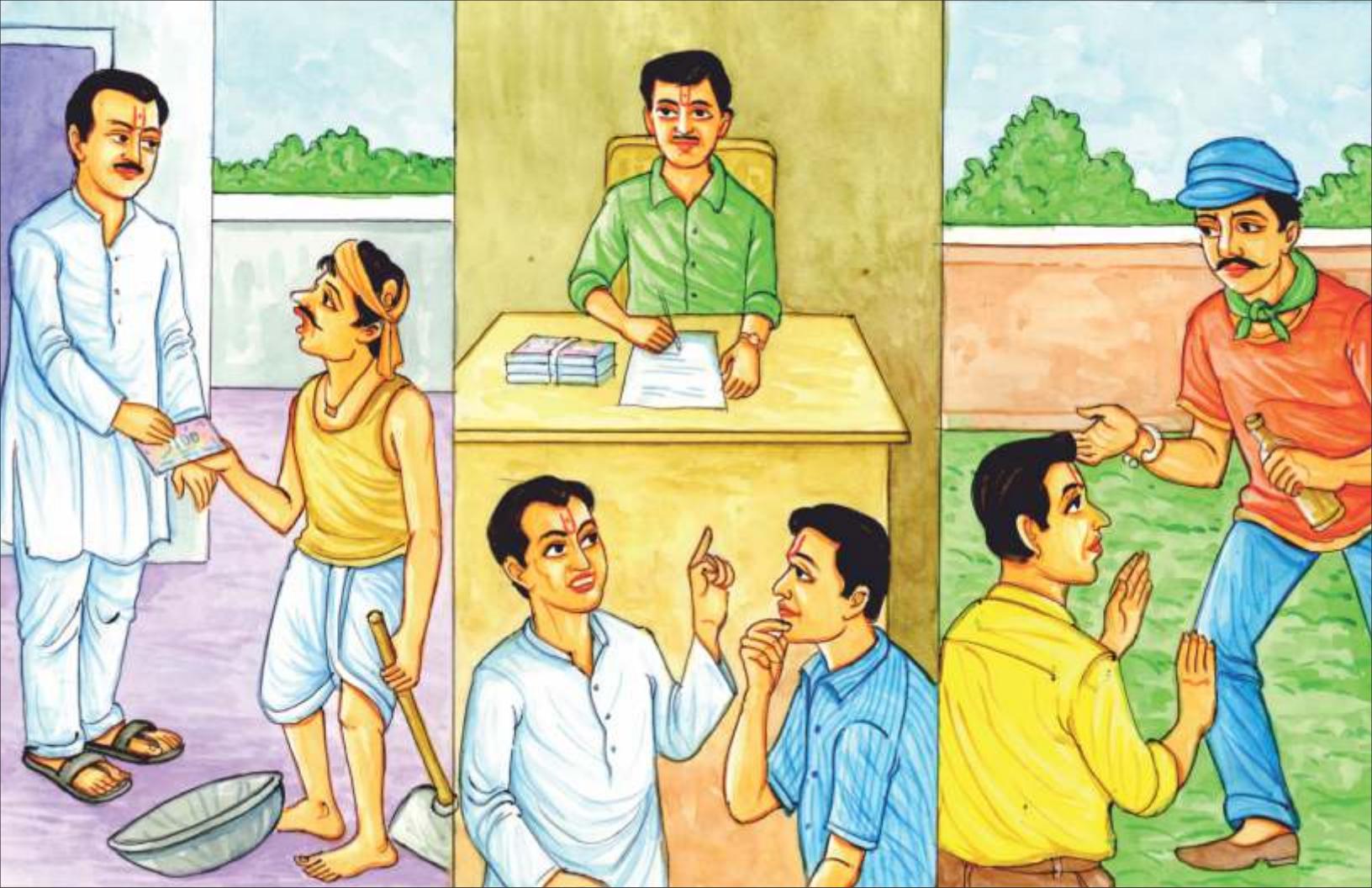


श्रीकृष्णगुरुसाधूनां दर्शनार्थं गतौ पथि ।  
तत्स्थानेषु च न ग्राह्यं परान्नं निजपुण्यहृत् ॥१५१॥

अने श्रीकृष्ण भगवान तथा पोताना गुरु तथा साधु अमनां दर्शन करवाने अर्थे गये सते, मार्गने विषे पारकुं अन्न खावुं नहि; तथा श्रीकृष्ण भगवान तथा पोताना गुरु तथा साधु, तेमनां जे स्थानक, तेमने विषे पशा पारकुं अन्न खावुं नहि; केम जे ते पारकुं अन्न तो पोताना पुण्यने हरी ले ऐवुं छे, माटे पोतानी गांठनुं खरय खावुं ॥१५१॥

और श्रीकृष्ण भगवान् अपनें गुरु तथा साधुओं के दर्शन के लिए जाते समय मार्गमें पराया अन्न नहीं खाना तथा श्रीकृष्ण भगवान्, अपने गुरु एवं साधुओं के स्थानों में भी पराया अन्न नहीं खाना, क्योंकि पराया अन्न तो अपने पूण्यको हरनेवाला है। अतः अपना ही धन खर्च करें ॥१५१॥

When going to the temples of Lord Shree Krishna or visiting the gurus or saints for Darshan, they shall never eat anything given free of charge by others, either in the temple or enroute, because the free food given by another person takes away one's Punya (benediction). They shall eat food bought with their own money. (151)

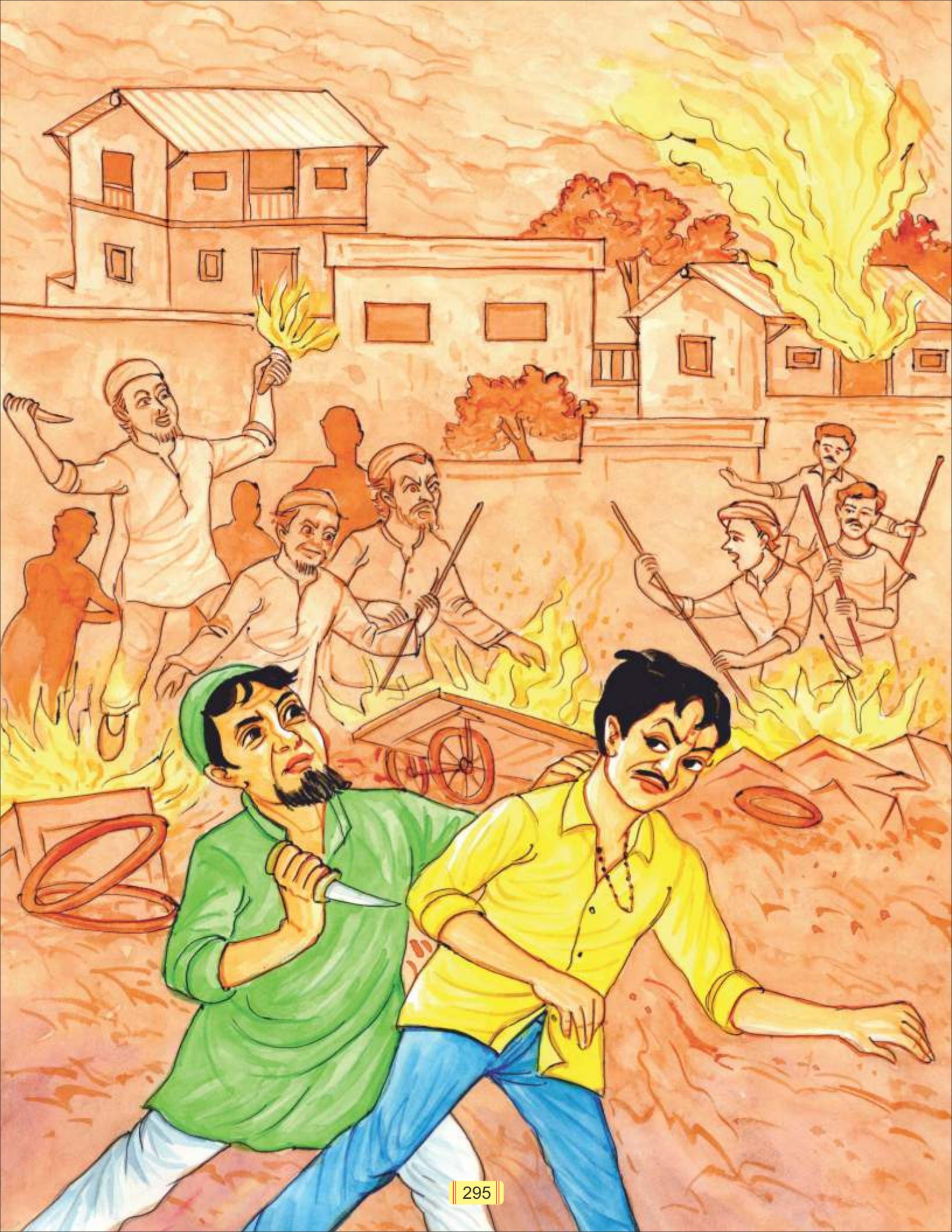


प्रतिज्ञातं धनं देयं यत्स्यात् तत् कर्मकारिणे ।  
न गोप्यमृणशुद्ध्यादि व्यवहार्यं न दुर्जनैः ॥१५२॥

अने पोताना कामकाज करवा तेऽया जे मજूर, तेमने जेटलुं धन अथवा धान्य दीधानुं कह्युं होय, ते प्रमाणे ज आपवुं, पश तेमांथी ओछुं न आपवुं; अने पोता पासे कोई करज मांगता होय अने ते करज दृष्ट चूक्या होईअ, ते वातने छानी न राखवी तथा पोतानो वंश तथा कन्यादान, ते पश छानुं न राखवुं; अने दुष्ट ऐवा जे जन, तेमनी साथे व्यवहार न करवो ॥१५२॥

अपने कामकाजके लिए बुलाये गयें मजदूरोंको जितना धन अथवा धान्य देने का वादा किया गया हों उतना अवश्य दें परंतु उससे कम न दें और अपने पास कोई कर्ज मांगता हों और उस कर्जको यदि चुका दिया हों तो इस बात को गुप्त न रखें तथा अपना वंश एवं कन्यादान भी गुप्त न रखें तथा दुष्ट लोगों के साथ व्यवहार न करें ॥१५२॥

They shall pay the agreed remuneration, in cash or kind, to persons employed by them and under no circumstances pay them less than the agreed rates. They shall not keep in secret, the matters related to repayments of their debts, their ancestry and Kanyadan (giving away of one's daughter in marriage). They shall have no dealings with wicked persons. (152)



दुष्कालस्य रिपूणां वा नृपस्योपद्रवेण वा ।  
 लज्जाधनप्राणनाशः प्रासः स्याद्यत्र सर्वथा ॥१५३॥  
 मूलदेशोऽपि स स्वेषां सद्य एव विचक्षणैः ।  
 त्याज्यो मदाश्रितैः स्थेयं गत्वा देशान्तरं सुखम् ॥१५४॥

अने जे ठेकाणो पोते रहेता होईअ, ते ठेकाणो कोईक कठण-भूंडो काण अथवा शत्रु अथवा राजा, तेमना उपद्रवे करीने सर्व प्रकारे पोतानी लाज जती होय के धननो नाश थतो होय; के पोताना प्राणनो नाश थतो होय, ॥१५३॥

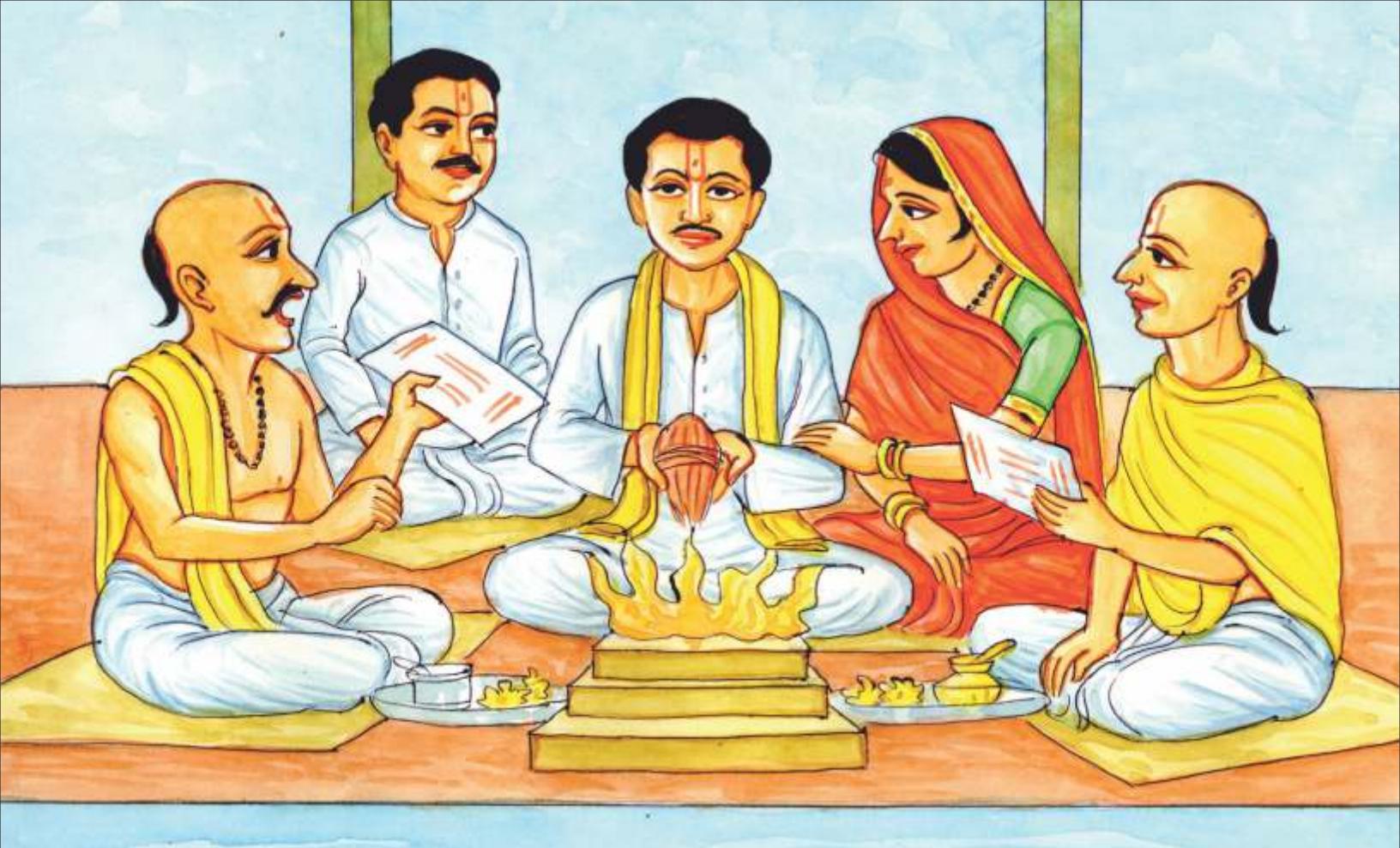
अने ते जो पोताना मूण गरासनुं तथा वतननुं गाम होय, तो पश तेनो विवेकी अेवा जे अमारा सत्संगी गृहस्थ, तेमणे तत्काण त्याग करी देवो. अने ज्यां उपद्रव न होय, तेवो जे भीजो देश, ते प्रत्ये जैर्ने सुझेथी रहेवुं ॥१५४॥

जिस स्थान में आप रहते हों उस स्थान में यदि दुष्काल, शत्रु अथवा राजा के उपद्रव आदि से सर्वथा अपनी मर्यादा को नाश होता हो या धन का नाश हो या अपने प्राण का नाश होता हो ॥१५३॥

और वह स्थान-गाँव अपनी मूल जागीर तथा वतन का हो तो भी विवेकवान हमारे सत्संगी गृहस्थ उसका त्याग करें और जहां उपद्रव न हो ऐसे अन्य देश-स्थान में जाकर सुखपूर्वक रहें ॥१५४॥

In the event of a natural disaster or harassment by a ruler or wicked persons where one cannot uphold one's honour or protect one's life and possessions, My wise householder disciples

shall quit that place at once, even if it is their native place or inherited estate and reside elsewhere where they can live happily and without harassment. (153-154)

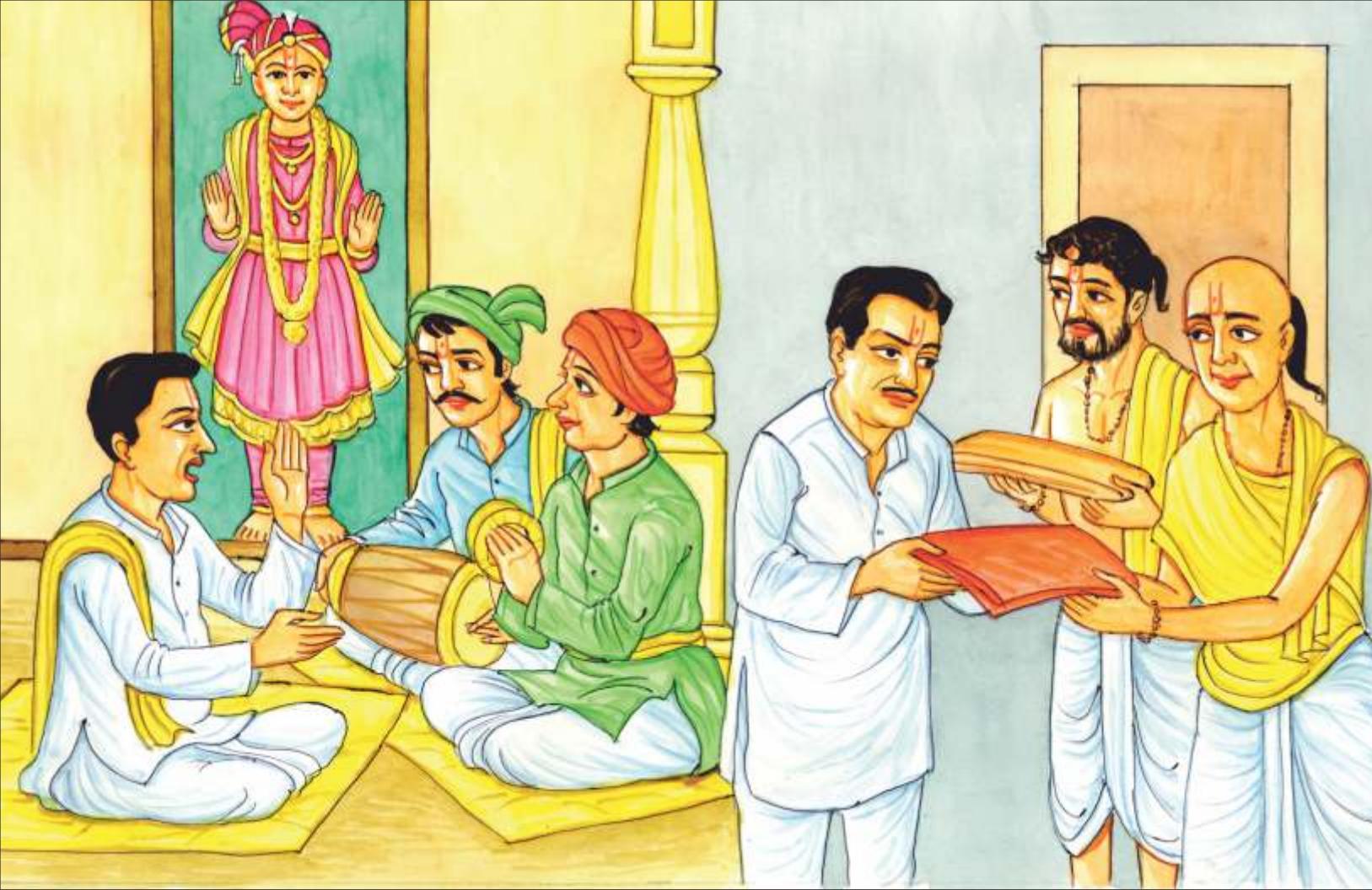


आद्यैस्तु गृहिभिः कार्या अहिंसा वैष्णवा मखाः ।  
तीर्थेषु पर्वसु तथा भोज्या विप्राश्च साधवः ॥१५५॥

अने धनाद्य ऐवा जे गृहस्थ सत्संगी, तेमણે હિંસા એ રહિત એવા જે વિષ્ણુ સંબંધી યજા, તે કરવા; તથા તીર્થને વિષે તથા દ્વાદશીઆદિ પર્વને વિષે બ્રાહ્મણ તથા સાધુ, તેમને જમાડવા. ॥૧૫૫॥

और ધનવાન् એસે જો ગૃહસ્થ સત્સંગી હૈ, વે હિંસા-રહિત વિષ્ણુ સમ્બંધી યજ કરેં તથા તીર્થ સ્થાન મેં એવં દ્વાદશી આદિ પર્વ કે દિનોં મેં બ્રાહ્મણ તથા સાધુઓં કો ભોજન કરાવે ॥૧૫૫॥

My wealthy Satsangis shall perform non-violent Yagnas for propitiating Vishnu. They shall feed Brahmins and ascetics in places of pilgrimage and also on auspicious days. (155)

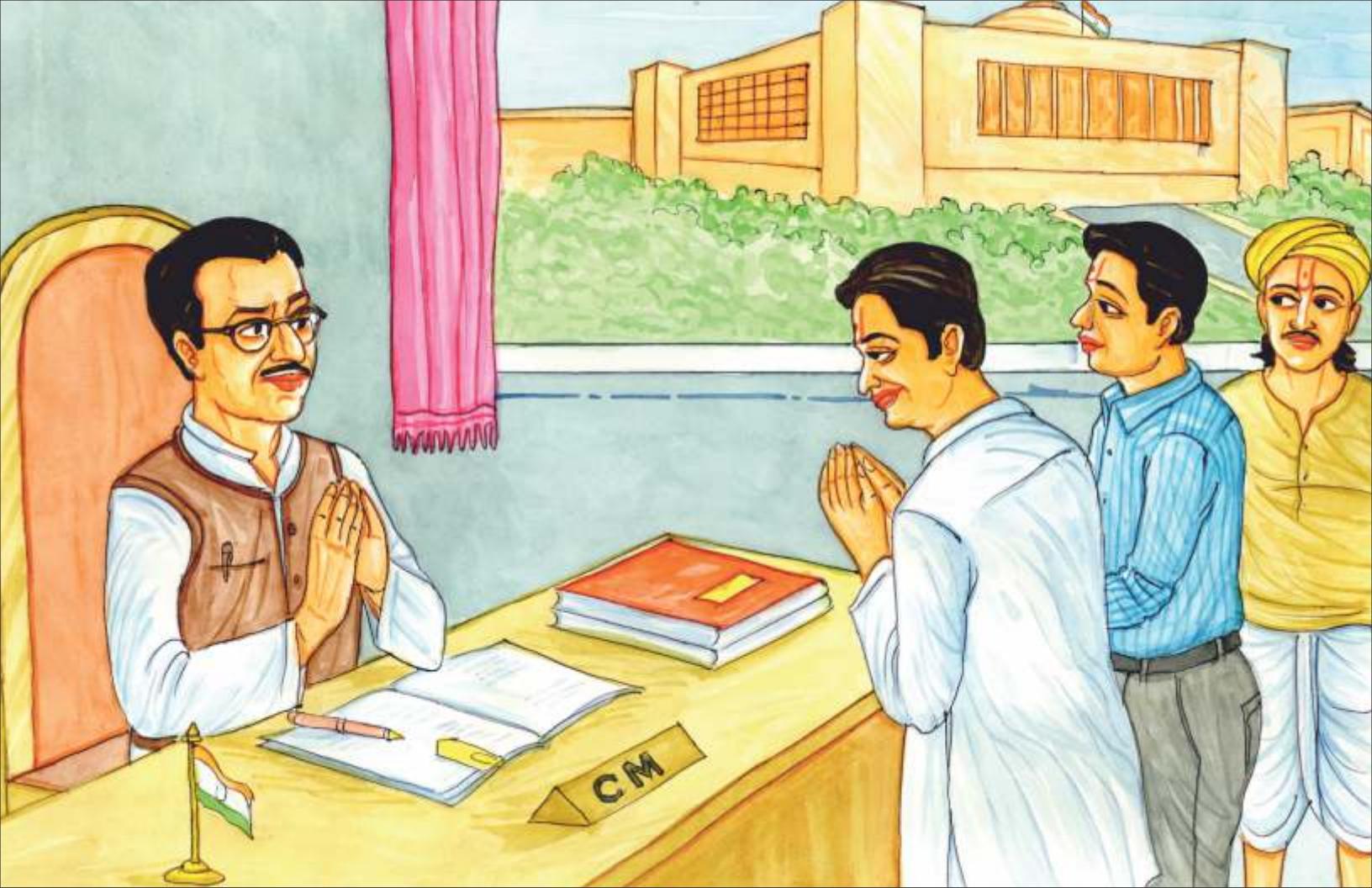


महोत्सवा भगवतः कर्तव्या मन्दिरेषु तैः ।  
देयानि पात्रविप्रेभ्यो दानानि विविधानि च ॥१५६॥

अने धनाढय ऐवा जे गृहस्थ सत्संगी, तेमणे भगवानना मंटिरने विषे मोटा उत्सवो  
कराववातथा सुपात्र ऐवा जे ब्राह्मण, तेमने नानाप्रकारनां दान देवां ॥१५६॥

और वे धनवान् गृहस्थ सत्संगी भगवान् के मंदिरो में बड़े-बड़े उत्सव करावें तथा सुपात्र  
ब्राह्मणों को विविध प्रकार के दान दें ॥१५६॥

My wealthy Satsangis shall organize celebrations of great religious  
festivals in temples and shall give various kinds of alms to deserving  
Brahmins. (156)



मदाश्रितैर्नैर्धर्मशास्त्रमाश्रित्य चाखिलाः ।  
प्रजाः स्वाः पुत्रवत्याल्या धर्मः स्थाप्यो धरातले ॥१५७॥

अने अमारे आश्रित ऐवा जे सत्संगी राजा, तेमणे धर्मशास्त्रने, आशरीने पोताना पुत्रनी  
पेठे पोतानी प्रजानुं पालन करवुं अने पृथ्वीने विषे धर्मनुं स्थापन करवुं ॥१५७॥

हमारे आश्रित ऐसे जो सत्संगी राजा, वे धर्मशास्त्र के अनुसार अपनी प्रजा का पुत्रवत्  
पालन करें और पृथ्वी पर धर्म का स्थापन करें ॥१५७॥

My disciples who are rulers shall treat their subjects as their own  
children in accordance with Dharmashastras, and shall establish a rule of  
Dharma on Earth. (157)



राज्याङ्गोपायषद्वर्गा ज्ञेयास्तीर्थानि चाञ्चासा ।  
व्यवहारविदः सभ्या, दण्डयादण्ड्याश्च लक्षणैः ॥१५८॥

अने ते राजा-तेमणे राज्यनां जे सात अंग तथा चार उपाय तथा छ गुण, ते जे ते लक्षणे करीने यथार्थ पणे जाणवां. अने तीर्थ - जे चार मोकल्यानां स्थानक, तथा व्यवहारना ज्ञाणनारा जे सभासद तथा दंडवा योग्य जे माणस, तथा दंडवा योग्य नहि ऐवा जे माणस-ऐ सर्वने लक्षणे करीने यथार्थपणे जाणवा. ॥१५८॥

वे राजा राज्य के सात अङ्ग, चार उपाय तथा छ: गुणों को लक्षण पूर्वक यथार्थ रूप से जानें तथा तीर्थ अर्थात् गुप्तचर भेजने के स्थान, व्यवहार के ज्ञाता सभासद, दण्डनीय मनुष्य तता अदण्डनीय मनुष्य, इन सभी को उनके लक्षणों द्वारा यथार्थरूप से जाने ॥१५८॥

They shall fully know the seven constituents to administer the state successfully the four expedients to have a successful conquest, six diplomatic qualities and significant places to send the spies to. Not only shall they know the characteristics of persons well versed in worldly matters and social affairs but also the qualities of persons who deserve to be punished and those who do not deserve to be punished. (158)



सभृत्काभिनारीभिः सेव्यः स्वपतिरीशवत् ।  
अन्थो रोगी दरिद्रो वा षण्ठो वाच्यं न दुर्वचः ॥१५९॥

अने हવे सुवासिनी बाईओना विशेष धर्म कहीऐ छीऐः अमारे आश्रित जे सुवासिनी बाईओ,  
तेमणे पोतानो पति अंध होय, रोगी होय, दरिद्री होय, नपुंसक होय तो पाण तेने ईश्वरनी पेढे सेववो अने ते  
पति प्रत्ये कटु वचन न बोलवुँ ॥१५८॥

अब सध्वा स्त्रियां के विशेष धर्म कहते हैं—हमारे आश्रित जो सध्वा स्त्रियाँ, वे अपना पति अन्थ हो,  
रोगी हो, दरिद्र हो, नपुंसक हो, तो भी उसकी ईश्वर के समान ही सेवा करें और उसको कटुवचन न बोलें  
॥१५९॥

Married women shall serve and worship their husbands in the manner in which they serve and worship God, even if they are either blind, ailing, poor or impotent and shall never utter harsh words to them. (159)



रूपयौवनयुक्तस्य गुणिनोऽन्यनरस्य तु ।  
प्रसङ्गे नैव कर्तव्यस्ताभिः साहजिकोऽपि च ॥१६०॥

अने ते सुवासिनी स्त्रीओ, तेभाषे इपने यौवन-तेषो युक्त अने गुणवान् ऐवो जे अन्य पुरुष  
तेनो प्रसंग सहज स्वभावे पाण न ज करवो. ॥१६०॥

वे सधवा लियाँ रूप-यौवन से युक्त तथा गुणवान् ऐसे पर-पुरुष का प्रसंग सहज  
स्वभाव-अनायास भी न करें ॥१६०॥

They shall never keep any contact with any young man other than their husband even though the other young man may be handsome and virtuous.  
(160)



नरेक्ष्यनाभ्यूरुकुचाऽनुतरीया च नो भवेत् ।  
साध्वी स्त्री न च भण्डेक्षा न निर्लज्जादिसङ्गिनी ॥१६१॥

अने पतिव्रता ऐवी जे सुवासिनी स्त्रीओ, तेमधो पोतानी नाभि, साथण अने छाती, तेने बीजो पुरुष देखे, अम न वर्तवु; अने ओढ़चाना वस्त्र विना उघाडे शरीरे न रहेवुं; अने भाँडभवाई ज्वेवा न जवुं; अने निर्लज्ज ऐवी जे स्त्रीओ तथा स्वैरिणी, कामिनी अने पुंश्ली ऐवी जे स्त्रीओ तेमनो संग न करवो. ॥१६१॥

और पतिव्रता ऐसी जो सधवा स्त्रियाँ वे अपनी नाभी, जांघ और वक्षःस्थल अन्य पुरुष को दिखाई दें ऐसे ढंग से न रहें और बिना उत्तरीय वस्त्र खुले शरीर में न रहें तथा भाँडलीला आदि देखने न जायँ और निर्लज्ज स्वैरिणी, कामिनी, और पुंश्ली (कुलटा) आदि स्त्रियों का संग न करें ॥१६१॥

Devout wives shall never behave in a manner which could expose their navel, thighs or breasts and attract the attention of other males. They shall cover themselves with an upper garment. They shall never go out to see vulgar shows nor associate themselves with debauch women or courtesans. (161)

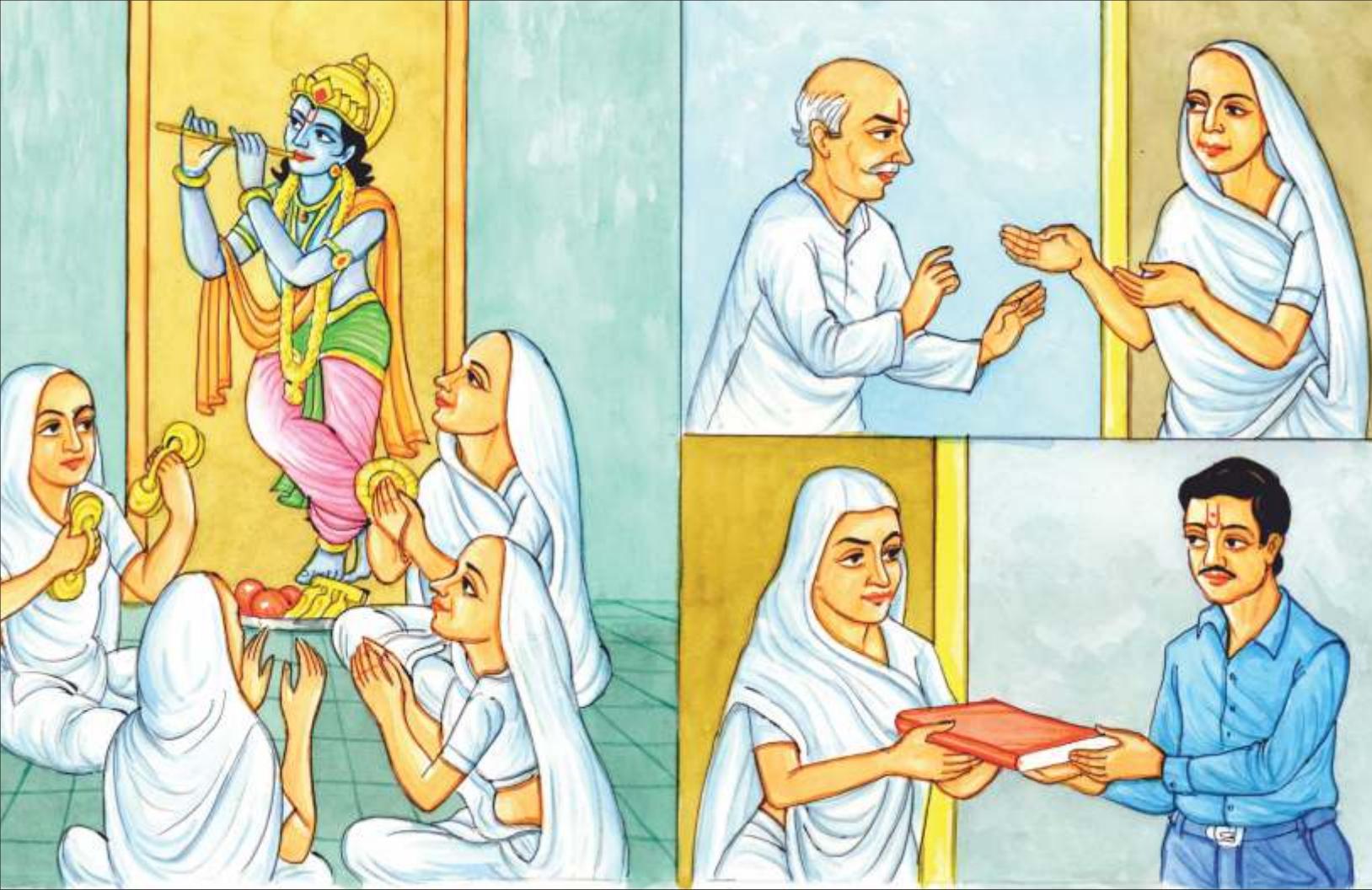


भूषासदंशुकधृतिः परगेहोपवेशनम् ।  
 त्याज्यं हास्यादि च स्त्रीभिः पत्यौ देशान्तरं गते ॥१६२॥

अने सुवासिनी स्त्रीओ, तेमणे पोतानो पति परदेश गये सते आभूषण न धारवां, ने रुडां वस्त्र न पहेरवां, ने पारके घेर बेसवान जवुं, अने हास्यविनोदादिकनो त्याग करवो ॥१६२॥

वे सधवा स्त्रियाँ जब अपना पति विदेश गया हो तब आभूषण धारण न करें तथा सुन्दर वस्त्र परिधान न करें और पराये घर बैठने न जायें तथा हास्य-विनोद आदि का त्याग करें ॥१६२॥

When their husbands are away from home, married women shall never wear beautiful clothes or ornaments, nor visit other peoples' homes, nor indulge in merriment. (162)



विधवाभिस्तु योषाभिः सेव्यः पतिधिया हरिः ।  
आज्ञायां पितृपुत्रादेर्वृत्यं स्वातन्त्र्यतो न तु ॥१६३॥

હવે વિધવા સ્ત્રીઓના વિશેષ ધર્મ કહીએ છીએ: અમારે આશ્રિત જે વિધવા સ્ત્રીઓ, તેમણે તો પતિ-બુદ્ધિએ કરીને શ્રીકૃષ્ણ ભગવાનને સેવવા; અને પોતાના પિતા-પુત્રાદિક જે સંબંધી, તેમની આજ્ઞાને વિષે વર્તવુ, પણ સ્વતંત્રપણે ન વર્તવુ. ॥૧૬૩॥

अब विधवा स्त्रियों के विशेष धर्म कहते हैं-हमारे आश्रित जो विधवा स्त्रियाँ, वे पतिबुद्धि से श्रीकृष्ण भगवान् की सेवा करें और अपने पिता-पुत्रादि सम्बन्धीजनों की आज्ञानुसार ही रहें परन्तु स्वतन्त्रता से आचरण न करें ॥१६३॥

The widow disciples shall worship Lord Shree Krishna with the same fidelity as they would have worshipped their husbands. They shall always live under the command of their father, sons or such other relatives but never act independently. (163)



स्वासन्नसम्बन्धीना नराः स्पृश्या न कर्हिचित् ।  
तरुणैस्तैश्च तारुण्ये भाष्यं नावश्यकं विना ॥१६४॥

अने ते विधवा स्त्रीओ, ते माणे पोताना सभीप संबंध विनाना जे पुरुष ते मनो स्पर्श क्यारेय न करवो, अने पोतानी युवा अवस्थाने विषे अवश्य कार्य विना सभीप संबंध विनाना जे युवान पुरुष, ते मनी साथे क्यारेय पाण बोलवुं नहि. ॥१६४॥

और वे विधवा स्त्रियाँ अपने निक सम्बन्धरहित पुरुषों का स्पर्श कदापि न करें और अपनी युवावस्था में बिना आवश्यक कार्य, सभीप सम्बन्ध रहित, युवान पुरुषों के साथ कदापि बातचीत न करें ॥१६४॥

They shall never touch any male who is not closely related to them. Young widows shall never converse with young men unless it is absolutely necessary. (164)



स्तनन्धयस्य नुः स्पर्शे न दोषोऽस्ति पशोरिवः ।  
आवश्यके च वृद्धस्य स्पर्शे तेन च भाषणे ॥१६५॥

अने धावणो जे बाणक, तेना स्पर्शने विषे तो जेम पशुने अडी जवाय अने दोष नथी, तेम दोष नथी; अने कोई अवश्यनुं कामकाज पडे, तेने विषे कोईक वृद्ध पुरुषने अडी जवाय, तथा ते वृद्ध साथे बोलाय, तेने विषे दोष नथी. ॥१६५॥

दूध पीते बच्चे को छूने में तो जैसे पशु को छूने में दोष नहीं हैं ठीक उस प्रकार दोष नहीं हैं तथा किसी आवश्यक कार्य के लिए किसी वृद्ध पुरुष का स्पर्श करना पडे तथा उसके साथ बोलना पडे तो उसमें दोष नहीं हैं ॥१६५॥

Casually touching a suckling child is not an offence just as there is no offence in touching an animal. Similarly there is no offence in touching or talking to an old man when it becomes necessary. (165)

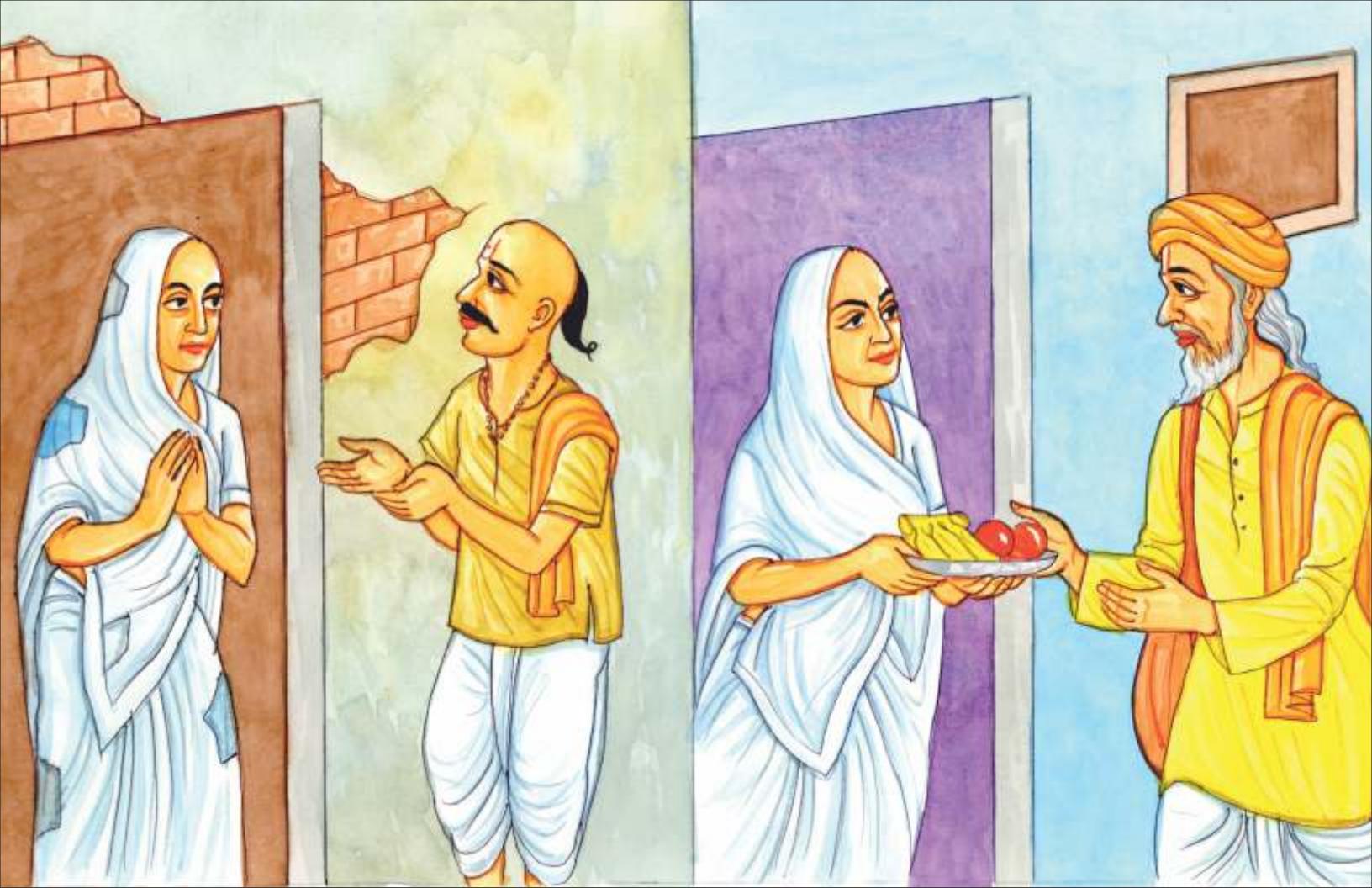


**विद्याऽनासन्नसम्बन्धात्ताभिः पाठ्या न काऽपि नुः।  
व्रतोपवासैः कर्तव्यो मुहुर्देहदमस्तथा ॥१६६॥**

अने ते विधवा स्त्रीओ, तेभाषे पोताना सभीप संबंध विनाना जे पुरुष, ते थकी कोई पण  
 विद्या न भाषवी; अने व्रत उपवासे करीने वारंवार पोताना देहनुं दमन करवुं ॥१६६॥

वे विधवा स्त्रियाँ अपने समीप सम्बन्ध रहित पुरुष से कोई भी विद्या न सीखें, और व्रत-  
 उपवास आदि द्वारा बारबार अपने देह का दमन किया करें ॥१६६॥

They shall not receive education from a male person who is not closely related. They shall constantly control their body and senses by observing Vrats and fasts. (166)



धनं च धर्मकार्येऽपि स्वनिर्वाहोपयोगि यत् ।  
देयं ताभिन्नं तत् क्वापि देयं चेदधिकं तदा ॥१६७॥

अने ते विधवा स्त्रीओ, तेमणे पोताना धरमां पोताना ज्ञवनपर्यन्त देहनिर्वाह थाय एटलुं  
जे जो धन होय, तो ते धन, जे ते धर्मकार्यने विषे पाण न आपवुं अने जो तेथी अधिक होय तो आपवुं.  
॥१६७॥

और उन विधवा स्त्रियों के घर में यदि अपने जीवन पर्यन्त देह निर्वाह हो सके उतना ही धन हो तो वे  
उस धन का धर्म-कार्य के लिए भी दान न करें, अगर उससे अधिक हो तो दान करें ॥१६७॥

Those who have just sufficient wealth for their lifetime maintenance  
shall not offer it even for religious purposes, they may do so if they have  
surplus to their requirement. (167)



कार्यश्च सूक्ष्माहारस्ताभिः स्वापस्तु भूतले ।  
 मैथुनासक्तयोर्बीक्षा क्वापि कार्या न देहिनोः ॥१६८॥

अने विधवा स्त्रीओ तेमणे एकवार आहार करवो अने पृथ्वीने विशे सूवुं अने मैथुनासक्त  
 ऐवां जे पशु-पक्षी आदिक ज्व-प्राणीमात्र, तेमने क्यारेय जाणीने जोवां नहि. ॥१६८॥

और विधवा स्त्रियाँ एक बार ही भोजन करें तथा पृथ्वी पर ही शयन करें तथा मैथुनासक्त  
 पशु पक्षी आदि जीव प्राणी मात्र को कदापि न देखें ॥१६८॥

They shall take a meal only once a day and sleep on the floor. They  
 shall never deliberately look at any creatures in the act of coition. (168)



वेषो न धार्यस्ताभिश्च सुवासिन्याः स्त्रियास्तथा ।  
न्यासिन्या वीतरागाया विकृतश्च न कर्हिचित् ॥१६९॥

अने ते विधवा स्त्रीओ, तेमणे सुवासिनी स्त्रीना जेवो वेश न धारवो, तथा सन्यासाणी तथा वेरागाणी तेना जेवो वेश न धारवो; अने पोतानो देश, कुण अने आचार-तेना विरुद्ध ऐवो जे वेश, ते पण क्यारेय न धारवो ॥१६९॥

वे विधवा स्त्रियां सुहागिनी स्त्री के समान वेष धारण न करें तथा सन्यासिनी एवं वैरागिनी जैसा वेष धारण न करें और विकृत-अपने देश, कुल और आचार के विरुद्ध-वेष भी कदापि धारण न करें ॥१६९॥

They shall never dress themselves like a married woman, nun or a female recluse, nor dress in a manner which is contrary to the custom of the place and their family traditions. (169)

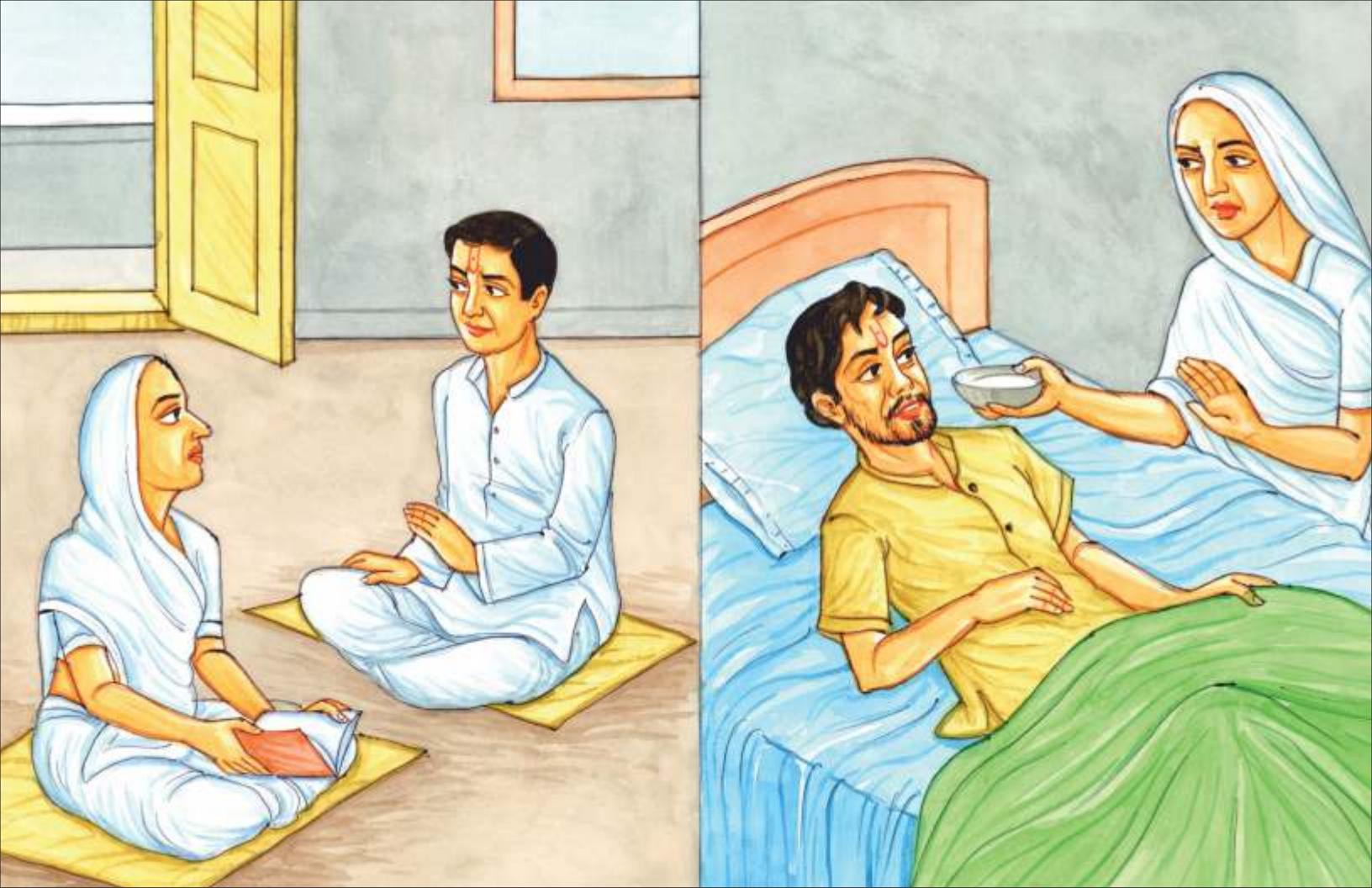


सङ्गो न गर्भपातिन्याः स्पर्शः कार्यश्च योषितः ।  
शृङ्गारवार्ता न नृणां कार्याः श्रव्या नवैक्षचित् ॥१७०॥

अने गर्भनी पाइनारी जे स्त्री, तेनो संग न करवो; अने तेनो स्पर्श पश न करवो. अने पुरुषना शृंगार रस संबंधी जे वार्ता, ते क्यारेय न करवी अने न सांभणवी. ॥१७०॥

और गर्भपातिनी स्त्री का संग न करें और उसका स्पर्श भी न करें तथा पुरुष के शृङ्गार सम्बन्धी वार्ता कदापि न करें एवं न सुनें ॥१७०॥

They shall never associate with, nor even touch women who practice abortion, nor shall they indulge in or listen to amorous talks regarding males.  
(170)



निजसम्बन्धिभरपि तारुण्ये तरुणैर्नैः ।  
साकं रहसि न स्थेयं ताभिरापदमन्तरा ॥१७१॥

अने युवान अवस्थाने विशे रही ऐवी जे विधवा स्त्रीओ, तेमણे युवा अवस्थावाणा जे पोताना संबंधी पुरुष तेमनी संगाथे पाण एकांत स्थળने विशे आपत्काण पड़या विना न रहेवुं। ॥१७१॥

और युवावस्था में रही ऐसी जो विधवा स्त्रीयाँ वे युवावस्थावाले अपने सम्बन्धी पुरुषों के साथ भी बिना आपत्काल एकान्त स्थल में न रहें। ॥१७१॥

Except in an emergency, young widows shall never stay in a secluded place with young men, even though they may be closely related. (171)

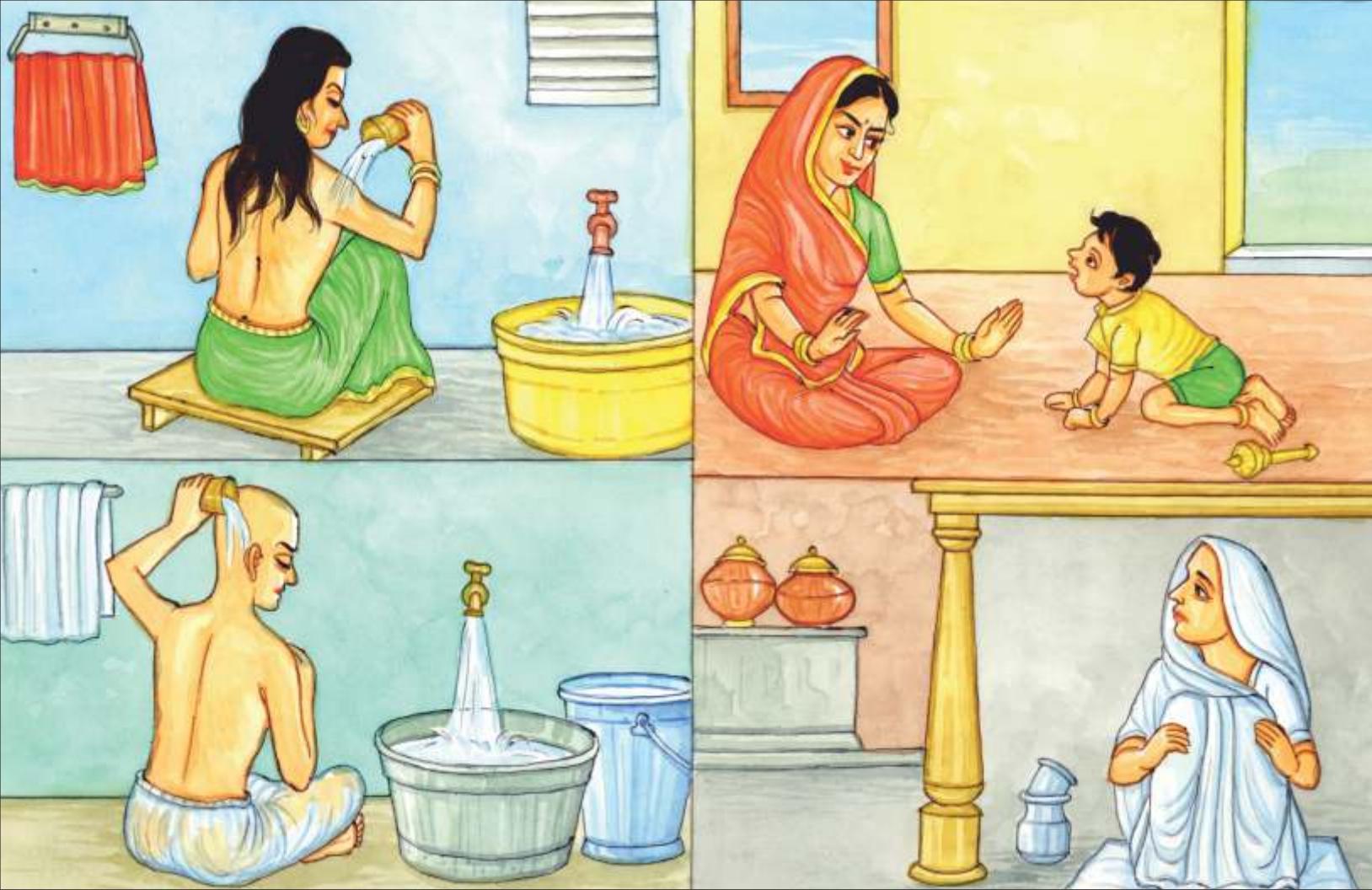


न होलाखेलनं कार्यं न भूषादेशं धारणम् ।  
न धातुसूत्रयुक्तूक्ष्मवस्त्रादेरपि कर्हिचित् ॥१७२॥

अने होलीनी रभत न करवी, अने आभूषणादिकनुं धारणा न करवुं; अने सुवर्णादिक धातुना तारे युक्त ऐवां जे झीणां वस्त्र, तेनुं धारणा पशा क्यारेय न करवुं ॥१७२॥

और होली न खेलें, आभूषणादिको धारण न करें तथा सुवर्णादि धातु के तारो से युक्त मलीन वस्त्रों को भी कदापि धारण न करें ॥१७२॥

They shall never play Holi nor put on ornaments, nor dress themselves with transparent clothes interwoven with gold or similar metals. (172)



सधवाविधवाभिश्च न स्नातव्यं निरम्बरम् ।  
स्वरजोदर्शनं स्त्रीभिर्गोपनीयं न सर्वथा ॥१७३॥

अने सुवासिनी ने विधवा ऐवी जे स्त्रीओ, तेमणे वस्त्र पहेया बिना न्हावुं नहि; अने पोतानुं जे २४स्वलापणुं ते कोई प्रकारे गुप्त न राखवुं ॥१७३॥

सधवा तथा विधवा स्त्रियाँ बिना वस्त्र पहने स्नान न करें और अपने रजस्वलापन को किसी भी प्रकार से गुप्त न रखें ॥१७३॥

No woman shall bathe without having clothes on and shall never conceal her periodical menses. (173)



मनुष्यं चांशुकादीनि नारी क्वापि रजस्वला ।  
दिनत्रयं स्पृशेन्नैव स्नात्वा तुर्येऽहि सा स्पृशेत् ॥१७४॥

अने वणी रजस्वला ऐवी जे सुवासिनी अने विधवा स्त्रीओ, ते त्रिश दिवस सुधी कोई मनुष्यने तथा वस्त्रादिकने अડे नहि अने योथे दिवसे नाहीने अडवुँ. (ऐवी शीते गृहस्थाश्रमी ऐवा जे पुरुष अने स्त्रीओ, तेमना जे आ विशेष धर्म कह्या ते सर्वे धर्मवंशी आचार्य अने तेमनी पत्नीओ, तेमाझे पाण पाणवा, केम के ए गृहस्थ धे.) ॥१७४॥

रजस्वला ऐसी सधवा तथा विधवा स्त्रियाँ, तीन दिन तक किसी मनुष्य का या वस्त्रादि का स्पर्श न करें, चौथे दिन स्नान करके ही स्पर्श करें। (इस प्रकार गृहस्थाश्रमी पुरुष तथा स्त्रियों के जो विशेष धर्म कहे गये, उनका सभी धर्मवंशी आचार्य तथा उनकी पत्नियाँ भी पालन करें क्योंकि वे भी गृहस्थ हैं) ॥१७४॥

No woman shall touch anybody or any clothes etc., for three days during the period of menses, but can do so on the fourth day after taking a bath. (174)

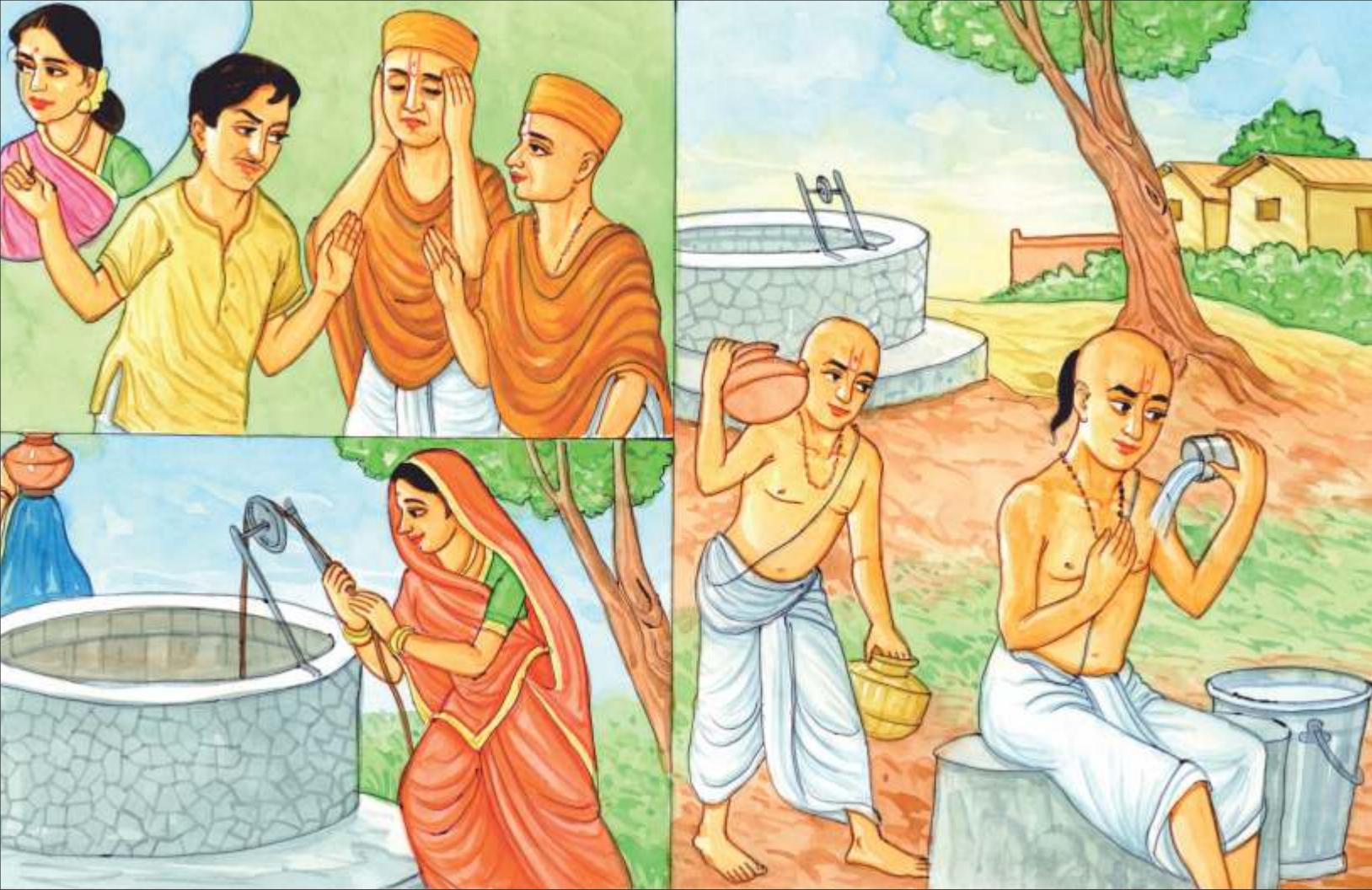


नैष्ठिकव्रतवन्तो ये वर्णिनो मदुपाश्रयाः ।  
तैः स्पृश्यान स्त्रियो भाष्या न च वीक्ष्याश्च ता धिया ॥१७५॥

હવે નैષ્ઠિક બ્રહ્મચારીના જે વિશેષ ધર્મ તે કહીએ છીએ. : અમારે આશ્રિત એવા જે નैષ્ઠિક બ્રહ્મચારી, તેમણે સ્ત્રીમાત્રનો સ્પર્શ ન કરવો; અને સ્ત્રીઓ સંગાથે બોલવું નહિં; અને જાણીને તે સ્ત્રીઓ સન્મુખ જોવું નહિં. ॥૧૭૫॥

अब नैष्ठिक ब्रह्मचारियों के विशेष धर्म कहते हैं - हमारे आश्रित नैष्ठिक ब्रह्मचारी स्त्री मात्र का स्पर्श न करें और स्त्रियों के साथ बोले नहीं और बुद्धिपूर्वक तो स्त्रियों की और देखे भी नहीं ॥१७५॥

My Naishthik Brahmchari disciples shall never touch nor talk to nor deliberately look at any female. (175)



तासां वार्ता न कर्तव्या न श्रव्याश्च कदाचन ।  
तत्पादचारस्थानेषु न च स्नानादिकाः क्रियाः ॥१७६॥

अने ते स्त्रीओनी वार्ता क्यारेय न करवी अने न सांभणवी; अने जे स्थानकने विशे  
स्त्रीओनो पग फेर होय, ते स्थानकने विशे स्नानादिक क्रिया करवा न जवुं ॥१७६॥

और उन स्त्रियों के बारेमें कदापि चर्चा न करें और न सुनें तथा जिस स्थान में स्त्रियों का पद-  
संचार हो उस स्थान में स्नानादि क्रिया करने के लिए भी न जायँ ॥१७६॥

They shall never talk of females nor listen to talks about females and  
shall not go for bathing, washing, etc. to places which are frequented by  
females. (176)

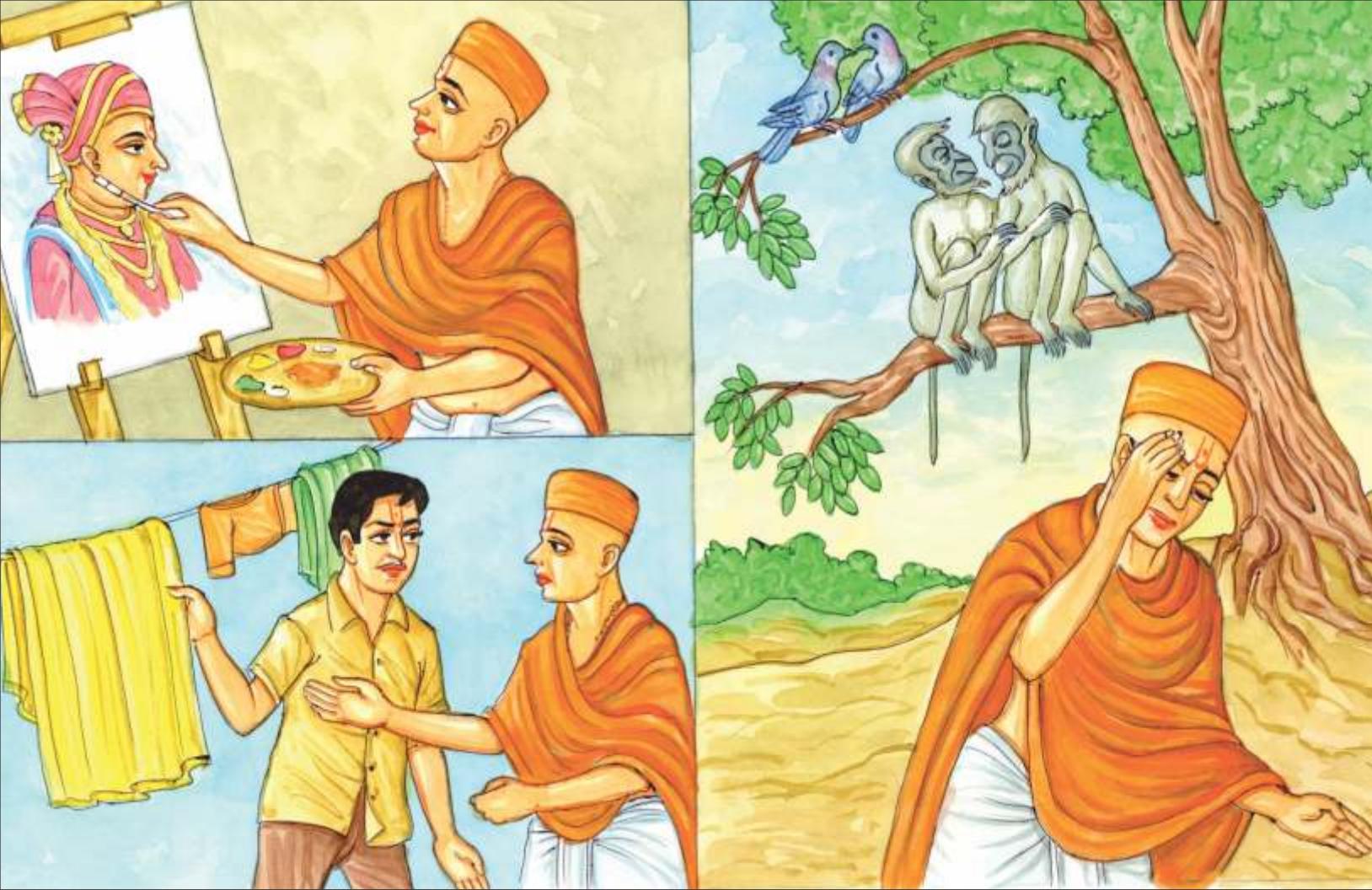


देवताप्रतिमां हित्वा लेख्या काष्ठादिजपि वा ।  
न योषित्प्रतिमा स्पृश्या न वीक्ष्या बुद्धिपूर्वकम् ॥१७७॥

अने देवतानी प्रतिमा विना भीजु जे स्त्रीनी प्रतिमा, यित्रनी अथवा काष्ठादिकनी होय, तेनो स्पर्श न करवो; अने जाणीने तो ते प्रतिमाने जोवी पाण नहि ॥१७७॥

देवता की प्रतिमा के बिना दूसरी स्त्री की प्रतिमा जो चित्रित या काष्ठादि से निर्मित हो तो भी उसका स्पर्श न करें और बुद्धिपूर्वक उसि प्रतिमा को देखें भी नहीं ॥१७७॥

They shall neither touch nor purposely look at the images, pictures or idols made from wood, etc., of females except those of Goddesses. (177)



न स्त्रीप्रतिकृतिः कार्या न स्पृश्यं योषितोऽशुकम् ।  
न वीक्ष्यं मैथुनपरं प्राणिमात्रं च तैर्धिया ॥१७८॥

अने ते नैष्ठिक ब्रह्मचारी, तेमणे स्त्रीनी प्रतिभा न करवी; अने स्त्रीओ पोताना शरीर उपर धारेलु जे वस्त्र, तेने अडवुं नहि; अने मैथुनासक्त ऐवा जे पशु-पक्षी आदिक प्राणी-मात्र, तेमने जाणीने जोवां नहि। ॥१७८॥

और वे नैष्ठिक ब्रह्मचारी स्त्रीकी प्रतिमा की रचना कदापि न करें तथा स्त्री द्वारा अपने शरीर पर धारण किये गये वस्त्र का स्पर्श न करें और मैथुनासक्त पशुपक्षी आदि प्राणिमात्र को जान बूजकर न देखें ॥१७८॥

They shall never draw pictures of females nor touch clothes worn by females. They shall never intentionally look at any creatures in the act of coition. (178)

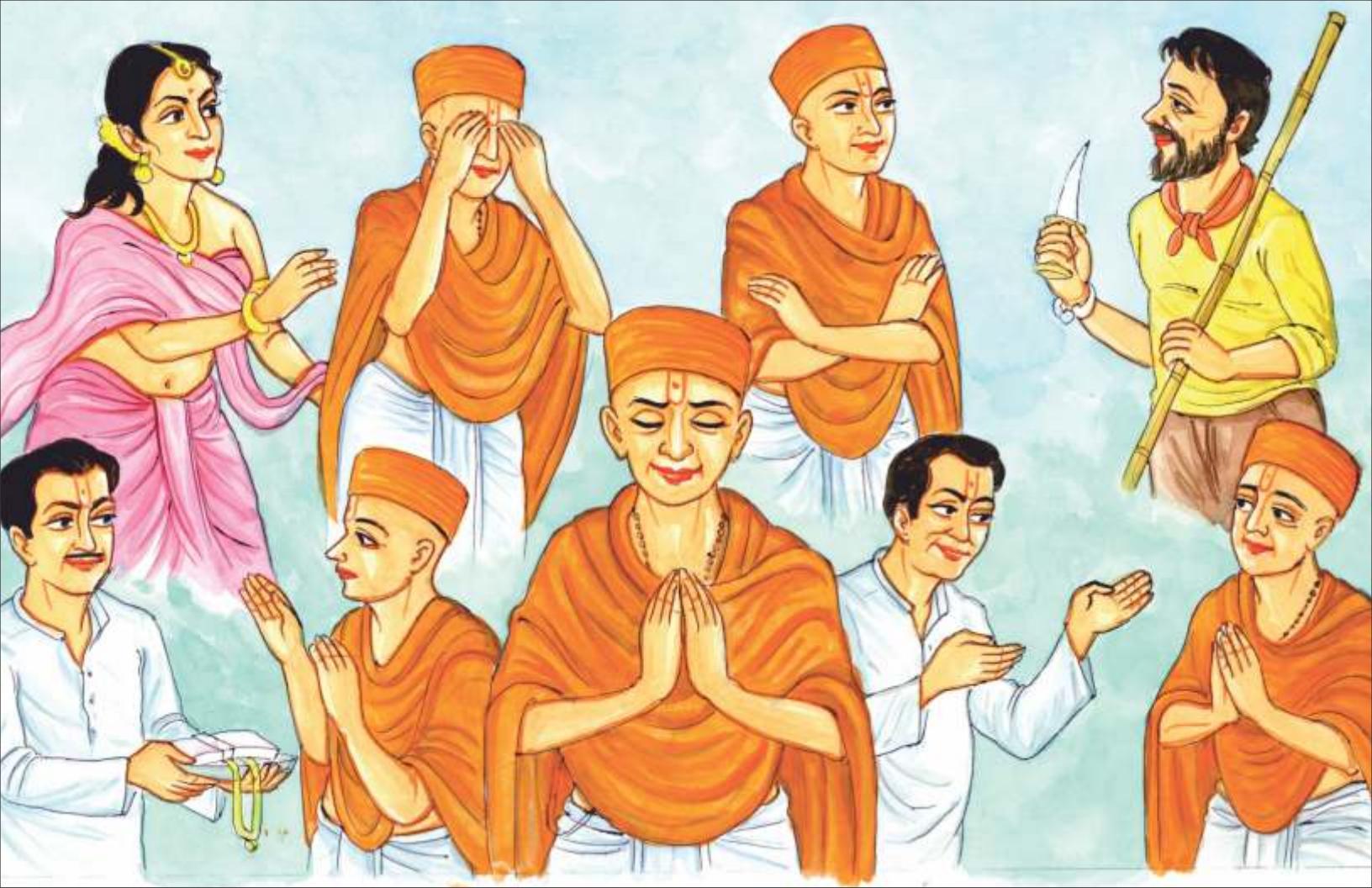


न स्पृश्यो नेक्षणीयश्च नारीवेषधरः पुमान् ।  
न कार्यं स्त्रीः समुद्दिश्य भगवद्गुणकीर्तनम् ॥१७९॥

अने स्त्रीना वेशने धरी रह्यो एवो जे पुरुष तेने अडवुं नहि अने तेनी सामुं जेवुं नहि अने ते साथे बोलवुं नहि, अने स्त्रीने उद्देश करीने भगवाननी कथा, वार्ता, कीर्तन पाण न करवां ॥१७९॥

स्त्री-वेश को धारण करने वाले पुरुष का स्पर्श न करें, उसकी ओर देखे भी नहीं और उसके साथ बोले भी नहीं और स्त्रियों को उद्देश करके भगवान की कथा, वार्ता, कीर्तन आदि भी न करें ॥१७९॥

They shall never look at nor talk to a man who is disguised as a female.  
They shall not give religious discourses and sing devotional songs directed at females. (179)



ब्रह्मचर्यव्रतत्यागंपरं वाक्यं गुरोरपि ।  
तैर्न मान्यं सदा स्थेयं धीरैस्तुष्टुरमानिभिः ॥१८०॥

अने ते नैष्ठिक ब्रह्मचारी, तेभाषे पोताना ब्रह्मचर्यव्रतनो त्याग थाय ऐवुं जे वयन, ते तो पोताना गुरुनुं पश्च न मानवुं. अने सदाकाण धीरजवान रहेवुं अने संतोषे युक्त रहेवुं; अने माने रहित रहेवुं।।१८०॥

और वे नैष्ठिक ब्रह्मचारी जिससे अपने नैष्ठिक व्रत का भंग होता हो, ऐसा वचन अपने गुरु का हो तो भी उसको न माने और निरंतर धर्यवान् रहें तथा संतोषयुक्त रहें एवं मान-अभिमान रहित रहें।।१८०॥

They shall not obey a command which violates their vows of celibacy even if that command is given by their guru. They shall always be patient, contented and without pride. (180)



स्वातिनैकव्यमायान्ती प्रसभं वनिता तु या ।  
 निवारणीया साभाष्यतिरस्कृत्यापि वा द्रुतम् ॥१८१॥

अने बणात्कारे करीने पोताने अतिशय सभीपे आवती ऐवी जे स्त्री, तेने बोलीने अथवा  
 तिरस्कार करीने पश्च तुरत वारवी, पश्च सभीपे आववा देवी नहि. ॥१८१॥

हठात् अपने अत्यंत समीप आनेवाली स्त्री से बोलकर अथवा उसका तिरस्कार करके भी  
 उसे लौटा दें परन्तु समीप कदापि न आने दें ॥१८१॥

They shall immediately stop a female who deliberately advances towards them, by talking to her or by showing contempt towards her. (181)

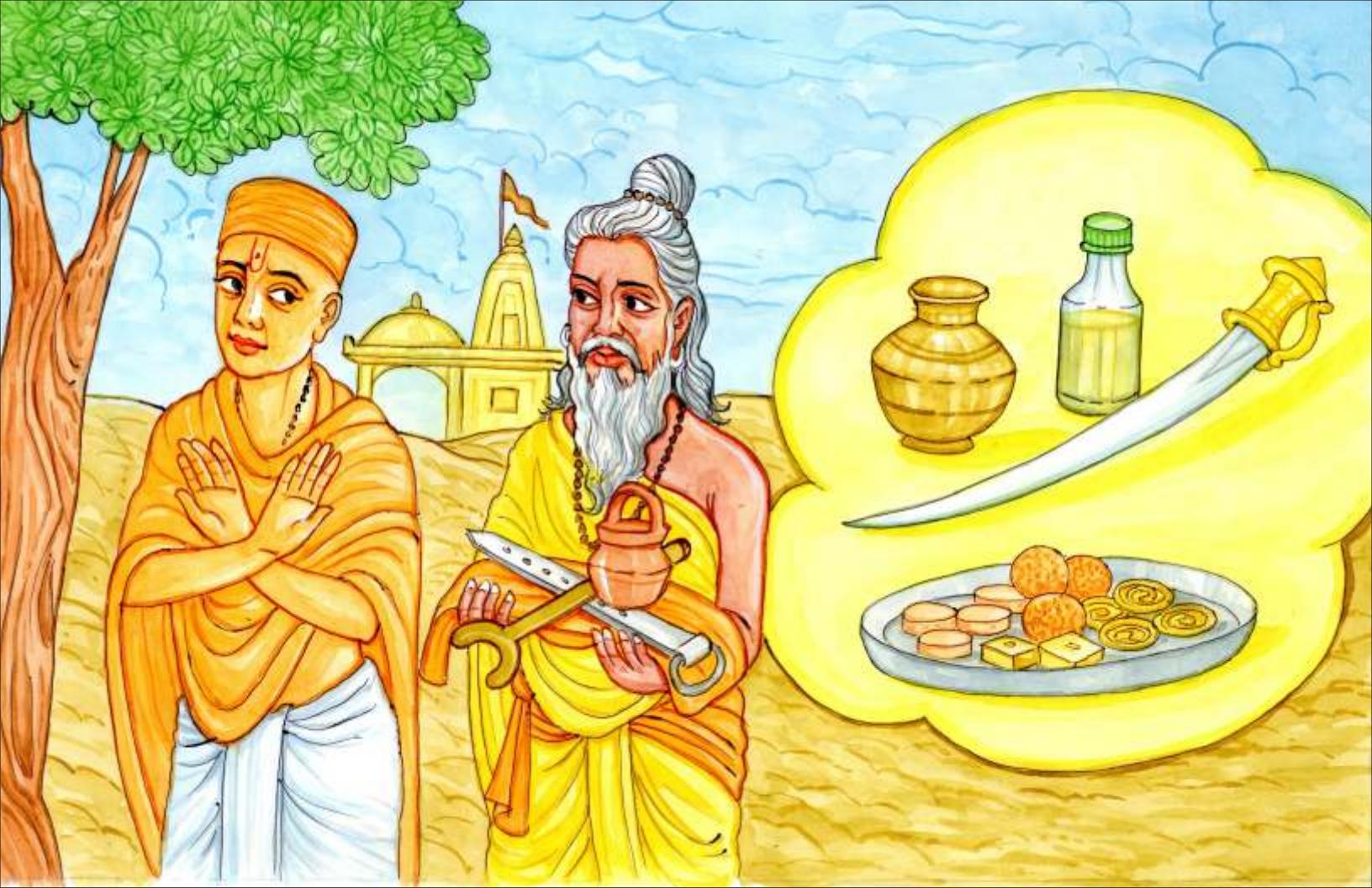


प्राणापद्मुपन्नायां स्त्रीणां स्वेषां च वा क्वचित् ।  
 तदा स्पृष्ट्वापि तद्रक्षा कार्या सम्भाष्य ताश्च वा ॥१८२॥

अने जो क्यारेय स्त्रीओनो अथवा पोतानो प्राण नाश थाय ऐवो आपत्काण आवी पडे, त्यारे  
 तो ते स्त्रीओने अडीने, अथवा ते साथे बोलीने पशा, ते स्त्रीओनी रक्षा करवी. अने पोतानी पशा रक्षा  
 करवी. ॥१८२॥

यदि कदाचित् स्त्रियों के अथवा अपने प्राण संकट में पड़ जायें, ऐसे आपत्काल के समय पर तो  
 स्त्रियों का स्पर्श करके अथवा उनके साथ बोलकर भी उस स्त्रियों की रक्षा करें तथा अपनी भी रक्षा करें  
 ॥१८२॥

In the case of an emergency, when the lives of females or their own  
 lives are in imminent danger, they shall protect the females and themselves by  
 talking to females or even by touching them. (182)

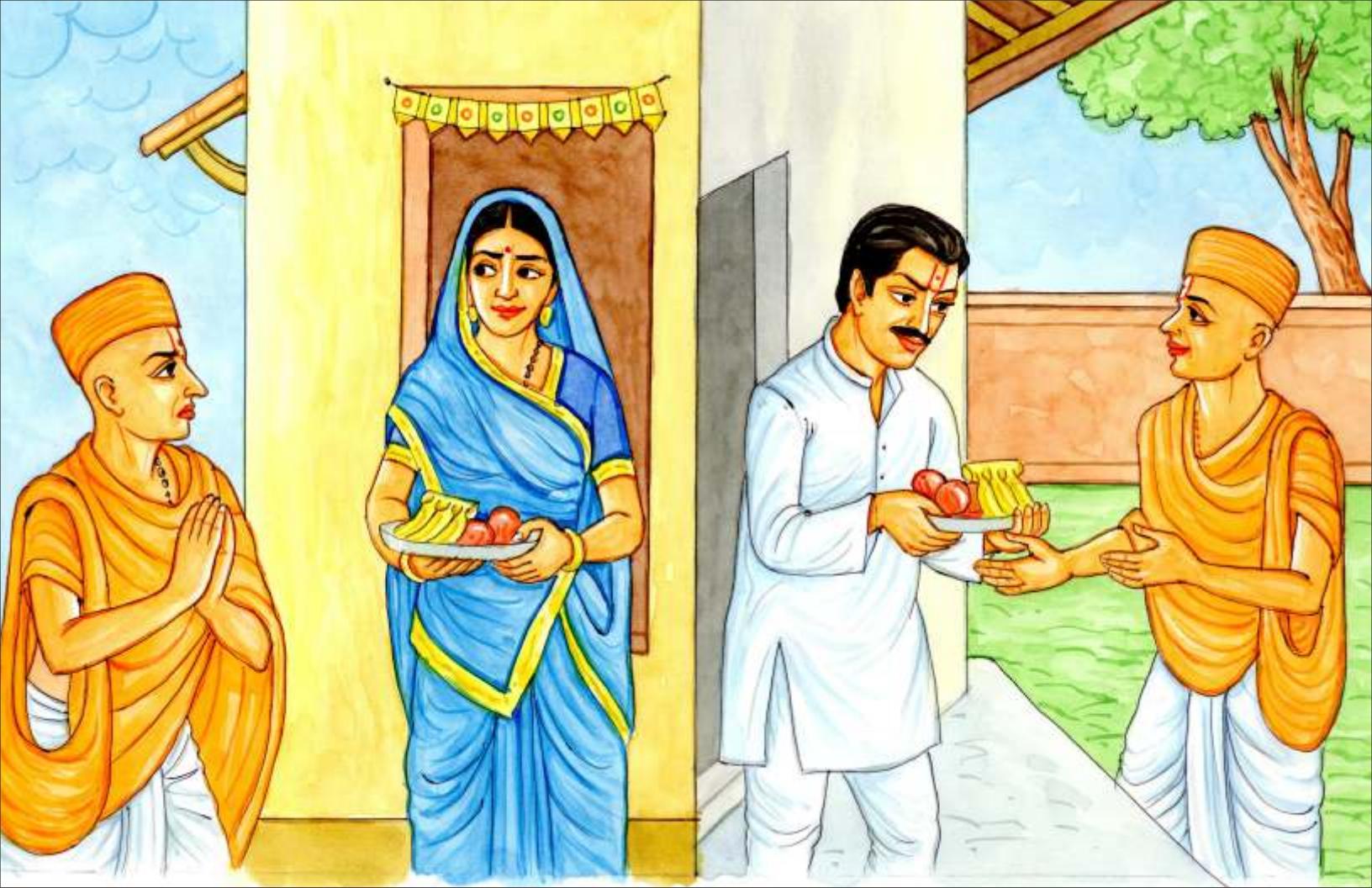


तैलाभ्यङ्गो न कर्तव्यो न धार्य चायुधं तथा ।  
वेषो न विकृतो धार्यो जेतव्या रसना च तैः ॥१८३॥

अने ते नैष्ठिक ब्रह्मचारी तेमणे, पोताने शरीरे तेलमर्दन न करवुं, ने आयुध न धारवुं, ने भयंकर ऐवो जे वेश ते न धारवो, अने रसना-ईन्द्रियने छतवी. ॥१८३॥

और वे नैष्ठिक ब्रह्मचारी अपने शरीर पर तेल मर्दन न करें तथा आयुध धारण न करें और भयंकर वेश भी धारण न करें तथा रसना इन्द्रिय को वश में करें ॥१८३॥

They shall never massage their body with oil, nor arm themselves, nor put on frightful clothes. They shall suppress their sense of taste. (183)

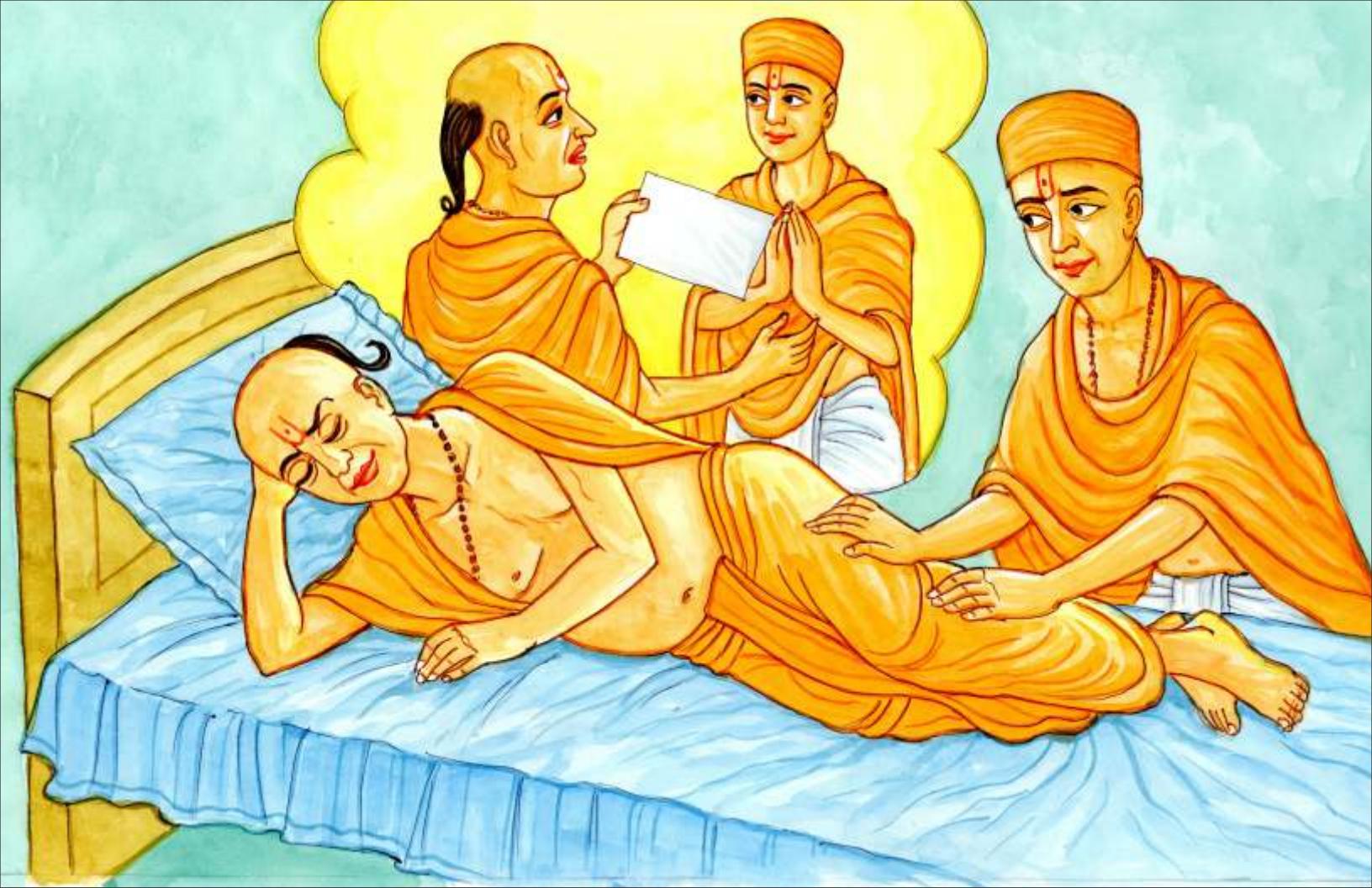


परिवेषणकर्ती स्याद्यत्र स्त्री विप्रवेशमनि ।  
न गम्यं तत्र भिक्षार्थं गन्तव्यमितरत्र तु ॥१८४॥

अने जे ब्राह्मणना घरने विधे स्त्री पीरसनारी होय, तेने धेर भिक्षा करवा जवुं नहि, ने ज्यां  
पुरुष पीरसनारो होय त्यां जवुं ॥१८४॥

जिस ब्राह्मण के घर पर स्त्री परोसने वाली हो उस घर पर भिक्षा के लिए न जायँ किन्तु जहाँ  
पुरुष परोसने वाला हो वहाँ जायँ ॥१८४॥

They shall never go for alms to those Brahmin homes where food is  
served by a female but shall go elsewhere, where food is served by a male.  
(184)

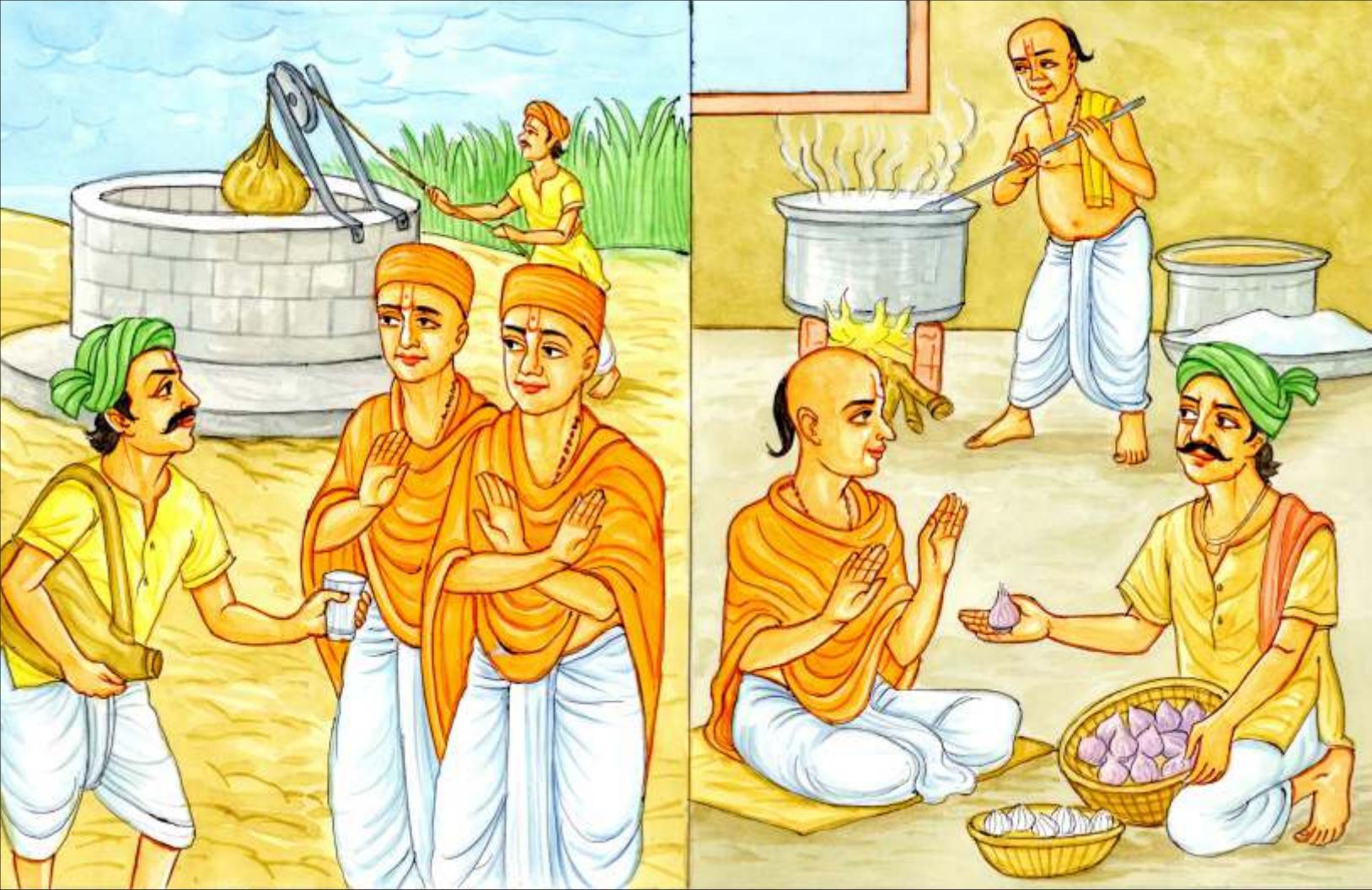


अभ्यासो वेदशास्त्राणां कार्यश्च गुरुसेवनम् ।  
वर्ज्यः स्त्रीणामिव स्त्रैणपुंसां सङ्गश्च तैः सदा ॥१८५॥

अने ते नैष्ठिक ब्रह्मचारी, तेभाषे वेदशास्त्रोनो अभ्यास करवो, ने गुरुनी सेवा करवी, ने स्त्रीओनी पेटे ज स्त्रैष पुरुषनो संग, जे ते सर्वकाले वर्ज्यवो. ॥१८५॥

वे नैष्ठिक ब्रह्मचारी वेदशास्त्रों का अध्ययन करें तथा गुरु की सेवा करें और स्त्रियों के समान ही स्त्रैण पुरुषों के संग का भी सर्वदा त्याग करें ॥१८५॥

They shall study the Vedas and other holy scriptures and serve their guru. They shall never associate themselves with effeminate males just as they would never associate themselves with females. (185)

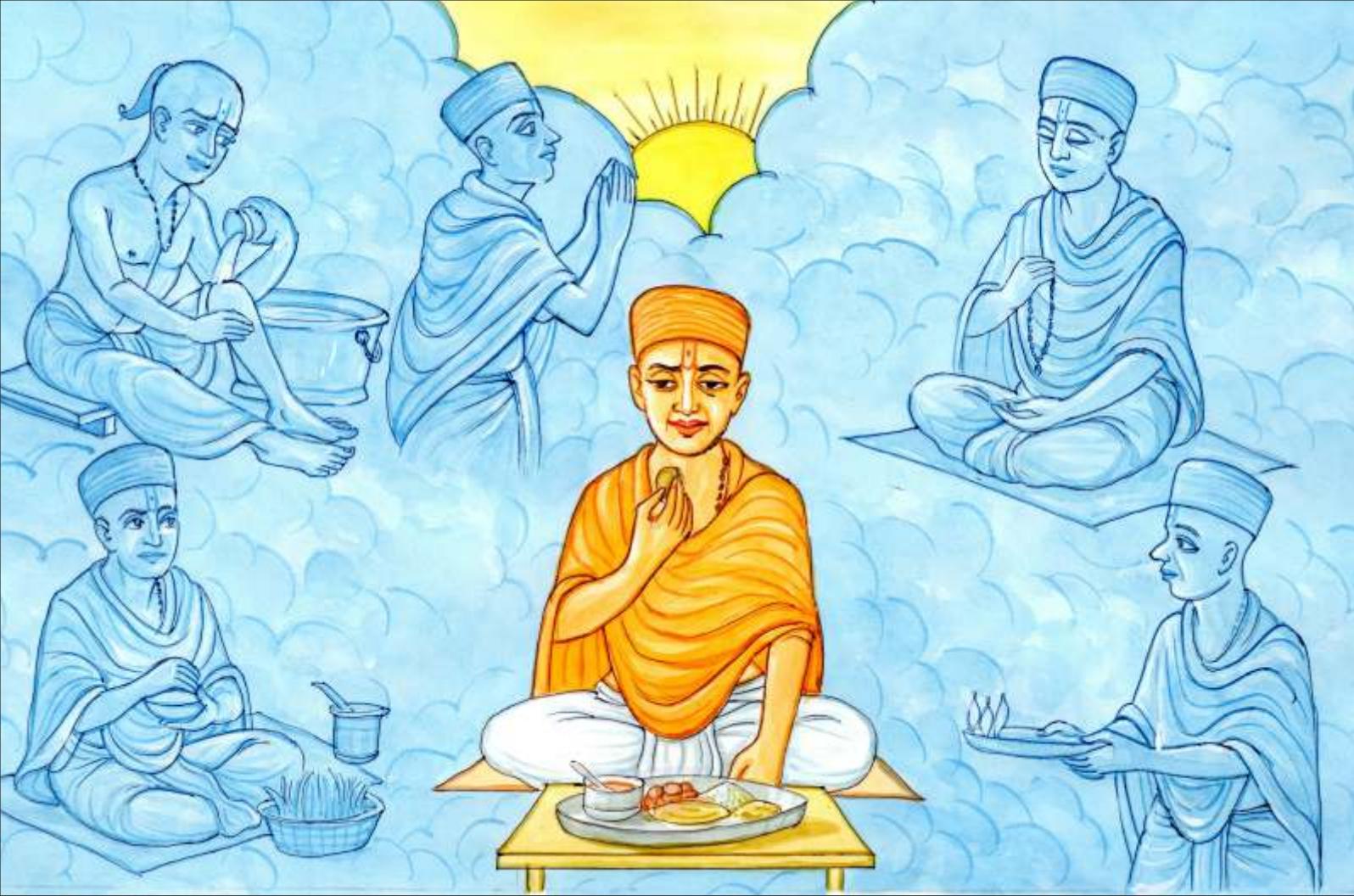


चर्मवारि न वै पेयं जात्या विप्रेण केनचित् ।  
पलाण्डुलशुनाद्यं च तेन भक्ष्यं न सर्वथा ॥१८६॥

अने जातिए करीने જે બ્રાહ્મણ હોય, તે-કોઈએ પણ ચર્મવારિ ન પીવું, અને દુંગળી ને લસણ આદિક જે અભક્ષ્ય વસ્તુ, તે બ્રાહ્મણ જાતિ હોય, તેણે કોઈ પ્રકારે ન ખાવી. ॥૧૮૬॥

और જાતિ સે જો બાહ્યાણ હો વે ચમડે કે પાત્ર સે નિકાલા હુઆ પાની કદાપિ ન પિયે તથા પ્યાજ ઔર લસુન આદિ અભક્ષ્ય ચીજોં કા ભક્ષણ કિસી ભી પ્રકાર સે ન કરેં ॥૧૮૬॥

My Brahmins disciples shall never drink water which has passed through a leather vessel. They shall never consume foods like onions, garlic, etc. (186)



स्नानं सन्ध्यां च गायत्रीजपं श्रीविष्णुपूजनम् ।  
अकृत्वा वैश्वदेवं च कर्तव्यं नैव भोजनम् ॥१८७॥

अने जे ब्राह्मण होय-तेणो स्नान, संध्या, गायत्रीनोजप, श्रीविष्णुनी पूजा अने वैश्वदेव ऐटलां वानां कर्या विना भोजन करवुं ज नहि. (ऐवी रीते नैष्ठिक ब्रह्मचारीना विशेष धर्म कह्या.) ॥१८७॥

जो ब्राह्मण हो वे स्नान, संध्या, गायत्री का जप, श्री विष्णु पूजा तथा वैश्वदेव, इतना किये बिना भोजन कदापि न करें। (इस प्रकार नैष्ठिक ब्रह्मचारी के धर्म कहेगये) ॥१८७॥

Brahmins shall never take meals without performing daily rituals viz. bath, Sandhya (special prayers), chanting of Gayatri Mantra, worship of Shree Vishnu and Vaishvadev (food offering ceremony). (187)

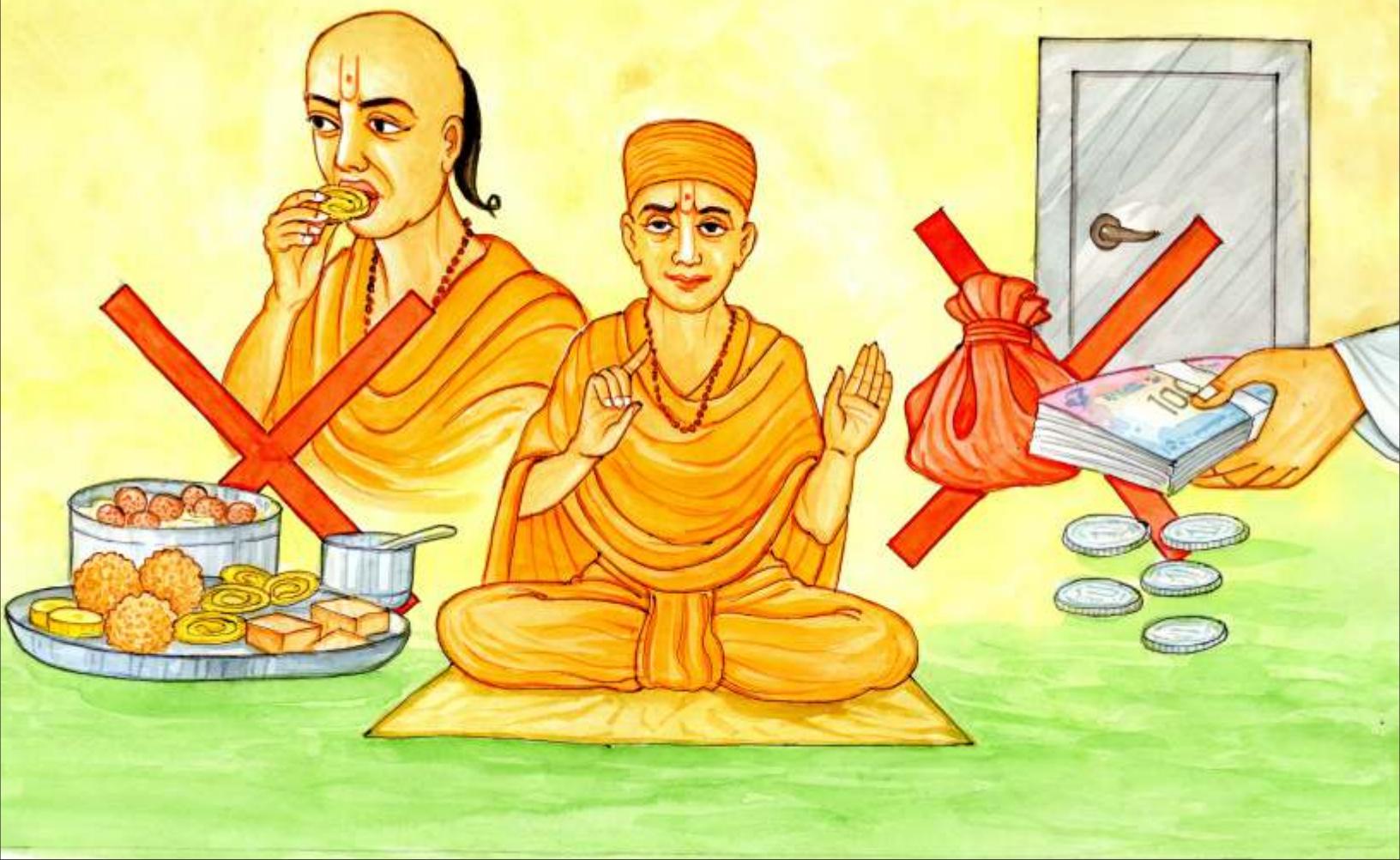


साधवो येऽथ तैः सर्वैर्नैष्ठिकब्रह्मचारिवत् ।  
स्त्रीस्त्रैणसङ्गादि वर्ज्यं जेतव्याश्रान्तरारयः ॥१८८॥

હવે સાધુના જે વિશેષ ધર્મ તે કહીએ છીએ : અમારે આશ્રિત જે સર્વ સાધુ તેમણે, નैષ્ઠિક બ્રહ્મચારીની પેઠે સ્ત્રીઓનાં દર્શન-ભાષણાદિક પ્રસંગનો ત્યાગ કરવો; તથા સ્ત્રોણ પુરુષના પ્રસંગાદિકનો ત્યાગ કરવો, અને અંતઃશત્રુ જે કામ, કોધ, લોભ અને માન આદિક, તેમને જીતવા. ॥१८८॥

अब साधु के विशेष धर्म कहते हैं - हमारे आश्रित सभी साधु, नैष्ठिक ब्रह्मचारी की भाँति ही स्त्रियों के दर्शन-भाषण आदि प्रसंग का त्याग करें तथा स्त्रैण पुरुष के प्रसंगादि का त्याग करें और काम, क्रोध, लोभ एवं मान ईत्यादि अंतःशत्रुओं को जीतें ॥१८८॥

Just as Naishthik Brahmcharis, Sadhus shall avoid association with females and effeminate males, visually and verbally. They shall conquer inner enemies like lust, anger, greed, pride, etc. (188)



सर्वेन्द्रियाणि जेयानि रसना तु विशेषतः ।  
न द्रव्यसङ्ग्रहः कार्यः कारणीयो न केनचित् ॥१८९॥

अने सर्वे जे ईन्द्रियो ते ज्ञतवी अने रसना ईन्द्रियने तो विशेषे करीने ज्ञतवी; अने द्रव्यनो संग्रह पोते करवो नहि, ने कोई भीजा पासे पशा कराववो नहि. ॥१८९॥

और वे सभी ईन्द्रियों को वश में करें और रसना ईन्द्रिय को तो विशेषरूप से वश में करें ।  
द्रव्य का संग्रहन तो स्वयं करे न तो अन्य के पास करावें ॥१८९॥

They shall control all senses, especially the sense of taste, and shall not accumulate wealth or ask others to do so on their behalf. (189)



न्यासो रक्ष्यो न कस्यापि धैर्यं त्याज्यं न कर्हिचित् ।  
न प्रवेशयितव्या च स्वावासे स्त्री कदाचन ॥१९०॥

अने कोईनी पण थापणा न राखवी, अने क्यारेय पण धीरजतानो त्याग न करवो; अने पोताना उतारानी जग्या बंधिनी होय, तो तेने विषे क्यारेय पण स्त्रीनो प्रवेश थवा देवो नहि.  
॥१९०॥

किसी की भी धरोहर न रखें और कदापि धैर्य का त्याग न करें, और अपने आवास-स्थान  
में स्त्री का प्रवेश कदापि न होने दें ॥१९०॥

They shall never accept deposits from others, never lose patience and  
shall never allow a female to enter their place of residence. (190)



न च सङ्घं विना रात्रौ चलितव्यमनापदि ।  
एकाकिभिर्न गत्व्यं तथा क्वापि विनापदम् ॥१९१॥

अने ते साधु तेमणे, आपत्काण पड्या विना रात्रिने विषे संगसोबत विनानुं चालवुं नहि;  
तथा आपत्काण पड्या विना क्यारेय पाण एकला चालवुं नहि. ॥१९१॥

वें साधु आपत्काल के बिना रात्रि के समय संघसाथी के सिवा कदापि न चलें और  
आपत्काल के बिना कदापि अकेले न चलें ॥१९१॥

Except in an emergency, they shall never go out alone during the night time nor shall they go out without company of fellow Sadhus at any time. (191)

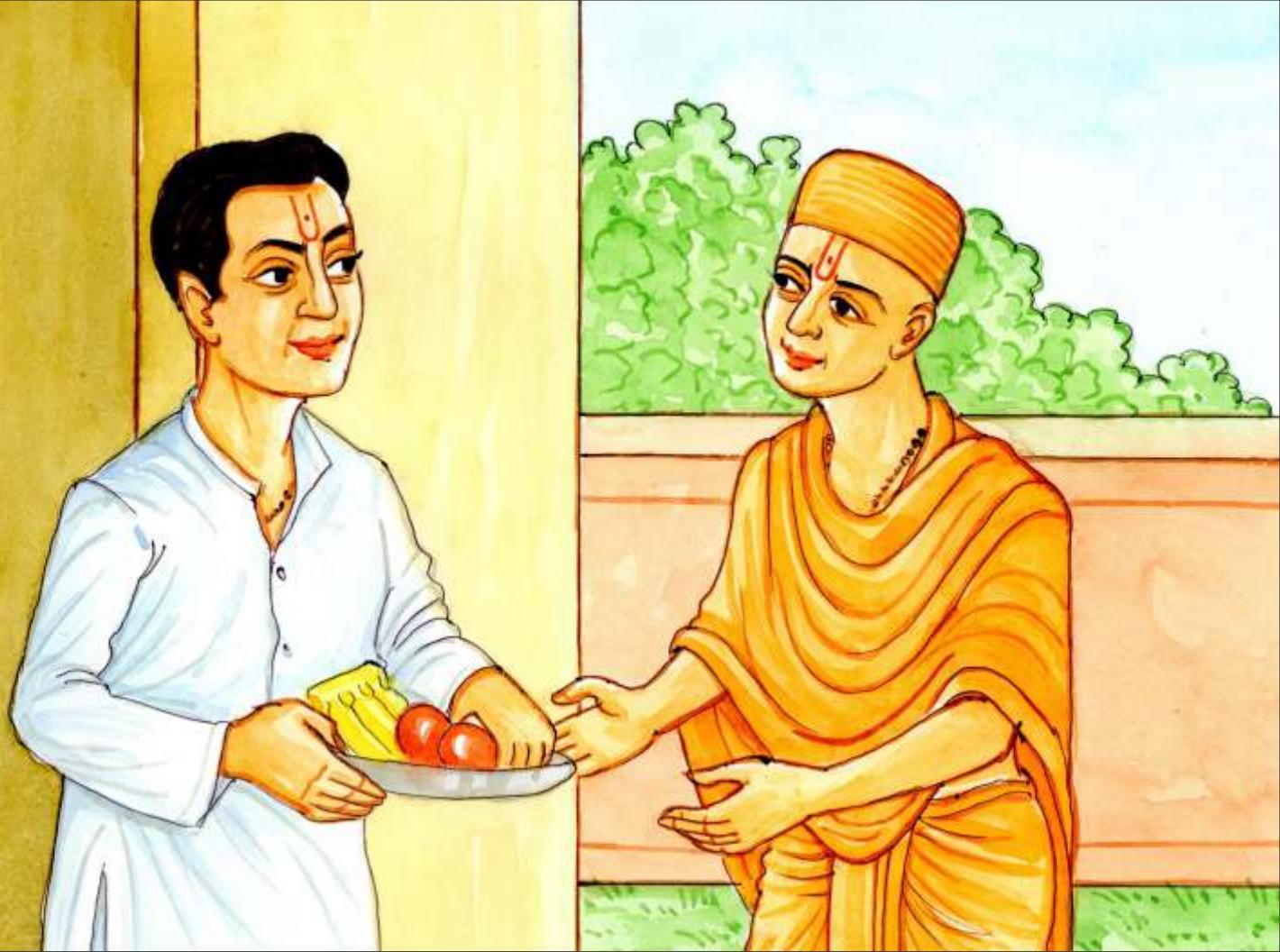


अनर्धं चित्रितं वासः कुसुम्भाद्यैश्च रज्जितम् ।  
न धार्यं च महावस्त्रं प्राप्तमन्येच्छ्यापि तत् ॥१९२॥

अने जे वस्त्र बहु भूल्यवाणुं होय तथा चित्रविचित्र भातनुं होय तथा कसुंभादिक जे रंग, तेषो करीने रंगेलुं होय तथा शाल-दुशाला होय, ने ते जो बीजानी इच्छाए करीने पोताने प्राप्त थयुं होय तो पण ते वस्त्र पोते पहेरवुं -ओढवुं नहि. ॥१९२॥

और जो वस्त्र बहु मूल्यवान हों, चित्र-विचित्र चित्रों से युक्त हो तथा कुसुम्भी आदि रंगो से रंगा हुआ हो तथा शाल-दुशाला हो और अगर वह अन्य की इच्छा से अपने को प्राप्त हुआ हो तो भी उसको धारण न करें ॥१९२॥

They shall never wear shawls or such other garments, which are expensive, decorative, dyed with gaudy colours, even if they have been reverently given to them by others. (192)

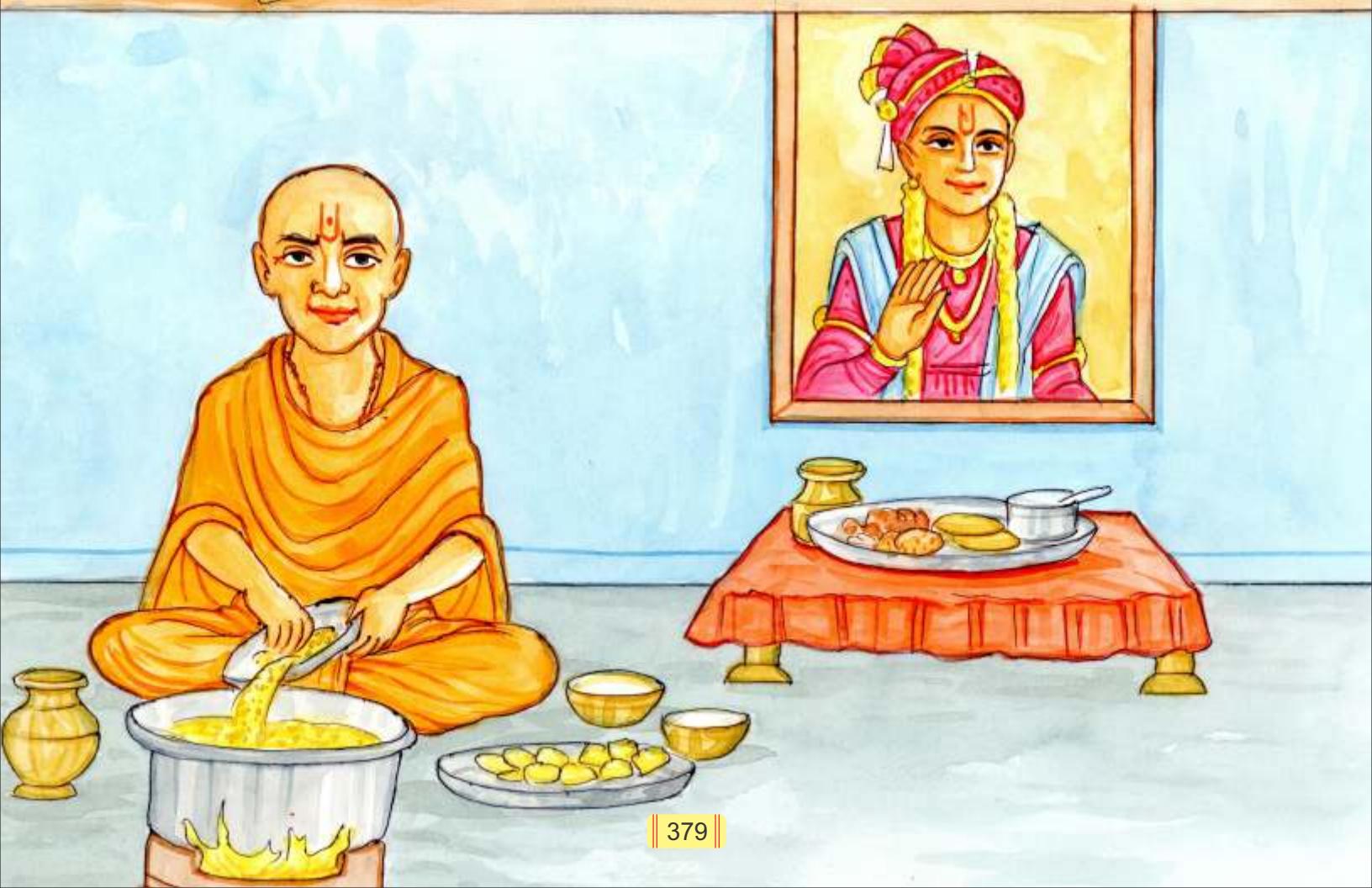
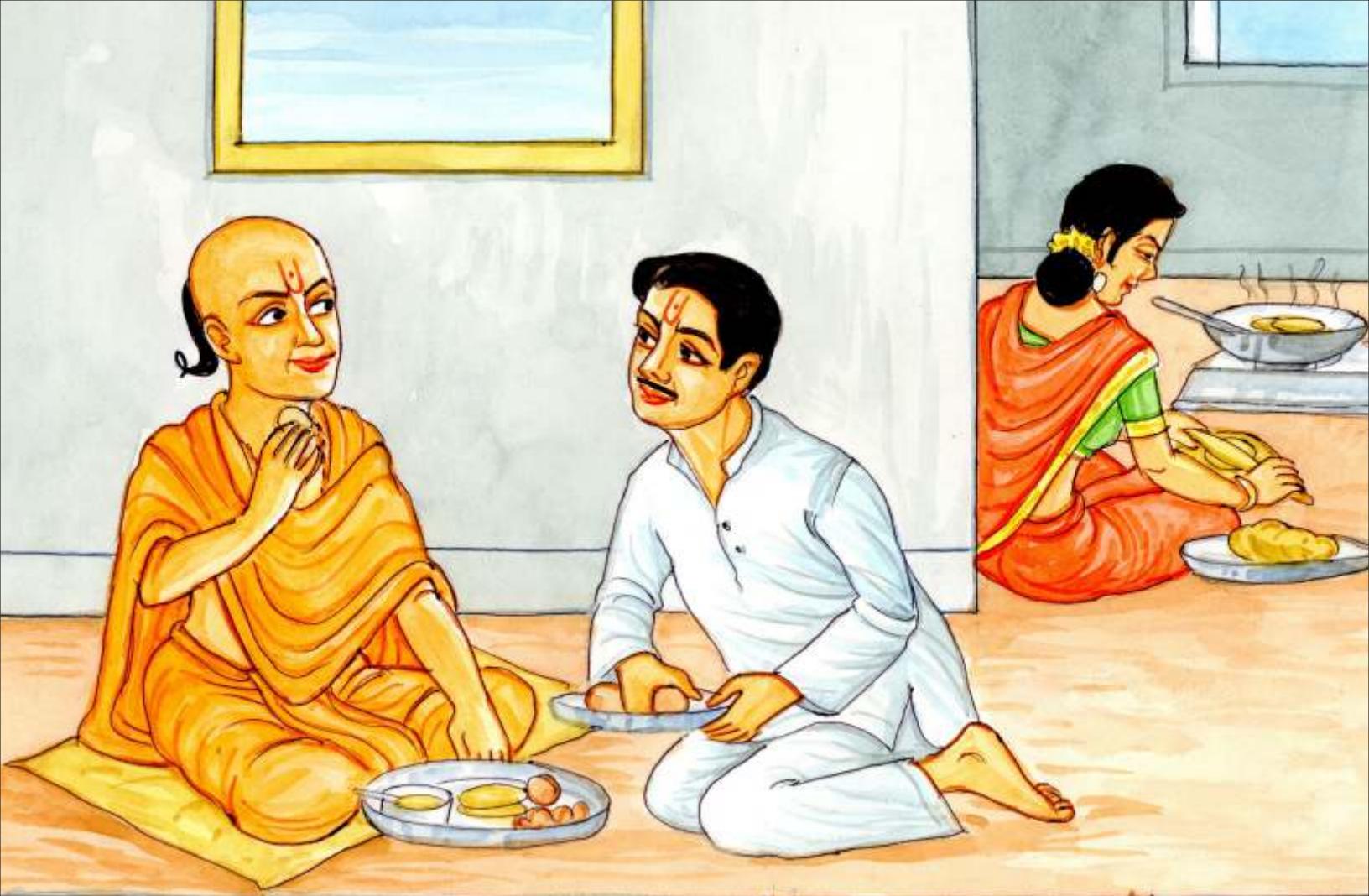


भिक्षां सभां विना नैव गन्तव्यं गृहिणो गृहम् ।  
व्यर्थः कालो न नेतव्यो भक्ति भगवतो विना ॥१९३॥

अने भिक्षा तथा सभाप्रसंग - ए बे कार्य विना गृहस्थना घर प्रत्ये जवुं नहि; अने भगवाननी जे नव प्रकारनी भक्ति ते विना व्यर्थ काण निर्गमवो नहि, निरंतर भक्ति करीने ज काण निर्गमवो ॥१९३॥

और भिक्षा तथा सभाप्रसंग, इन दो कार्यों के सिवा गृहस्थ के घर पर न जायँ और भगवान् की नव प्रकार की भक्ति बिना व्यर्थ काल न बितावे, निरंतर भक्ति करके ही समय व्यतीत करें ॥१९३॥

They shall never go to a householder's place except for religious gatherings or receiving alms. They shall always utilize their time in devotion to God instead of wasting it idly. (193)



पुमानेव भवेद्यत्र पक्वात्रपरिवेषणः ।  
 ईक्षणादि भवेत्तैव यत्र स्त्रीणां च सर्वथा ॥१९४॥  
 तत्र गृहिणृहे भोक्तुं गन्तव्यं साधुभिर्मम ।  
 अन्यथामात्रमर्थित्वा पाकः कार्यः स्वयं च तैः ॥१९५॥

अने जे गृहस्थना घरने विशे रांधेल अन्ननो पीरसनारो पुरुष ज होय, तथा स्त्रीओनो दर्शनादि क्रसंग कोई रीते थाय अमन होय; ॥१९४॥

तेवी रीतनुं जे गृहस्थनुं घर ते प्रत्ये अमारा साधु तेमणे, जमवा जवुं; अने ए कह्युं तेवुं न होय, तो कायुं अन्न माणीने पोताना हाथे रसोई करवी, ने भगवानने नैवेद्य धरीने जमवुं. ॥१९५॥

और जिस गृहस्थ के घर पर पकाये हुए अन्न को परोसने वाला पुरुष ही हो तथा स्त्रियों के दर्शनादि का प्रसंग किसी भी प्रकार से न हो ॥१९४॥

ऐसे गृहस्थ के घर पर हमारे साधु भोजन के लिए जायँ और ऊपर कहे अनुसार यदि न हो तो कच्चा अन्न माँगकर अपने हाथ से भोजन बनाकर भगवान को नैवेद्य समर्पित करके भोजन करें ॥१९५॥

They shall go for meals to a householder's place where food is served only by males, and where they have no contact with or sight of females. If this facility is not available, they shall ask for cereals etc., personally cook the food and offer it to Lord Shree Krishna before consuming it. (194-195)



आर्षभो भरतः पूर्वं जडविप्रो यथा भुवि ।  
अवर्ततात्र परमहंसैर्वत्यं तथैव तैः ॥१९६॥

अने पूर्वे ऋषभदेव भगवानना पुत्र, જે ભરતજી, તે પૃથ્વીને વિષે ૪૩ બ્રાહ્મણ થકા જેમ વર્તતાહતા, તેમ જ પરમહંસ એવા જે અમારા સાધુ, એમણે વર્તવું ॥૧૯૬॥

पूर्व काल मेंऋषुभदेव भगवान् के पुत्र भरतजी जिस प्रकार पृथ्वी पर जड ब्राह्मण के समान आचरण करते थे ठीक उसी प्रकार परमहंस ऐसे जो हमारे साधु वे आचरण करें ॥१९६॥

They shall behave like Bharatji (son of Bhagwan Rishabhadev) who in the ancient times used to act as an insenate Brahmin. (196)



वर्णिभिः साधुभिश्चैतर्वर्जनीयं प्रयत्नतः ।  
ताम्बूलस्याहिफेनस्य तमालादेश भक्षणम् ॥१९७॥

अने नैष्ठिक ब्रह्मचारी, ने ए साधु तेमणे, ताम्बूल तथा अझीषा तथा तमाकुं इत्यादिनुं जे भक्षण, ते जतने करीने वर्जवुं ॥१९७॥

और वे नैष्ठिक ब्रह्मचारी एवं साधु ताम्बूल, अफीण तथा तम्बाकू इत्यादि के भक्षण का प्रयत्नपूर्वक त्याग करें ॥१९७॥

My Naishthik Brahmchari and Sadhu disciples shall strictly abstain from taking betel leaves, opium, tobacco and other similar intoxicating substances. (197)

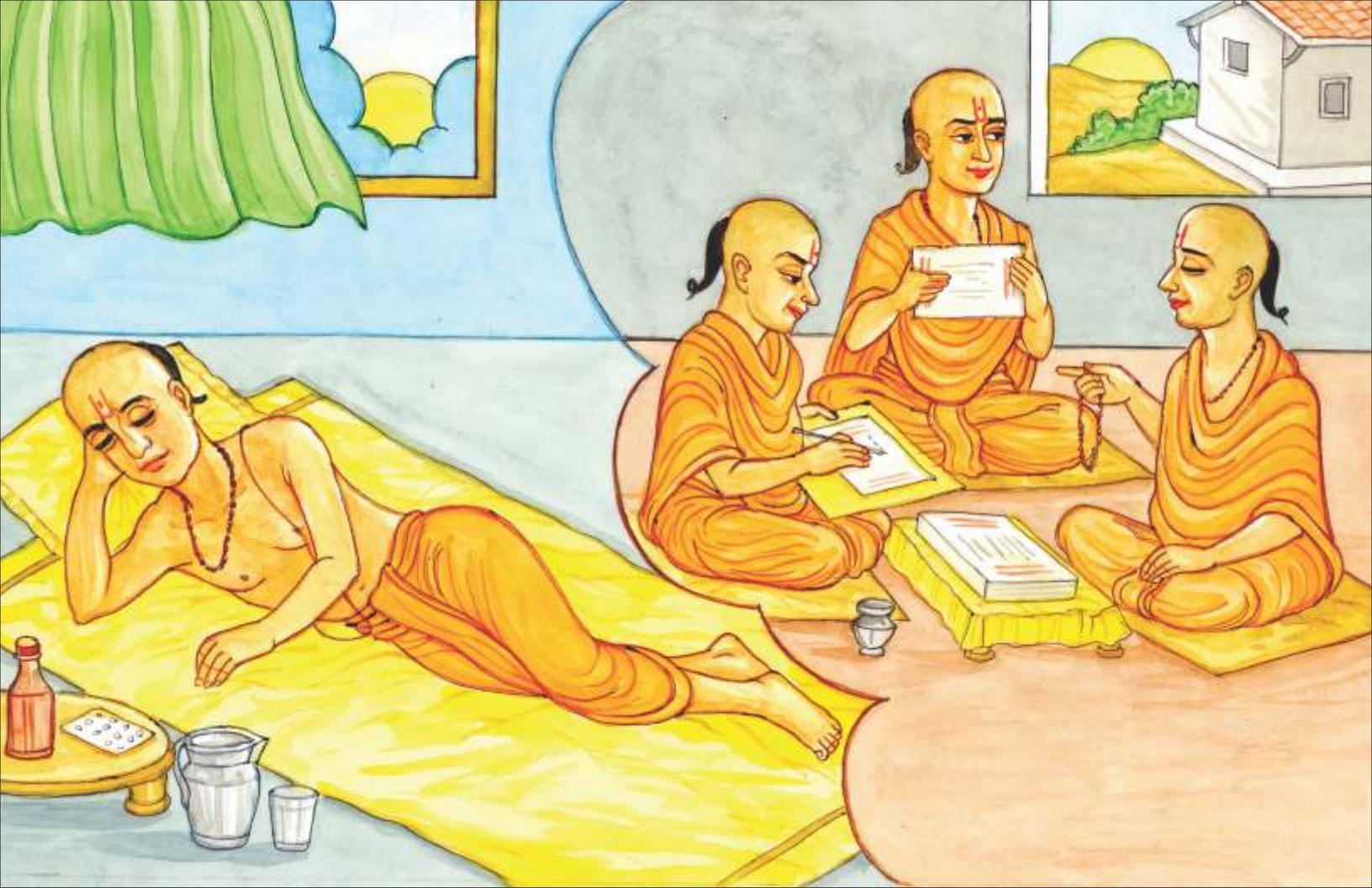


संस्कारेषु न भोक्तव्यं गर्भाधानमुखेषु तैः ।  
प्रेतश्राद्धेषु सर्वेषु श्राद्धे च द्वादशाहिके ॥१९८॥

अने ते नैष्ठिक ब्रह्मचारी ने साधु तेमणे, गर्भाधान आदि, जे संस्कार तेमने विशे जमवुं नहि तथा एकादशाह पर्यत जे प्रेतश्राद्ध तेमने विशे जमवुं नहि तथा द्वादशाह श्राद्धने विशे जमवुं नहि ॥१९८॥

और वे नैष्ठिक ब्रह्मचारी एवं साधु गर्भाधान आदि संस्कार प्रसंग पर भोजन न करें तथा एकादशाह पर्यन्त जो प्रेत श्राद्ध उसके प्रसंग पर तथा द्वादशाह श्राद्ध में भी भोजन न करें ॥१९८॥

They shall never dine at ceremonies pertaining to conception, or any ceremony related to Ghost Shrāddh and twelfth day ceremony related to Shrāddh (rituals performed for the deceased), or any other similar ceremonies. (198)

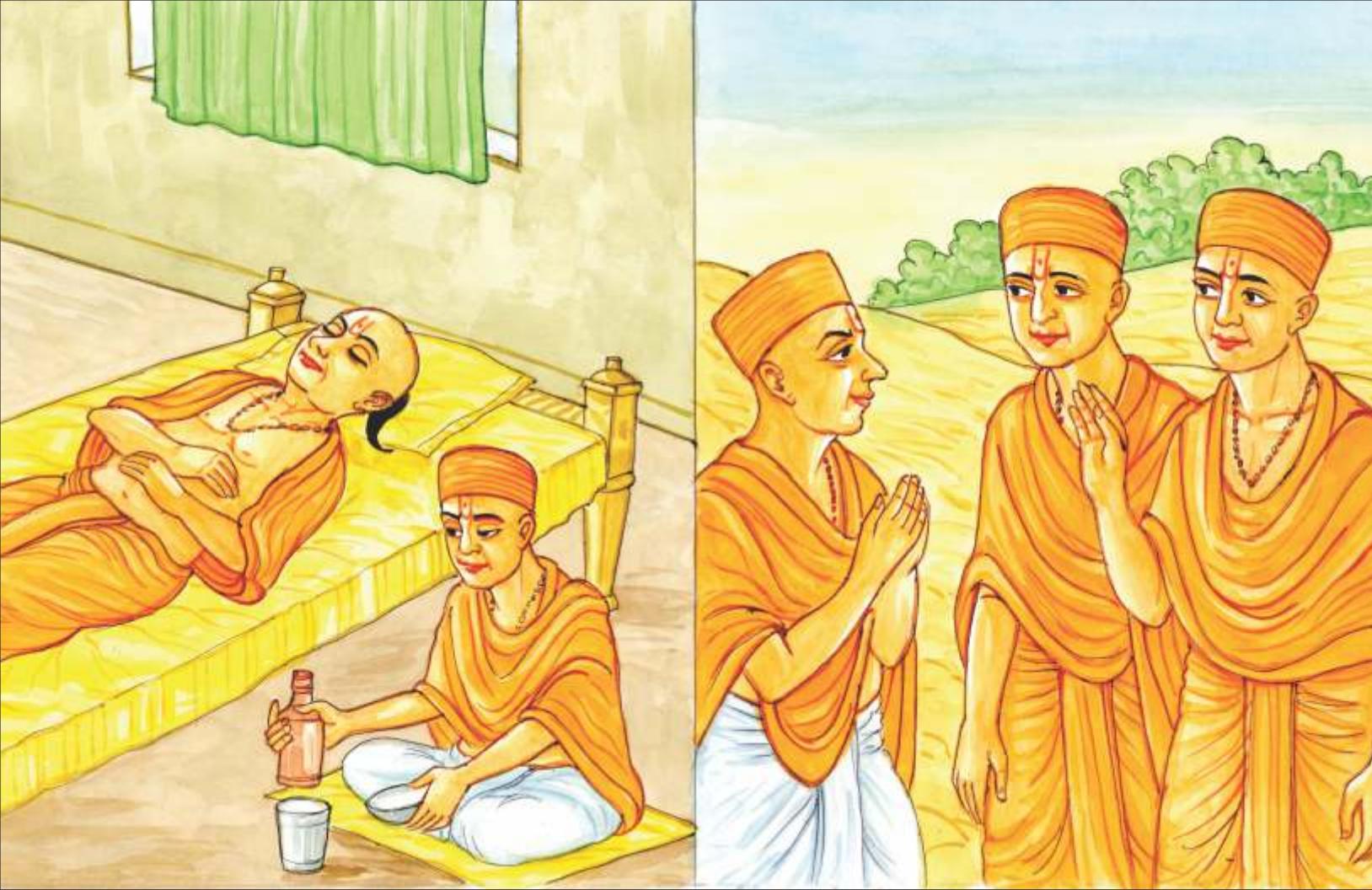


दिवास्वापो न कर्तव्यो रोगाद्यापदमन्तरा ।  
ग्राम्यवार्ता न कार्या च न श्रव्या बुद्धिपूर्वकम् ॥१९९॥

अने रोगादिक आपत्काण पड़ा विना दिवसे सूबुं नहि, अने ग्राम्यवार्ता करवी नहि, ने  
जाणीने सांभणवी नहि. ॥१९९॥

रोगादि आपत्काल के बिना दिन में निद्रा न करें और ग्राम्यवार्ता न करें और जान-बूझकर  
सुने भी नहीं ॥१९९॥

They shall never sleep during the day time except when they are unwell. They shall never intentionally indulge themselves in any gossip. (199)



स्वप्नं न तैश्च खट्वायां विना रोगादिमापदम् ।  
निच्छव्वा वर्तितव्यं च साधूनामग्रतः सदा ॥२००॥

अने ते नैष्ठिक ब्रह्मचारी ने साधु तेमणे, रोगादिक आपत्काण पड़या विना खाटला उपर सूवुं नहि; अने साधुनी आगण तो निरंतर निष्कप्टपणे वर्तवुं ॥२००॥

वे नैष्ठिक ब्रह्मचारी तथा साधु रोगादि आपत्काल के बिना चारपाई पर कभी न सोयें और साधुओं के आगे निरंतर निष्कप्ट भाव से आचरण करें ॥२००॥

They shall never sleep on a bed except when they are unwell. They shall always behave sincerely with other saints. (200)

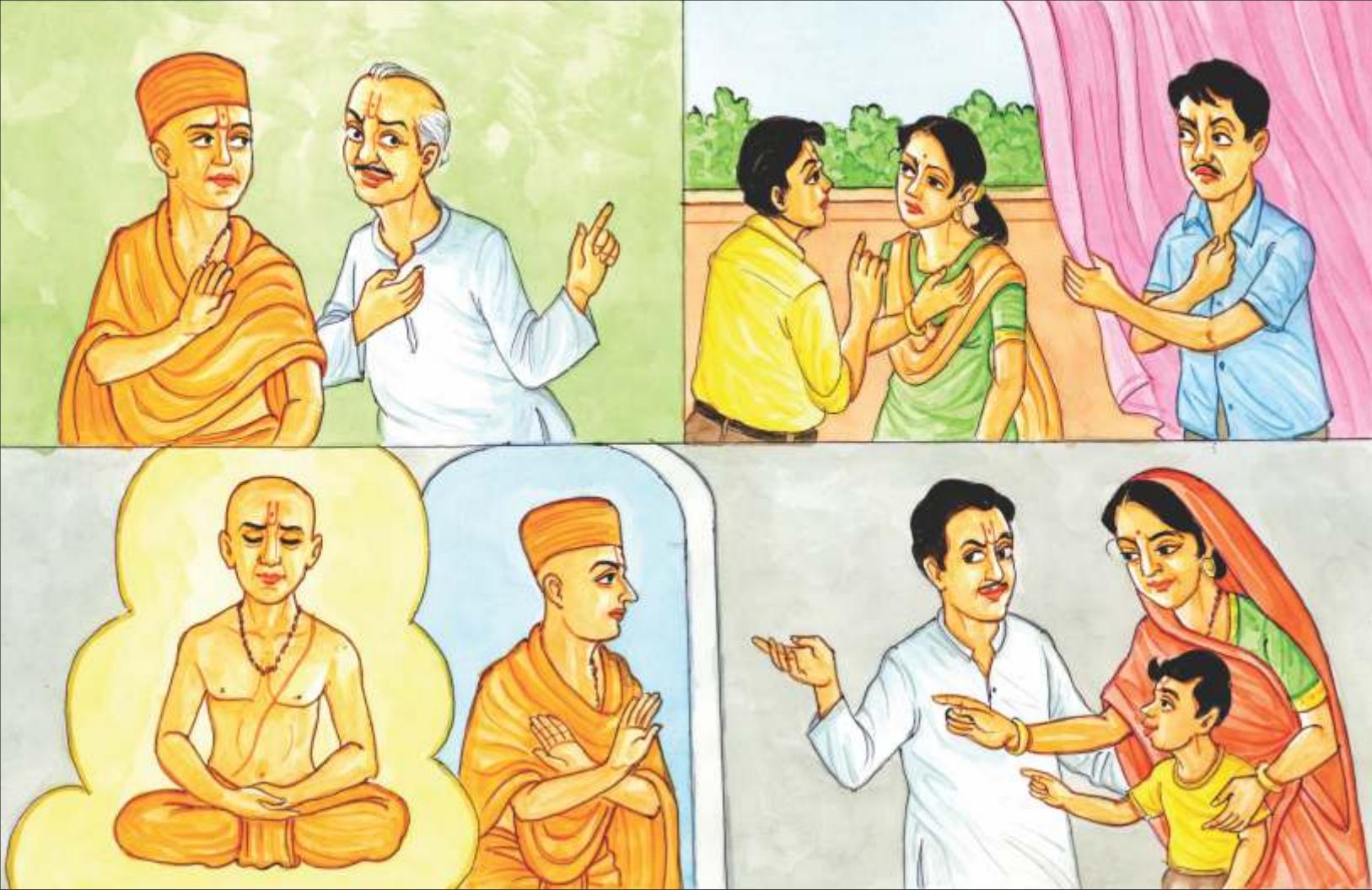


गालिदानं ताडनं च कृतं कुमतिभिर्जनैः ।  
क्षत्तव्यमेव सर्वेषां चिन्तनीयं हितं च तैः ॥२०१॥

अने ते साधुने ब्रह्मचारी, तेमणे, कोई कुमतिवाणा दुष्ट जन होय, ने ते पोताने गाण दे अथवा मारे, तो ते सहन ज करवुँ; पश्च तेने साभी गाण न देवी, ने मारवो नहि; अने तेनु जेम हित थाय, तेम ज मनभां चिंतवन करवुँ;  
पश्च तेनु भूं थाय ऐवो तो संकल्प पश्च न करवो. ॥२०१॥

और उन साधु तथा ब्रह्मचारी को यदि कोई दुष्टमतिवाले दुर्जन गाली दें अथवा मार मारे तो उसे सहन ही करें परन्तु उसके प्रतिकार में गाली न दें, मारे भी नहीं तथा जिस प्रकार उसका कल्याण हो वैसा ही मनमें चिंतन करें परन्तु उसका बुरा हो ऐसा संकल्प भी न करें ॥२०१॥

They shall not retaliate if misguided or wicked persons abuse them or beat them, but shall, instead, be tolerant and always wish them well. (201)



दूतकर्म न कर्तव्यं पैशुनं चारकर्म च ।  
देहेऽहन्ता च ममता न कार्या स्वजनादिषु ॥२०२॥

अने कोईनुं दूतपशुं न करवुं तथा चाडियापशुं न करवुं; ने कोईना चारचक्षु न थवुं अने देहने विषे अहंबुद्धि न करवी, ने स्वजनादिकने विशे ममता न करवी. (ऐवी रीते साधुना विशेष धर्म कह्या.)  
॥२०२॥

और किसी का दूत-कार्य न करें तथा चुगल-खोरी भी न करें और किसी के चारचक्षु न बनें ( जासूसी न करें ) तथा देह में बुद्धि और स्वजनादि में ममत्वबुद्धि न रखें ( इस प्रकार साधु के विशेष धर्म कहे गयें ) ॥२०२॥

They shall never act as a messenger, indulge in backbiting or spying.  
They shall avoid egoism and shall not have attachment towards their relatives.  
(202)



इति सङ्क्षेपतो धर्माः सर्वेषां लिखिता मया ।  
साम्प्रदायिकग्रन्थेभ्यो ज्ञेय एषां तु विस्तरः ॥२०३॥

अने अमारे आश्रित ऐवा जे सत्संगी बाई-भाई सर्वे, तेमना जे सामान्य धर्म अन विशेष धर्म, ते जे ते संक्षेपे करीने आवी रीते अमे लभ्या छे; अने आ धर्मनो जे विस्तार ते तो अमारा संप्रदायना जे ग्रन्थ, ते थकी जाणावो ॥२०३॥

इस प्रकार हमने अपने आश्रित सत्संगी-स्त्री, पुरुष सभी के सामान्य धर्म तथा विशेष धर्म संक्षेप से लिखे हैं, इन धर्मोंका विस्तार हमारे सम्प्रदाय के अन्य ग्रन्थोंद्वारा जानना ॥२०३॥

I have thus described briefly, the general and special Dharmas of all My disciples. They shall refer to Shastras (scriptures) of our Sampradaya to learn them in detail. (203)

ऋग्वेद

यजुर्वेद

साम्वेद

अथर्ववेद



श्रीमद्  
भागवत

वाग्नवल्ये  
स्मृति

महाभारत  
श्री  
भगवद् गीता

स्कंद पुराण  
विष्णु छंड

सच्चास्त्राणां समुद्धृत्य सर्वेषां सारमात्मना ।  
पत्रीयं लिखिता नृणामभीष्टफलदायिनी ॥२०४॥

अने सर्वे જે સચ્ચાસ્ત્ર તેનો જે સાર, તેને અમે અમારી બુદ્ધિએ કરીને ઉદ્ઘારીને, આ શિક્ષાપત્રી, જે તે લખી છે; તે કેવી છે, તો સર્વ મનુષ્ય માત્રને મનવાંછિત ફળની દેનારી છે ॥૨૦૪॥

हमने अपनी बुद्धि से सभी सच्चास्त्रों का सारांश निकाल कर यह शिक्षापत्री लिखी हैं, वह कैसी हैं? तो मनुष्यमात्र को अभीष्ट-मनोवांछित फल देने वाली हैं ॥२०४॥

I have written this Shikshapatri, taking the essence of all Shastras. It fulfills the wishes of all My disciples. (204)



इमामेव ततो नित्यमनुसृत्य ममाश्रितः ।  
यतात्मभिर्वित्तव्यं न तु स्वैरं कदाचन ॥२०५॥

ऐ हेतु भाटे अमारा आश्रित जे सर्व सत्संगी तेमણे, सावधानपणे करीने नित्य प्रत्ये आ  
शिक्षापत्रीने अनुसरीने ज वर्तवु. पण पोताना मनने जाणे तो क्यारेय न वर्तवु. ॥२०५॥

इसलिए हमारे आश्रित सभी सत्संगी सावधानी से निरंतर इस शिक्षापत्री के अनुसार ही  
आचरण करें परन्तु अपनी इच्छानुसार कदापि आचरण न करें ॥२०५॥

Therefore all My disciples shall always observe the precepts of this  
Shikshapatri, but never behave as they desire. (205)



वर्तिष्यन्ते य इत्थं हि पुरुषा योषितस्तथा ।  
ते धर्मादिचतुर्वर्गसिद्धिं प्राप्स्यन्ति निश्चितम् ॥२०६॥

अने જે અમારા આશ્રિત પુરુષ ને સ્ત્રીઓ, તે જે તે, આ શિક્ષાપત્રી પ્રમાણે વર્તશે તો તે ધર્મ,  
અર્થ, કામ અને મોક્ષ-એ ચાર પુરુષાર્થની સિદ્ધિને નિશ્ચય પામશે. ॥૨૦૬॥

और हमारे आश्रित जो पुरुष व स्त्रियाँ इस शिक्षापत्री के अनुसार आचरण करेंगे वे निश्चय धर्म,  
अर्थ, काम और मोक्ष, इन चारों पुरुषार्थों की सिद्धिको प्राप्त करेंगे ॥२०६॥

By following this Shikshapatri, My male and female disciples shall  
attain the four desires (Dharma, Arth, Kam and Moksha). (206)



नेत्रं य आचरिष्यन्ति ते त्वस्मत्सम्प्रदायतः ।  
बहिर्भूता इति ज्ञेयं स्त्रीपुंसैः साम्प्रदायिकैः ॥२०७॥

अने जे बाई-बाई, आ शिक्षापत्री प्रभाणे नहि वर्ते, तो ते अमारा संप्रदाय थकी बाहेर छे,  
ऐम अमारा संप्रदायवाणा स्त्री-पुरुष, तेमाणे जाणावुं ॥२०७॥

जो स्त्री-पुरुष इस शिक्षापत्री के अनुसार आचरण नहीं करेंगे वे हमारे सम्प्रदाय से बाहर हैं,  
ऐसा हमारे सम्प्रदाय वाले स्त्री-पुरुष समझें ॥२०७॥

My male and female disciples shall understand that those who do not follow the precepts of this Shikshapatri shall be considered as excommunicated from our Sampradaya. (207)

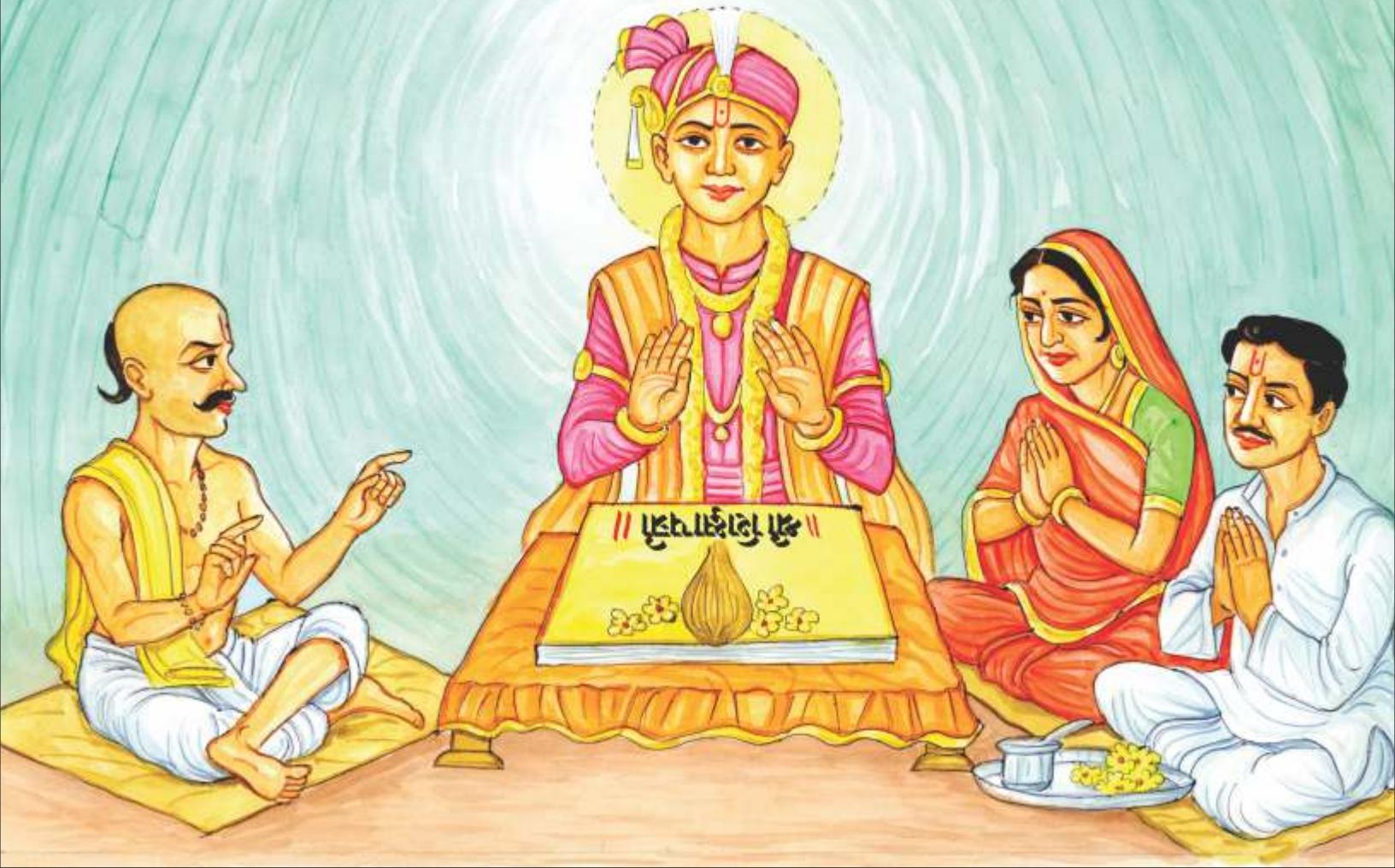


शिक्षापत्र्याः प्रतिदिनं पाठोऽस्या मदुपाश्रितैः ।  
कर्तव्योऽनक्षरज्जैस्तु श्रवणं कार्यमादरात् ॥२०८॥

अने अमारा जे आश्रित सत्संगी, तेमाणे आ शिक्षापत्रीनो नित्य प्रत्ये पाठ करवो; अने जेने भणतां आवडतुं न होय, तेमाणे तो आटर थकी आ शिक्षापत्रीनुं श्रवण करवुं; ॥२०८॥

और हमारे आश्रित सत्संगी इस शिक्षापत्री का प्रतिदिन पाठ करें और जो अनपढ हों वे आदरपूर्वक इस शिक्षापत्री का श्रवण करें ॥२०८॥

My disciples shall read this Shikshapatri daily, and those who cannot read, shall listen to it with reverence. (208)

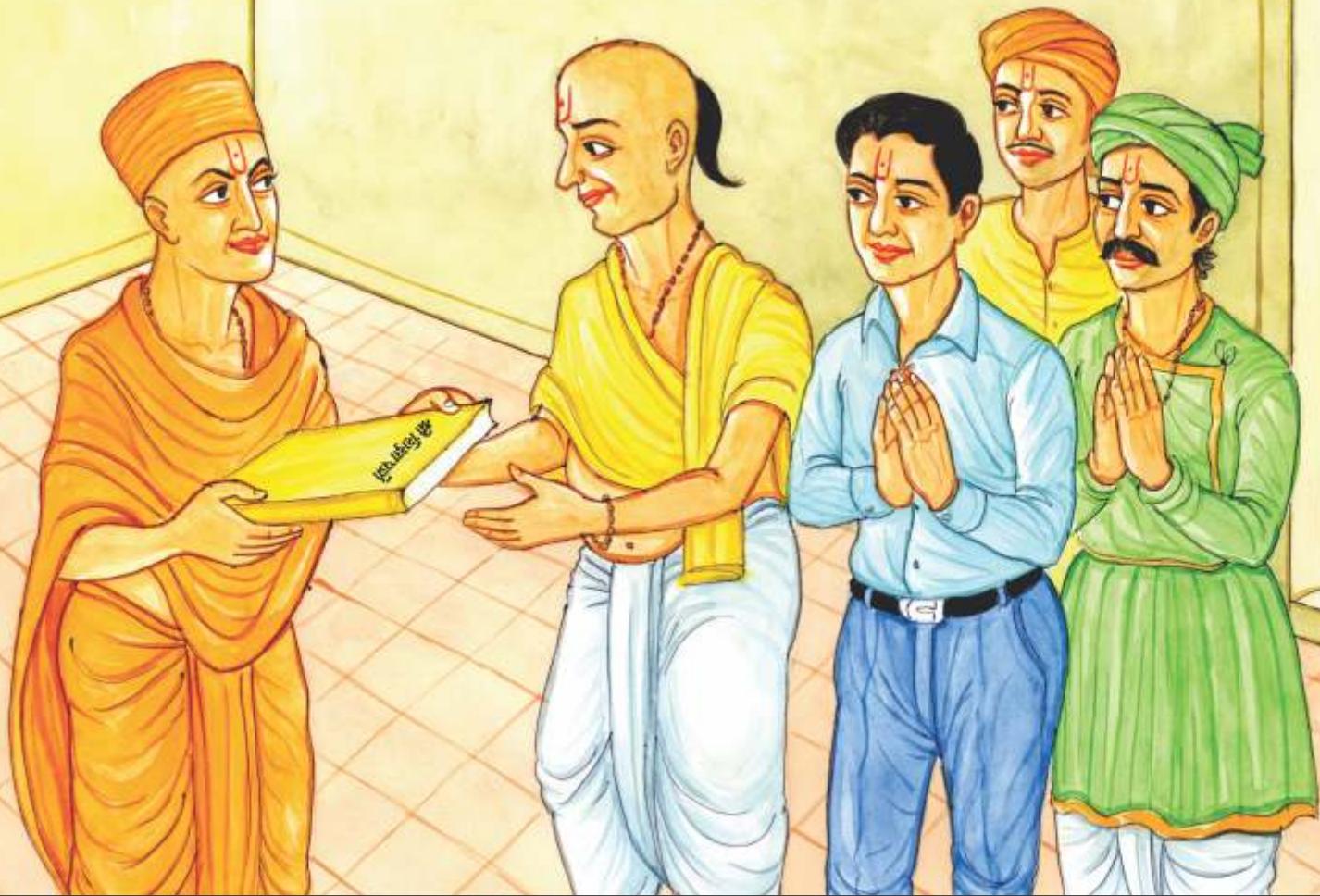


वक्रभावे तु पूजेव कार्याऽस्यां प्रतिवासरम् ।  
मद्रूपमिति मद्वाणी मान्येयं परमादरात् ॥२०९॥

अने आ शिक्षापत्रीने वांची संभणावे ऐवो कोई न होय, त्यारे तो नित्य प्रत्ये आ शिक्षपत्रीनी पूजा करवी, अने आ जे अमारी वाणी, ते अमारुं स्वरूप छे, ए रीते परम आदर थकी भानवी॥२०८॥

इस शिक्षापत्री को पढ़कर सुनानेवाला कोई न हो तब प्रतिदिन इस शिक्षापत्री की पूजा करें और यह हमारी वाणी, हमारा स्वरूप हैं, ऐसा समझकर इसे परम आदरपूर्वक मानें॥२०९॥

When there is no one to read this Shikshapatri to them, they shall worship it daily. All My disciples shall reverently honour My word as My Divine Self. (209)



युक्ताय सम्पदा दैव्या दातव्येयं तु पत्रिका ।  
आसुर्या सम्पदाद्वयाय पुंसे देया न कर्हिचित् ॥२१०॥

अने आ जे अमारी शिक्षापत्री, ते जे ते दैवी संपदाए करीने युक्त जे जन होय, तेने आपवी;  
अने जे जन आसुरी संपदाए करीने युक्त होय, तेने तो क्यारेय न आपवी. ॥२१०॥

हमारी इस शिक्षापत्री को दैवी संपत्ति से युक्त मनुष्य को ही देना किन्तु आसुरी संपत्ति से  
युक्त मनुष्य को कदापि नहीं देना ॥२१०॥

This Shikshapatri shall only be given to a person with divine virtues, but  
shall never be given to a person with wicked tendencies. (210)

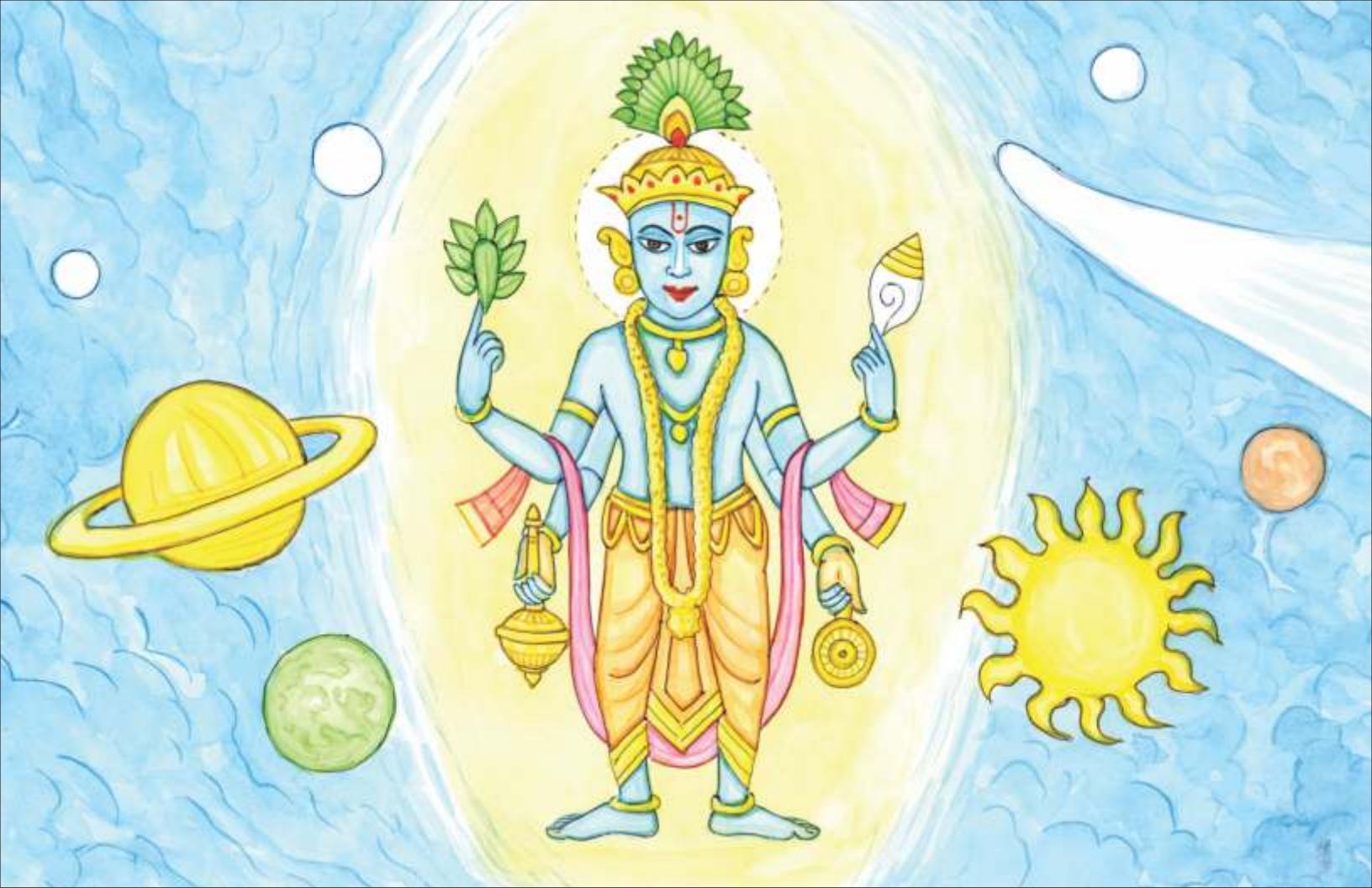


विक्रमार्कशकस्याब्दे नेत्राष्टवसुभूमिते ।  
वसन्ताद्यदिने शिक्षापत्रीयं लिखिता शुभा ॥२११॥

संवत् १८८२ (अठार सो व्यासी) ना महा सुदी पंचमीने हिवसे आ शिक्षापत्री अभे लभी  
छे; ते परम कल्याणकारी छे. ॥२११॥

संवत् १८८२ अठारह सौ बयासी के माथ शुक्ल पञ्चमी के दिन (बसन्त पञ्चमी के दिन  
हमने यह शिक्षापत्री लिखी हैं जो परम कल्याणकारी हैं ॥२११॥

This Shikshapatri is written by Me on Vasant Panchami Day (Maha Shud Pancham) of the year Vikram Samvat 1882 and is beneficent to all mankind. (211)



निजाश्रितानां सकलार्तिहन्ता सद्धर्मभक्तेरवनं विधाता ।  
दाता सुखानां मनसेप्सितानां तनोतु कृष्णोऽखिलमङ्गलं नः ॥२१२॥

अने पोतानां आश्रित जे भक्तजन तेमनी जे समग्र पीडा; तेनो नाश करनारा ऐवा, अने धर्म सहित जे भक्ति, तेनी रक्षाना करनारा ऐवा अने पोताना भक्तजनने मनवांछित सुखना आपनारा ऐवा जे श्रीकृष्ण भगवान्, ते जे ते अमारा समग्र मंगणने विस्तारो ॥२१२॥

ईतिश्री सहजानन्द स्वामी लिखित शिक्षापत्री समाप्त.

अपने आश्रित भक्तजनों की समग्र पीडाको नाश करने वाले, धर्म सहित भक्ति की रक्षा करने वाले और अपने भक्तजनों को मनोवांछित सुख को देने वाले भगवान् श्रीकृष्ण हमारे समग्र मंगलका विस्तार करें ॥२१२॥

इति श्री शिक्षापत्री हिन्दी अनुवाद सहिता समाप्त.

May Lord Shree Krishna, reliever of all miseries of His disciples, protector of Bhakti with Dharma and bestower of all desired happiness, shower His blessings on us all. (212)

*Thus ends the English translation of the Shikshapatri as written by Lord Shree Swaminarayan and translated into Gujarati by Nityanand Muni.*



ॐ  
स्यामीनारायण